भाषातत्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषाका व्याकरण ॥

इलाके मध्यदेशके साहिब डैरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन बहादुरकी आज्ञानुसार ॥

हरिगोपालोपाध्याय बी०ए० ने बनाया

लखनऊ

मुनशीनवलकिशोरके यन्त्रालयमें छपा

सन १८७१ ईसवी

Bhásha Tatwa Dipiká

A HINDEE GRAMMAR

FOR

THE USE OF NATIVE STUDENTS.

BY

Hari Gopál Pádhye, B. A.

PROFESSOR OF SANSKRIT, SAUGOR HIGH SCHOOL.

भाषातत्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषाकाव्याकरण ॥

यहग्रंथमध्यदेशकेसाहिबडैरेक्टर आफ़पबलिकइन्स्ट्रक्शन बहादुरकी आज्ञानुसार ॥

हरिगोपालोध्याय बी०ए० ने बनाया

स्थानलखनऊ

मुनशीनवलकिशोरके यन्त्रालयमें छपा

सन १८७१ ईसवी

Bháshá Tatwa Dìpiká

A HINDEE GRAMMAR

FOR

THE USE OF NATIVE STUDENTS.

BY

Harí Gopál Pádhye, B. A.

PROFESSOR OF SANSKIRT, SAUGOR, HIGH SCHOOL.

LUCKNOW:

PRINTED AT THE NEWUL KISHORE PRESS.

1871.

सूचीपत्र

भूमिका ॥

हिन्दीभाषाके व्याकरणपर तीनग्रन्थबनेहैं ॥ एकआदमकृत व्याकरण, दूसरा भाषाचंद्रोदय, तीसरा भाषातत्वबोधिनी, इनग्रन्थोंमें सामान्यत:विवेचन अच्छीतरहसे कियाहै, परंतु कईएक स्थलोंमें अशुद्धता,न्यूनता,और अप्रयोजनता दिखाई देतीहै ॥ इनदोषोंकोदेखकर बहुविद्यानिपुण गुणग्राहक, मेहरबान ग्रीनिङ्गसाहिब बहादुर एम० ए० मध्यभागके साबिक़ इन्स्पेक्टर जनरल आफ् एजुकेशनने एकदोलोगोंको उनदोषोंको सुधारकर एकनईकिताब हिन्दी भाषाके व्याकरणपर बनानेकेलिये आज्ञाकीथी, पर उन लोगोंसे वहकामसिद्ध न हुआ ॥ पीछे जब साहिब बहादुर सागरमें जनवरी महीनेमें रौनक़अफ़्रोज़हुएथे तब उन्होंनेहिन्दीके व्याकरणपर एकपुस्तक बनानेकेवास्ते मुझेआज्ञादी, और किसप्रकारसेबनानाचाहिये यहभीबतलाया, और साधनभूत इसविषयपर बनी हुईं दो तीन किताबें इनायतकीं ॥ इसलिये उनका बहुतउपकारमानताहूं पूर्वोक्त पुस्तकोंमें कहां २ अशुद्धता वा न्यूनता देखपड़तीहैं, इसका पहिले थोड़ासा वर्णन करके पीछे किन २ ग्रन्थोंकेआधारसे यह किताबबनाईहै इसका वर्णन करूंगा ॥

१ आदमकृत व्याकरण और भाषाचन्द्रोदयमें० ऌ यहअक्षर देवनागरी वर्णमालाका नहींहै, संस्कृतसेआयाहै ऐसा कहोतो संस्कृतशब्दोंमें कभी नहीं आता, इसलिये इसका लिखना व्यर्थहै ॥

२ भा० आदम० भाषाके जिसशब्दकेअंतमें आकारादिस्वर न होय उसे हलंत कहतेहैं जैसा धनवन इत्यादि ॥ परन्तु धन,वन आदिशब्दोंके अंत्य अक्षरके नीचे हल् का चिन्हलिखनाचाहिये सो नहींलिखते, और संस्कृतमें ये शब्द बराबर अकारांतहैं, इसवास्ते उनको हलंत कहनाठीकनहीं ॥ यद्यपि धन वन आदि शब्दोंके अंत्यअकारका उच्चारणकिंचित् हल्सा करतेहैं तो भी उन्हें हलंतमानना प्रशस्तनहीं क्योंकि बहुधाशब्दके अंत्यअक्षरका उच्चारण इतने ज़ोरसे नहींकरते जैसाकि आद्य या बीचके अक्षरोंकाकरतेहैं ॥ इसकारण जोशब्द जिसतरहसे लिखाजाता है वैसाही मानना उचितहै और बनारस कालेजके गुरु पण्डितरामजसनकाभी यही मतहै ॥ उन्होंने बालकआदिशब्द

भाषातत्वबोधिनीमें अकारांतमानेहैं ॥ कविलोगछंदकीमात्रा पूरीकरनेकेलिये कहीं एकमात्रिकको अर्धमात्रिक और द्विमात्रिकको एकमात्रिक मानलेतेहैं और इसका क़ायदा छंदःशास्त्रकेस्वाधीनहै व्याकरणसेसंबंधनहीं ॥

३ भा० संज्ञाप्रकरणमें वर्णोंके अल्पप्राण और महाप्राण येभेदबतलायेहैं, परन्तु येसंज्ञा वाह्यप्रयत्नांतर्गतहैं और संस्कृतव्याकरणमें जहांआदेशादिककार्योंका संशय उत्पन्नहोताहै वहां आन्तरतम्यपरीक्षामें उनका उपयोग पड़ताहै वैसी आंतरतम्यपरीक्षा हिन्दीव्याकरणमें नहींहै इसलिये उसकालिखनाव्यर्थहै॥

४ भा० प्रकृतिनामवाचक संज्ञा वा विशेषनामकालक्षण और उसकी जो व्याख्यालिखीहै उससेमालूमहोताहै कि विशेषनामका क्याप्रयोजनहै और क्या धर्महै यह भाषाचन्द्रोदयवालेके समझमें नहींआया ॥ विशेषनामतोकेवल पहचाननेकाचिन्हहै और वहचिन्ह एकव्यक्तिके आश्रयसे रहताहै ॥ यद्यपि एक विशेषनाम दो तीन व्यक्तियोंकानामहोवे तो भी वहजातिवाचक या सामान्यनामनहीं होसकता कदाचित् दो व्यक्तियोंकानाम रक्खागयाहो तो उसमें कुछ जातिगुण नहींपायाजाता" में उसकीउदारताका क्यावर्णन करूं वहसांप्रत कालमेंकेवलकर्णहै " ऐसेवाक्यमेंकर्ण यहसामान्यनामवत्‌है अर्थात् पूर्वकालमें कर्णनामकराजाअतिउदारथा उसकेसमान यहऔदार्यमेंहै इसलिये औदार्यगुण विशिष्टपुरुष ऐसाकर्णकाअर्थ है इसीतरहऐसे दूसरेवाक्योंमेंजानो ॥

५ आ० लिङ्गनिर्णयमेंतीनलिङ्गमानलियेहैं पुल्लिङ्गस्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग ॥ सबलोगजानतेहैं कि हिन्दीमेंकेवलदोलिङ्गहैं पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग बिलकुल नहींहै और फिरतीनलिङ्गमाननाबड़ीग़लतीहै ॥

६ आ० भा० त० गुणवाचकअर्थात् विशेषणका न्यूनाधिक्य भावबतानेकी रीति नहीं बतलायी ॥

७ भा० त० आ० भा० कारकवर्णनमें, कर्ता कर्म करण संप्रदान अपादान सम्बन्ध अधिकरण संबोधन ऐसेआठकारककहेहैं ॥ शब्दोंकी प्रत्ययोंकेयोगसे बनीहुई आठअवस्थाओंको ये संज्ञादीहैं ॥ यहठीकनहीं क्योंकि कर्ताप्रथमांत और कर्मद्वितीयांत सदाआताहै यहनियमनहींहै॥ अपूर्णभूतकालिक क्रियाको छोड़करसब भूतकालमें सकर्मक क्रियाकाकर्ता तृतीयांतहोताहै और कर्म कभी२ प्रथमांत वाद्वितीयांत आताहै जैसा रामने रावणको मारा, घोड़ेने चनाखाया इत्यादि इसलिये प्रथमादिविभक्तियोंको ये संज्ञादेना उचितनहींहै॥ दूसरा

संस्कृतव्याकरणमें छः कारकहैं ॥ संबंधकीगणना कारकोंमें नहीं करते क्योंकि कारकमें क्रियासे अन्वयरखना अवश्यहै और षष्ठी तत्पका अन्वयक्रियासे नहीं होता-राजाकाघोड़ाकालाहै यहांराजाका इसपदका संबंध घोड़ेकीतरफ़ है ॥ क्रियाकीतरफ़ नहीं ॥ इसीतरह संबोधनकोभी कारकत्व अर्थात् क्रियान्वयित्व-नहींहै क्योंकि उसका अर्थ केवलचितानाहै ॥

८ भा० त० भा० हमोंको तुम्होंको आदि ओकारांत अवस्थाओंको विभक्ति प्रत्यय जोड़कर जोरूप बनतेहैं वे नहींदियेहैं॥भा०क्या और कुछ इनको अव्ययवत् मानाहै यहअशुद्धहै वहक्याचीज़है, कुछलोग आयेहैं॥ ऐसे वाक्योंमें क्या और कुछ ये अव्ययनहींहैं किंतु विशेषणहैं, कईजगह उनकी सर्वनामवत् योजना करतेहैं ॥ काहे शब्दको प्रत्यय जोड़कर काहेको काहेसे आदि जोरूपबनतेहैं उनकावर्णन नहींकिया यहन्यूनता तीनों किताबोंमेंहै ॥

९ आ० द्वितीयाआदि विभक्तियोंके बहुवचनमेंकोई इस सामान्य सर्वनामके रूप जोलिखेहैं वे उस सर्वनामके नहींहै प्रश्नार्थकसर्वनामके रूपहैं और कुछ के जोरूप बहुवचनमेंदियेहैं वेप्रचारमेंनहींआते ॥ इसलिये उनका लिखनाव्यर्थहै ॥

१० क्रियाकाललक्षण—जोबातसंज्ञा अथवा सर्वनामके उत्तरवर्तीहोवो यथार्थज्ञानकोजन्मावे वहीक्रियाकहावतीहै इस लक्षणमें एकदोषयहहै कि क्रियाकेयोगसे बात अर्थात् वाक्य होतीहै ॥ केवलक्रियाबातनहींहोसक्ती ॥ दूसरादोषयहहै कि संज्ञा वा सर्वनामके उत्तरवर्ती बहुतसेशब्दआतेहैं जिनके योगमें यथार्थ ज्ञानहोसक्ताहै, परंतु वे क्रिया नहींहैं जैसा हाथकीउंगली यहां स्पष्टअर्थसमझमेंआताहै, परन्तु उंगलीयहक्रियापदनहींहै ॥ तीसरा क्रियापद-सदासंज्ञा वा सर्वनामकेउत्तरवर्तीरहताहै यहभीनियमनहीं, जैसा रामायण तुलसीदासकीमें चौपाई ॥

डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी । मनहु भयानक मूरत भारी ॥

११ आ० क्रियाचारप्रकारकीहै ॥ अकर्मक कर्तृवाचक प्रेरणार्थ कर्मवाच्य ॥ यहभेदबराबरनहींहै क्योंकि जोक्रिया अकर्मकहै वह सदा कर्तृवाचकहोतीहै; प्रेरणार्थक्रियातोहमेशहसकर्मकहोतीहै, कर्तृवाचकसंज्ञाके बदले सकर्मक यह संज्ञा रक्खीजाती तोअच्छाहोता, क्योंकि कर्तृवाचकक्रियाका जोअर्थबतलायाहै वह सकर्मकक्रियासे स्पष्टबोधितहै और अकर्मक यहअन्वर्थक और शुद्धसंज्ञाहै सकर्मकको कर्तृवाचककहनाठीकनहीं क्योंकि कर्तृवाचकसंज्ञाकाअर्थयहहै कि

भाषा तत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥



व्याकरणका लक्षण और उसकेभाग ॥

प्रश्न व्याकरण क्याहै और उससे क्यालाभ होताहै ?

उत्तर व्याकरण एकशास्त्रहै कि जिससे शुद्ध बोलने और लिखनेका ज्ञान होताहै ॥

प्र० इस शास्त्र के मुख्य भाग कौन २ हैं ?

उ० वर्णविचार, शब्दविचार, और वाक्यरचना ये तीन भागहैं ॥

---

१ पाठ

वर्णविचार और वर्णोंकीगणना ॥

प्र० वर्णविचारमें किसका वर्णनकियाजाताहै ?

उ० वर्णविचारमें वर्णोंका लक्षण, संयोग, उच्चारणस्थान, और सन्धि इनका वर्णन कियाजाताहै ॥

प्र० वर्णों के कितने भेदहैं ?

उ० स्वर और व्यञ्जन ये दोभेदहैं ॥

प्र० स्वर किन वर्णोंको कहतेहैं ?

उ० स्वर उन वर्णोंको कहतेहैं कि जो केवल आपही बोलेजांय, और उनको संस्कृतमें अच् कहतेहैं; जैसा अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ*, ए, ऐ, ओ, औ, इन तेरह अक्षरों को स्वरकहतेहैं ॥

प्र० व्यञ्जन किनको कहतेहैं ?

उ० व्यञ्जन उनको कहतेहैं कि जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता विना न होसके, और उनको संस्कृतमें हल् कहतेहैं ॥

---

* ॡ यह अक्षर देवनागरी वर्णमाला का नहीं है, संस्कृत शब्द में भी यह अक्षर कभी नहीं आता, फिर हिन्दी में कहां से आवेगा । इसलिये ॡ वर्ण को यहां नहीं लिखा ॥

व्यञ्जन	पारिभाषिक संज्ञा	व्यञ्जन	पारिभाषिक संज्ञा
१ क् ख् ग् घ् ङ्	कवर्ग.	२ च् छ् ज् झ् ञ्	चवर्ग.
३ ट् ठ् ड् ढ् ण्	टवर्ग.	४ त् थ् द् ध् न्	तवर्ग.
५ प् फ् ब् भ् म्	पवर्ग.	६ य् र् ल् व्	अन्तस्थवर्ण.
७ श् ष् स् ह्	ऊष्मवर्ण.		

इन ३३ अक्षरोंकोव्यञ्जन कहतेहैं और इनका स्पष्ट उच्चारण स्वरके योगसे, होताहै; जैसा, क्+अ = क, अ+क् = अक् इत्यादि ॥

इन व्यञ्जनोंमें (अ) मिलाकर शिक्षक लोग व्यञ्जन बतलातेहैं, जैसा क, ख, ग, घ, ङ, इत्यादि ॥ इसतरहसे व्यञ्जन बतानेमें कुछ हानि नहीं, पर व्यञ्जनों के मूलरूपमें अ केवल स्पष्ट उच्चारणके लिये जोड़ा जाताहै, यह ध्यानमें रखना चाहिये ॥ +

---

२ पाठ

स्वरों के भेद ॥

प्र० स्वरोंमें कौन २ ह्रस्व कौन २ दीर्घ वा संयुक्त हैं ?

उ० अ इ उ ऋ ऌ ये पांच ह्रस्वहैं,

आ ई ऊ ॠ ये चार दीर्घहैं,

ए ऐ ओ औ ये चार संयुक्तहैं और दीर्घ भी कहातेहैं,

इनकोसंयुक्तकहनेका कारण सन्धिप्रकरणमें स्पष्ट कियाजायगा ॥

इनमेंसे अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ ये मूलस्वर अथवा प्रधान स्वर कहातेहैं ॥

प्र० स्वरों का और कोई भेदहै ?

उ० स्वरों का तीसरा भेद प्लुतहै; और ह्रस्व दीर्घ और प्लुत ये भेद मात्रासे होतेहैं, औरमात्राका अर्थ परिमाण अर्थात् उच्चारणकालका मापना जाना जाताहै ॥

प्र० मात्रा किसको कहतेहैं ?

उ० ह्रस्व स्वरके उच्चारणमें जो काल लगताहै उसे एकमात्राकहतेहैं, और दीर्घस्वरके उच्चारणमें ह्रस्वसे दूनाकाल लगताहै और प्लुतके उच्चारणमें

+ किसी अक्षर के आगे कार जोड़ने से वह अक्षर समझा जाताहै, जैसा चकार कहनेसे च समझतेहैं.

तिगुना काललगताहै, इसीसे ह्रस्वको एकमात्रिक दीर्घ को द्विमात्रिक और प्लुतको त्रिमात्रिक कहतेहैं ॥

प्र० प्लुतका उच्चारण किस जगह होताहै ?

उ० जहां किसीको दूरसे पुकारतेहैं वहां प्लुत बोलाजाताहै ; जैसा अय कृष्ण ३ कृष्णारे ३, यहां कृष्णशब्दके अंत्यस्वरको और अरेके अंत्यएकार को प्लुत बोलतेहैं और उसकी पहचानके लिये ३ अंक लिखदेतेहैं ॥

प्र० स्वर निरनुनासिक वा सानुनासिकहैं या नहीं ?

उ० सब स्वर निरनुनासिक और सानुनासिक के भेदसे दो प्रकारकेहोते हैं ॥ जिनका उच्चारण केवल मुखसे हो वे निरनुनासिक, जैसा अ आ, और जो नासिका सहित मुखसे बोले जांय, वे सानुनासिक, जैसा अँ आँ, इ० ॥ सानुनासिक का चिन्ह ँ यहहै ॥

प्र० अनुस्वार और विसर्ग किनको कहतेहैं ?

उ० नासिकासे जिसका उच्चारण होताहै और जिसको बतानेके लिये स्वरके सिरपर (ं) ऐसा चिन्ह करते हैं उसे अनुस्वारजानो, अनुस्वारका उच्चारण स्वरके उच्चारणके पश्चात्होताहै स्वरके आगे जो (:) ऐसा दो बिन्दुओंका चिन्ह लिखाजाताहै, उसे विसर्ग कहतेहैं, और कंठसे वहबोला जाताहै ; इससे स्पष्टहै कि इनदोनों चिन्होंका उच्चारणस्वरके साथहोनेसे दो प्रकारके रूपहुए ॥ जैसा अ अं अः, इ इं इः ॥

प्र० हिन्दी भाषामें कौन स्वर आतेहैं ?

उ० ऋ लृ लॄ इनतीनोंको छोड़ शेषदसस्वर हिन्दीभाषामेंआतेहैं, और ये तीन केवल संस्कृतमें आतेहैं ॥

---

३ पाठ

अक्षरपंक्ति ॥

प्र० व्यञ्जनके साथ स्वरमिलनेसे कैसा रूप बनताहै ?

उ० व्यञ्जनके साथ स्वरमिलनेसे अक्षरपंक्ति बनतीहै, पर इसमेलमें व्यञ्जन के (्) चिह्नका लोपहोताहै और अ कोछोड़ शेषस्वरोंके रूप बदलजातेहैं ॥ स्वरके विकृत रूपको मात्रा कहतेहैं, ये मात्रा रूप व्यञ्जनको जोड़ने से अक्षरपंक्ति बनजातीहैं; ॥

जैसा	व्यञ्जनको	स्वरकी	मात्रा मिलने से	सिद्ध अक्षर
हुआहै	क्	अ	-	क
	क्	आ	ा	का
	क्	इ	ि	कि
	क्	ई	ी	की
	क्	उ	ु	कु
	क्	ऊ	ू	कू
	क्	ऋ	ृ	कृ
	क्	ॠ	ॄ	कॄ
	क्	ऌ	ॢ	कॢ
	क्	ए	े	के
	क्	ऐ	ै	कै
	क्	ओ	ो	को
	क्	औ	ौ	कौ
	क्	अं	ं	कं
	क्	अः	ः	कः

इसीतरहसे हर एक व्यञ्जनकी अक्षरपंक्ति जानो, ॥

प्र० व्यञ्जनोंमेंसे कौन २ व्यञ्जनहिन्दीमें नहीं आतेहैं ?

उ० ङ् ञ् ण् ष् ये चार नहींआते केवल संस्कृतमें आतेहैं, परन्तु हिन्दी भाषामें संस्कृतशब्द बहुतमिलेहैं इसलिये इनका जानना अवश्यहै ॥

---

४ पाठ

उच्चारणमेंभेद ॥

प्र० स्वर और व्यञ्जनोंके उच्चारणमें कुछभेद होताहै ?

उ० हां किसी २ अक्षरोंके उच्चारणमें भेदहोताहै, ऐ का उच्चारण कभी २ अय् ऐसा होताहै; जैसा है = हय्; औ का उच्चारण कभी २ अव् ऐसा

होताहै जैसा चोड़ा = चक्खा ॥ ड इसअक्षरके दो उच्चारणहैं, एकतो जिह्वाका अग्र तालू पर जोरसे दाबकर होताहै जैसा डालना, डाह, डेरा इत्यादि; ॥ दूसरा तालूको जिह्वाके अग्रसे स्पर्श करनेसे होताहै जैसा बड़ा, गडबड़, गड़ना इत्यादि ॥ *यह दूसरा उच्चारण ड के नीचे एकबिंदुदेनेसे बूझा जाताहै* ॥ इसी तरह ढ के भी दो उच्चारणहैं; एक ढकना, ढब, ढांपना इत्यादि शब्दोंमें देखो; दूसरा पढ़ना-लढ़ा-इत्यादि, शब्दोंमें॥ क्योंकि ड का उच्चारण दीर्घ श्वास से करनेसे ढ का उच्चारणहोताहै ढ = ड् + ह् + अ ॥

ब, और व, इन दो अक्षरोंका उच्चारण परस्पर बदल जाताहै अर्थात् संस्कृत शब्दों में जहां व, अक्षर होवे वहां हिन्दीमें ब, बोलतेहैं और कभी २ ब, के स्थान में व, बोला जाता है, जैसा संस्कृत शब्द वर्णन, वास, वज्र, इत्यादि ॥ हिन्दी में बर्णन, बास, बज्र इत्यादि ॥

यह प्रचार लिखनेमेंभीहै, पर संस्कृतमें जैसा शब्द होवे वैसा बोलना + लिखना उचितहै ॥

य, इस अक्षर का उच्चारण कभी २ ज करतेहैं, जैसा संस्कृत शब्द यजमान, यथायोग्य, यथार्थ, इत्यादि, हिन्दीभाषामें जजमान, जथाजोग्य, जथार्थ, इत्यादि। संस्कृतशब्दोंके आद्य य और द्वित्व य का उच्चारण जवत् करतेहैं ॥ जैसा यथा, सूर्य्य = जथा, सूर्ज्ज ॥

र यह अक्षर कभी २ ड और ल के स्थानमें आताहै जैसा कान्हवनुसीवारेने गगरियाफोरीरे॥यहां फोरी = फोड़ी और; डालेताकी जगहडारना बोलतेहैं ॥

श इसअक्षरका उच्चारण कोई २ हिन्दीवाले स करतेहैं ॥ जैसा आशा, शंख इत्यादि = आसा, संख ऐसा उच्चारण करतेहैं ॥

ष इसका उच्चारण बहुधा लोग खवत् करतेहैं जैसा भाषा शब्दभाखा लिखा और पढ़ाजाताहै, दोषशब्दको दोख बोलतेहैं, यह प्रचार अशुद्धहै, क्योंकि अक्षरके मूलोच्चारणका नाशहोताहै; और दूसरा ष का उच्चारण खवत् करनेसे हिन्दीभाषामेंसे एकउच्चारण लुप्तहोजाताहै और तीसरा, ष का उच्चा-

---

+ बंगाल बेहार और वायव्य प्रांतके लोग संस्कृत शब्द के आद्य ज कार का उच्चारण बहुधा य करते हैं ॥

र्ण खवत् करनेमे हिन्दी की वर्ण मालामें ष का लिखना व्यर्थ होजायगा ॥

संस्कृतानभिज्ञ भाषावाले श और स; ङ, ञ, ण और न; ष और छ इन दो दो अक्षरोंके उच्चारणमें कुछ भेद नहींकरतेहैं; परंतु इससे एकबड़ी हानिहै कि विद्यार्थी संस्कृतभाषा सीखनेको प्रारंभकरे तो उसको उनअक्षरों का यथायोग्य उच्चारणकरना और जानना बहुत कठिन पड़ताहै ॥

---

५ पाठ

संयुक्तअक्षर

प्र० संयोग किसे कहतेहैं ?

उ० दो अथवा तीन आदि व्यञ्जनोंके मिलनेको संयोग कहतेहैं जैसा, शब्द, माहात्म्य, यहां ब्‌ द्‌ का संयोग और त्‌म्‌य का संयोग जानो, ऐसे अक्षरोंको संयुक्ताक्षर कहतेहैं ॥

प्र० संयुक्ताक्षर कैसा लिखाजाताहै ?

उ० संयुक्ताक्षर सामान्यत: ऐसा लिखाजाताहै किपहिले व्यञ्जनमें काना न होवे तो उसका आधा रूप लिखकर उसकेनीचे वा कभी २ आगे जैसा द्‌+य = द्य, ङ्‌+य = ङ्य,और काना होवे तो गिराकर उस वर्णके आगे-दूसरास्वर युक्तअक्षर पूरा लिखाजाताहै ङ्‌+ग = ङ्ग, ग्‌ + म = ग्म, प्‌+र = प्र, इत्यादि ॥ दूसरे वर्णमें स्वर न होवे तो उसका भी पूर्वोक्त रीति से आधारूपलिखकर तीसरा स्वरयुक्तवर्ण लिखतेहैं जैसा त्‌+म्‌+य = त्म्य ल्‌+प्‌+य = ल्प्य इत्यादि; ङ छ ट ठ ड ढ ये अक्षर संयोग की आदिमें संपूर्ण लिखे जाते हैं ॥ जैसा ट्म, ङ्क, ढ्‌ इ० ॥ क्ष और ज्ञ को मूल व्यञ्जनों में गिनतेहैं, पर ये अक्षर संयुक्तहैं, क्योंकि क्‌ और ष मिलकर क्ष, ज्‌+ञ = ज्ञ बने हैं, इसलिये इनको संयुक्ताक्षर कहना चाहिये ॥

प्र० र्‌ का संयोग कैसा होता है ?

उ० जिस व्यञ्जनमें काना नहींहै उसके नीचे (्र) ऐसाचिन्ह लगातेहैं जैसा ड्र ढ्र इत्यादि; और काना वाले व्यञ्जन को (्र)ऐसाचिन्ह जोड़तेहैं जैसा प्‌ + र = प्र, और कभी दूसरे अक्षरकी आदिमें मिले तो उसके सिर

पर ˋ ऐसा चिन्ह करतेहैं और उसे रेफबोलतेहैं जैसा गर्व वर्ण सर्व इत्यादि ॥

प्र० (श) को व्यञ्जनमें जोड़नाहोवे तो कैसालिखतेहैं ?

उ० (ॆ) श, इन दोनों रूपोंसे मिलातेहैं जैसा प्रश्न प्रश्न ॥

प्र० संयोगके पूर्व स्वर वर्णोंका उच्चारणकैसा होताहै ?

उ० संयोगके पूर्वस्वरको गुरु अर्थात् द्विमात्रिक बोलतेहैं ॥ यह नियम संस्कृतमें सार्वत्रिकहै परंतु हिन्दीमें द्वित्व अर्थात् एकाहीअक्षर दोबार जुड़ा होवे तो उसके पूर्वस्वरको गुरु बोलतेहैं ॥ भिन्न अक्षरोंका संयोग आगे होवे तो कहीं द्विमात्रिक कहीं एकमात्रिक बोलतेहैं जैसा कुत्ता रस्सा चक्की यहां द्वित्वहै और इन्हें उन्हें तुम्हारा यहां ह्रस्वबोलतेहैं, सत्रह, इक्यावन, बिस्वा, यहां द्विमात्रिकबोलतेहैं ॥

---

६ पाठ

स्थान विचार ॥

प्र० वर्णोंका उच्चारणस्थान किसेकहतेहैं ?

उ० मुखके जिस भागसे जिन वर्णोंका उच्चारण होवेगा, उसी भागको उनवर्णोंका स्थान कहतेहैं ॥

प्र० किन २ अक्षरोंके कौन २ स्थानहैं ?

उ० अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका कंठस्थानहै और कंठ्य कहलातेहैं ॥

इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालुमे बोलेजाते हैं और तालव्य कहातेहैं ॥

ऋ ॠ टवर्ग र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालुसे कुछ ऊपरजीभलगानेसे बोले जातेहैं और उनको मूर्द्धन्य कहतेहैं ॥

लृ तवर्ग ल स इन का दंत स्थान है और दंत्य कहलातेहैं ॥

उ ऊ पवर्ग इनका ओठस्थानहै और ओष्ठ्य कहातेहैं ॥

ए ऐ कंठ और तालुमे बोले जातेहैं और उनको कंठ तालव्य कहतेहैं ॥

ओ औ कंठ और ओठ मे बोलेजातेहैं और कंठोष्ठ्य कहातेहैं ॥

व दांत और ओठमे बोला जाताहै और दंतोष्ठ्य कहाताहै ॥

ङ ञ ण न म ये स्ववर्गोक्तस्थान और नासिकामे बोलेजातेहैं और अनुनासिक कहातेहैं ॥

७ पाठ

संज्ञाविचार ॥

प्र० इसव्याकरणमें पारिभाषिक संज्ञाहोवें तो कहिये ?

उ० अक्षर अथवा शब्द इनका अदर्शनहोना, उसेलोप कहतेहैं ॥

अक्षर अथवा शब्दको मिटाकर उसकीजगह जो अक्षर वा शब्द होताहै उसे आदेश कहतेहैं ॥

जो अक्षर अथवा शब्द अन्त वा मध्यमें अवयवहो आताहै उसेआगम कहतेहैं ॥

शब्द से आगे एकवर्णात्मक वा अनेकवर्णात्मक होताहै उसे प्रत्यय-कहतेहैं ॥

आदेशादिक कार्यों का एकवार होना वा नहोना उसे विकल्पकहतेहैं ॥

दीर्घ करने में अ इ उ ऋ इनके रूप क्रमसे आ ई ऊ ॠ होजातेहैं ॥

जहां ह्रस्वकरतेहैं वहां आ ई ऊ ॠ इनके रूप अ इ उ ऋ क्रमसे होते हैं; ए ऐ को इ और ओ औ को उ आदेशहोतेहैं ॥

अ ए ओ अर् अल् इनको गुण कहतेहैं ⎫ गुण और वृद्धि क्रमसे अ इ उ
आ ऐ औ आर् आल् इनकोवृद्धि कहतेहैं ⎭ ऋ ऌ के स्थानमें होतीहैं ॥

जहां आदेश प्रत्यय आगम ये अदल बदल के अथवा विपरीत अर्थात् कुछ के कुछ होतेहैं ॥ उसे बहुल कहते हैं ॥

क से म पर्यन्त, जो वर्ण हैं उन्हें स्पर्श वर्ण कहतेहैं ॥

---

८ पाठ

सन्धिविचार

स्वरसन्धि ॥

यह सन्धि प्रकरण संस्कृतभाषाके व्याकरणकाभागहै; शुद्ध हिन्दीमेंसन्धि नहीं होतीहै; पर हिन्दीमें संस्कृतशब्द बहुतहैं और तुलसीदासकृत रामायणादि ग्रन्थों में सन्धियां बहुतसी आतीहैं, इसलिये मुख्य मुख्य नियम जानना अवश्यहै ॥

प्र० सन्धि किसे कहतेहैं ?

उ० दो वर्ण परस्पर निकट आकर एकरूपसे वा रूपांतरसे मिलें तो उस मेलको सन्धि कहतेहैं ॥

प्र० सन्धिकितनेप्रकारकीहै ?

उ० स्वरसन्धि और व्यञ्जनसन्धि येदोप्रकारहैं ॥

प्र० स्वरसन्धि और व्यञ्जनसन्धि किनकोकहतेहैं ?

उ० दो स्वरोंकीसन्धि स्वरसन्धि कहातीहै; व्यञ्जन और स्वरकीसन्धि, वा दो व्यञ्जनोंकीसन्धि व्यञ्जनसन्धि कहातीहै ॥

प्र० स्वरसन्धि किसप्रकारसेहोतीहै ?

उ० अ इ उ ऋ ह्रस्व अथवादीर्घ इनकेपरे सजातीय ह्रस्व वा दीर्घ स्वरयथाक्रमसे आवे तो दोनोंमिलकर दीर्घ आदेशहोताहै; जैसा

अ वा आ+अ वा आ = आ	इ वा ई + इ वा ई = ई
उ वा ऊ+उ वा ऊ = ऊ	ऋ वा ॠ + ऋ वा ॠ = ॠ

उदाहरण

मूलस्थिति	सिद्धरूप	मूलस्थिति	सिद्धरूप
ज्ञान+अभाव	= ज्ञानाभाव	धर्म+आज्ञा	= धर्माज्ञा
गंगा + अर्पण	= गंगार्पण	सीता+आश्रय	= सीताश्रय
हरि + इच्छा	= हरीच्छा	करी + इन्द्र	= करीन्द्र
भानु+उदय	= भानूदय	भू +ऊर्ध्व	= भूर्ध्व
पितृ +ऋण	= पितॄणइत्यादि ॥		

प्र० विजातीय स्वरोंकी सन्धिकैसीहोतीहै ?

उ० अ अथवा आ इनके आगे इ अथवा ई आवे तो दोनोंमिलकर ए आदेशहोताहै; इसीतरह उ वा ऊ आवेतो ओ; ऋ वा ॠ आवेतो अर्; ऌ होवें तो अल्; ए वा ऐ आवे तो ऐ; ओ वा औ होवे तो औ; आदेशहोतेहैं ॥ जैसा

अ वा आ + इ वा ई = ए	अ वा आ + उ वा ऊ = ओ
अ वा आ + ऋ वा ॠ = अर्	अ वा आ + ऌ = अल्
अ वा आ + ए वा ऐ = ऐ	अ वा आ + ओ वा औ = औ

उदाहरण

देव + इन्द्र = देवेन्द्र	रमा + ईश = रमेश
सूर्य + उदय = सूर्योदय	मह + ऊर्मिला = महोर्मिला
महा + ऋषि: = महर्षि:	तव + ऌकार = तवल्कार
एक + एक = एकैक	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
चित्त + औदार्य्य = चित्तौदार्य्य	गंगा + ओघ = गंगौघ इत्यादि

प्र० स्वरोंमेंसे अ आ को छोड़कर बाक़ीस्वरोंके परस्पर आगे पीछे होने से कैसी सन्धि होतीहै ?

उ० इ वा ई, उ वा ऊ, ऋ वा ॠ, ऌ इनकेपरे विजातीयस्वरहोवे तो य् व् र् ल् ये आदेश पूर्व इकारादिकोंके स्थानमें क्रमसेहोतेहैं ॥

इ वा ई+	अ वा आ = य वा या उ वा ऊ = यु वा यू ऋ वा ॠ = यृ वा यॄ ए वा ऐ = ये वा यै ओ वा औ = यो वा यौ	उ वा ऊ+	अ वा आ = व ० वा इ ० ई = वि ० वी ऋ ० ॠ = वृ ० वॄ ए ० ऐ = वे ० वै ओ ० औ = वो ० वौ
ऋ वा ॠ+	अ वा आ = र वा रा इ ० ई = रि ० री उ ० ऊ = रु ० रू ए ० ऐ = रे ० रै ओ ० औ = रो ० रौ	ऌ +	अ ० आ = ल ० ला इ ० ई = लि ० ली उ ० ऊ = लु ० लू ए ० ऐ = ले ० लै ओ ० औ = लो ० लौ

उदाहरण

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर	सु + आगत = स्वागत
देवी + आश्रय = देव्याश्रय	मनु + अन्तर = मन्वन्तर
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	ऌ + आकृति = लाकृति

ए, ऐ, ओ, औ, से परे कोईस्वरआवेतो उनके स्थानमें क्रमसे अय्, आय्, अव्, आव् आदेश होतेहैं, इनआदेशोंका पहिला स्वर पीछेके व्यञ्जनके साथ मिलताहै; जैसा

ए + अ, आ, इ० = अय, अया इ० ॥ ओ + अ, आ इ० = अव, अवा इ० ॥ ऐ + अ, आ इ० = आय, आया इ० ॥ औ + अ, आ इ० = आव, आवा इत्यादि ॥

उदाहरण

शे + अन = शयन, नै + अक = नायक

गो + उत्साह = गवुत्साह, पौ + अक = पावक

---

९ पाठ

व्यञ्जन सन्धि ॥

प्र० व्यञ्जनोंकी सन्धिके नियम और उदाहरण अलग २ कहिये ?

उ० सुनो ॥ १ ॥ प्रथमनियम (क्, च्, ट्, प्,) इनकोपरे कोईस्वर अथवा वर्ग का तीसरा वा चौथावर्ण वा य् र् ल् व् ह् इनमेंसे कोई आवे तो क्रमसे अपनेरवर्गके तीसरे ग्, ज्, ड्, ब्, वर्णमें बदलजातेहैं; जैसा वाक् + ईश = वागीश, दिक् + भाग = दिग्भाग, अप् + ज = अब्जं, षट् + रिपु = षड्रिपु, अच् + आदि = अजादि, अच् + वत् = अज्वत् इ० ॥

॥ २ ॥ त्, द्, के आगे च्, छ्, आवे, तो त् और द् के स्थानमें च् आदेश; ज्, भ्, होवें तो ज्; ट्, ठ्, आवे तो ट्; ड्, ढ्, हों तो ड् आदेश होतेहैं; जैसा एतत् + चन्द्रमण्डल = एतच्चन्द्रमण्डल, महत् + चक्र = महच्चक्र, महद् + छत्र = महच्छत्र, तत् + टीका = तट्टीका, उद् + डान = उड्डान सत् + जन = सज्जन इ० ॥

॥ ३ ॥ न् के परे ज् वा भ् आवे तो ञ्; और ड् वा ढ् आवे तो ण् आदेश होते हैं; जैसा महान् + जय = महाञ्जय, महान् + डमरु = महाण्डमरु इ० ॥

॥ ४ ॥ न् के पीछे च् वा ज् होवे तोनको ञ् आदेशहोताहै; जैसा याच् + ना = याञ्चा यज् + न = यज्ञ इ० ॥

१ पाठ

शब्दविचार

शब्दोंकेप्रकार ॥

प्र० शब्दविचारकिसेकहतेहैं ?

उ० शब्दोंकी जाति, साधन, व्युत्पत्ति और दूसरे शब्दोंकेसाथ उनका संबंध इनके विवेचनको शब्दविचार कहतेहैं ॥

प्र० शब्दकिसे कहतेहैं ?

उ० मुखसेनिकलाहुआ एकवर्णात्मक अथवा अनेकवर्णात्मक सार्थध्वनि अर्थात्जिसका अर्थहोवे, उसेशब्दकहतेहैं; और वह लिखाहुआभी शब्दकहाताहै, सार्थक कहनेसे अनर्थकशब्द अर्थात्अर्थरहित ध्वनि इसव्याकरणमें बेकाम है ॥

प्र० शब्दकितने प्रकारकेहैं ?

उ० शब्द दो प्रकारकेहैं सिद्ध और साधित ॥

प्र० सिद्धशब्दकिसे कहते हैं ?

उ० जोदूसरेशब्दसेनबनाहो वहसिद्धशब्द जैसा घोड़ा, बैल, बाप; संस्कृत शब्द बहुतसे अपभ्रंशहोकर हिन्दीमेंआयेहैं, इसकारणसे सिद्धशब्द बहुतकमहैं ॥

प्र० साधित शब्दकिसेकहतेहैं ?

उ० जो दूसरेशब्दसे बनेहैं वेसाधित शब्दहैं जैसा, शास्त्री, विद्यार्थी, शिक्षक, इत्यादि ॥ सामासिक साधितशब्दका एकभेदहै; वह दो वा अधिकशब्दोंके योगसे होताहै; जैसा चक्रपाणि; पीतांबर इत्यादि ॥

प्र० व्याकरणमें साधनक्रियासे शब्दोंके मुख्यभेद कितनेहैं ?

उ० दोभेदहैं सविभक्तिक और अविभक्तिक ॥

प्र० सविभक्तिक किसकोकहतेहैं ?

उ० जिनशब्दोंमें विभक्त्यादिकार्य होतेहैं वे सविभक्तिक कहलातेहैं; जैसाघोड़ा, अच्छा, मैं, करताहै, इत्यादि ॥

प्र० अविभक्तिक किसको कहतेहैं ?

उ० जिनशब्दोंमेंविभक्त्यादि कार्य नहींहोतेहैं उनको अविभक्तिक वा अव्यय कहतेहैं; जैसा ऊपर, और, कहां, जहां, इत्यादि ।

प्र० सविभक्तिक और अविभक्तिकोंके औरकोई भेदहोवें तो कहिये ?

उ० हिन्दीभाषामें शब्दोंके आठप्रकारहैं, सविभक्तिक में चार जैसा नाम,

सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद और अविभक्तिकमेंचारहैं क्रियाविशेषण, शब्दयोगी, उभयान्वयी, उद्गारवाची ॥

प्र० नाम किसेकहतेहैं ?

उ० पदार्थमात्रकी संज्ञाको नामकहतेहैं; जैसा घोड़ा, बैल, मनुष्य, क्रोध इत्यादि +

प्र० सर्वनामकिसे कहतेहैं ?

उ० नामको एकबार कहकर फिरउसकीजगह जोशब्द आताहै, उसे सर्वनाम कहतेहैं; जैसा मोहनलाल आया, और उसनेकहा ॥

प्र० विशेषण किसेकहते हैं ?

उ० जो शब्द पदार्थकागुणवाधर्मबतावे उसेविशेषणकहतेहैं; जैसासुन्दर घोड़ा, मीठापानी, चतुरपुरुष, दो बैल, इत्यादि ॥

प्र० क्रियापदकिसेकहतेहैं ?

उ० कृति वा स्थिति वा अनुभव इत्यादि व्यापार बोधकशब्दको क्रियापदकहतेहैं; जैसा करताहै, सोया, गया, आताहै, मारागया इत्यादि ॥

प्र० क्रियाविशेषण अव्यय किसेकहतेहैं ?

उ० क्रियाकेगुण वा प्रकारबोधक शब्दोंको क्रियाविशेषणकहतेहैं; जैसा शीघ्र जाताहै, सुन्दरलिखताहै. झटपटचलताहै ॥

प्र० शब्दयोगीअव्ययकिसेकहतेहैं ?

उ० जिसकाप्रयोग नामवाचककेसाथहोताहै औरउसीकासंबंध दूसरेकी तरफ बताताहै, उसेशब्दयोगीजानो; जैसा ऊपर, आगे, पीछे, इत्यादि ॥

प्र० उभयान्वयी अव्यय किसको कहतेहैं ?

उ० जिसशब्दका योग दो शब्दोंमें वा दो वाक्योंमें होवे उसे उभयान्वयी जानो; जैसा परंतु, और, तथापि, वा इत्यादि ॥

प्र० केवल प्रयोगी किसे कहतेहैं ?

उ० जिसमें उनके हर्षदुःखादि विकारोंका बोधहो उसे केवल प्रयोगी वा उद्गार वाची कहतेहैं; जैसा वाहवा, छः, धिक्, हरहर, इत्यादि ॥

+ सब पदार्थ द्रव्य वा अद्रव्य जिनकी स्थिति वा, अस्थितिहै ऐसी कल्पना करसकतेहैं, उनकी संज्ञा को नाम कहतेहैं ॥

२ पाठ

नामविचार ॥

नामकेप्रकार ॥

प्र० नामकितने प्रकारकेहैं ?

उ० नाम तीन प्रकारकेहैं सामान्य नाम, विशेषनाम, भाववाचकनाम, ॥

प्र० सामान्य नाम किसेकहतेहैं ?

उ० जिसनामसे वस्तुओंके समूहमेंसे कोई जाति धर्मविशिष्ट व्यक्तिसमझी जाय उसे सामान्यनामजानो जैसा घोड़ा, हाथी, मनुष्य, इत्यादि + ॥

प्र० विशेष नामकिसेकहतेहैं ॥

उ० जिस नाममे जातिके गुणका बोध न होकर केवलव्यक्तिमात्रकाबोध हो उसे विशेषनाम कहतेहैं; जैसा देवदत्त, गंगा, यमुना, कर्नाटक इत्यादि + ॥

प्र० भाववाचक नाम किसेकहतेहैं ?

उ० पदार्थकाधर्म अर्थात् गुण वा कोई व्यापार जिस से पायाजाय उसे भाववाचक नाम कहतेहैं, जैसा औदार्य, समझ, मार, मनुष्यत्व, चातुर्यइत्यादि ॥

प्र० नामसे और कुछ समझाजाताहै वा नहीं ?

उ० हां, लिंग, वचन, और कारक समझेजातेहैं ॥

+ जब बालक समझताहै कि गुलयह फूलहै मोगरा भी फूलहै तब उसको चम्पा बतलायाजावे तो यहभी फूलहै ऐसासमझेगा ॥ जो ऐसाहो तोस्पष्टहै कि बालक को यह बोध हुआ कि कई पदार्थ कुछ २ बातोंसे भिन्न हों और एक मुख्यबात में समान होवें तो भी उस मुख्यताके कारणसे उन पदार्थों को एक जाति मानी जातीहै ॥ सामान्य कहनेका कारण यह कि उस मेंसे सब व्यक्तियोंके और प्रत्येक व्यक्ति के लिये उस को योजना करते हैं ॥

+ विशेषनाम तो केवल पहचाननेका चिन्हहै ॥ उसमें कुछ जातिके गुणका बोध नहीं होता यद्यपि दो तीन व्यक्तियोंका एकही नामहोवे तो भी स्पष्टहै कि उन व्यक्तियोंमें कुछगुणकी समानताहै इसलिये उनका एकनामरक्खागया ऐसा नहीं रक्खागया सो रक्खागया ॥ कोई मनुष्य किसी एकगुणके लिये प्रसिद्धहो और उसगुण के संबन्ध से दूसरे को उसका नाम दियाजावेतो वहां वहनाम बराबरसामान्य नामके समानहोताहै ॥ जैसा यहसांप्रतकालमें कर्ण है; अर्थात् राजाकर्ण अति उदारथा उसके समान यह मनुष्य दाताहै ॥ ऐसे वाक्यमें कर्णका अर्थ जिस मनुष्य में दातापन बहुतहै ऐसा मनुष्य ॥

३ पाठ

लिंगविचार ॥

प्र० लिंगकिसे कहतेहैं ?

उ० लिंग चिह्न को कहतेहैं अर्थात् सजीव, वा निर्जीव, पदार्थ, पुरुषवाचक वा स्त्रीवाचकहै यहपहंचाननेकाचिह्न ॥

प्र० लिंगकितनेहैं ॥

उ० पुल्लिंग और स्त्रीलिङ्ग ये दो लिङ्गहैं, नपुंसकलिङ्ग तीसरा अन्यभाषामें आताहै, हिन्दीभाषामें नहींआता ॥

प्र० पुल्लिङ्ग और स्त्री लिङ्ग किसे कहतेहैं ?

उ० जिसनाममे पुरुषत्वका बोधहोय उसे पुल्लिङ्ग कहतेहैं; जैसा घोड़ा, गधा, गाड़ा, सोंटा, इत्यादि ॥

जिस नाममें स्त्रीत्वकाबोधहोय वह, स्त्रीलिङ्ग; जैसा घोड़ी, भैंस, खाट, कृपा, गाड़ी, घड़ी इत्यादि ॥

प्र० प्राणिवाचक पदार्थोंकालिङ्गभेद शीघ्रसमझमें आताहै, परअप्राणिवाचक पदार्थोंकालिङ्ग किसरीतिसे समझनाचाहिये ?

उ० लिङ्गकानिर्णयतो बहुतकठिनहै, परन्तु इसविषयमें कुछ नियम लिखताहूं ॥

॥ १ ॥ संस्कृतमें जोशब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्गहैं वेहिंदीमें बहुधा पुल्लिङ्गहोतेहैं जैसा सागर, रत्न, जल, मुख; रत्न और जल और मुख संस्कृतमें नपुंसकलिङ्गीहैं । जो शब्द संस्कृतमें स्त्रीलिंगहैं वे हिन्दीमें भीप्राय: स्त्रीलिंग होतेहैं जैसा कृपा, माया, गति, बुद्धि इत्यादि ॥

॥ २ ॥ अकारांत नाम जिसका उपान्त्यवर्ण त् न होय और आकारांत नाम प्राय:पुल्लिङ्गहैं; जैसा विघ्न, पत्थर, बेल, घोड़ा, लड़का, कपड़ा, इ० ॥

॥ ३ ॥ जिनशब्दोंके अन्तमें ई वा त होवे वे प्राय:स्त्रीलिङ्गहैं, परन्तु घी, पानी, जी, दही इत्यादि शब्द छोड़कर; जैसा घोड़ी, टोपी, कुरसी, हवेली, रात, बात, इत्यादि ॥

॥ ४ ॥ जिस नामकेअन्तमें आवट वा आहट प्रत्ययहो वह सदास्त्री लिङ्गजानो; जैसा सजावट, बनावट, घबराहट इत्यादि ॥

॥ ५ ॥ सामासिक शब्दोंका लिङ्गनिर्णय बहुधा अंत्यशब्दके लिङ्गानुसार होताहै, औरबहुव्रीहि समासमें अन्यपदार्थवत् लिङ्गहोगा॥ जैसा दयानिधि यह पुल्लिङ्गहै क्योंकि निधिशब्दपुल्लिङ्गहै ॥ इसीतरहसे भूतदया उपकारबुद्धि ये स्त्रीलिङ्गहैं कुमतिपुरुष अर्थात् जिसकी मतिख़राबहै ऐसापुरुष यहां कुमति यह विशेषणपुल्लिङ्गहै ॥ कुमतिस्त्री यहां कुमति यह विशेषणस्त्रीलिङ्गहै ॥

४ पाठ

पुल्लिङ्गनामसे स्त्रीलिङ्गनाम बनानेकीरीति ॥

प्र० पुल्लिङ्गशब्द से स्त्रीलिङ्ग किसप्रकारसे बनताहै ?

उ ॥ १ ॥ प्राणिवाचक अकारांत और आकारांत पुल्लिङ्गशब्दके अंत्याक्षरके स्थानमें ई आदेशहोनेसे स्त्रीलिङ्गहोताहै; जैसा देव, देवी; दास, दासी; लड़का, लड़की; घोड़ा, घोड़ी इत्यादि ॥

॥ २ ॥ कहीं २ इया आदेशहोताहै वहांअंत्याक्षर द्वित्वहोवे तो एक व्यञ्जनकालोप होजाताहै जैसा बुड्ढा, बुढिया; लट्ठ, लठिया; कुत्ता, कुतिया; इत्यादि ॥

॥ ३ ॥ व्यापारकरनेवालेपुरुषवाची अकारांत वा आकारांत वा ईकारांत शब्द अंत्याक्षरको अन वा इन आदेश करनेसे स्त्रीलिङ्ग होते हैं ॥

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग		पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
सोनार	सोनारिन,	सोनारन	कसेरा	कसेरिन,	कसेरन
लोहार	लोहारिन,	लोहारन	ठठेरा	ठठेरिन,	ठठेरन
कलवार	कलवारिन,	कलवारन	तेली	तेलिन,	तेलन
माली	मालिन,	मालन	धोबी	धोबिन,	धोबन

॥ ४ ॥ ब्राह्मणोंके उपनामवाची शब्दोंको स्त्रीलिङ्ग बनानेकेलिये अंत्य स्वरको आइन आदेश विकल्पसेकरके आदिअक्षरके स्वरको ह्रस्वकरदेतेहैं, पर ए ओ को ह्रस्वनहींहोता; एकपक्षमें अन आदेशहोताहै ॥

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मिसर	मिसराइन, मिसरन	तिवारी	तिवारन, तिवारिन

दुबे	दुबाइन, दुबन	ओझा	ओझन
पांडे	पंडाइन, पांड़न	चौवे	चौवन

॥ ५ ॥ पुल्लिङ्ग शब्दके अंत्यवर्णको अन आयन तायन नी आनी ये आदेशहोनेसे कभी २ स्त्रीलिङ्ग होतेहैं; जैसा

पुल्लिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	आदेश	स्त्रीलिङ्ग
कूंजड़ा	अन	कूंजड़न	नायक	अन	नायकन
कवी	तायन	कवितायन	खतरी	आयन, अन, आनी	खतरायन, खतरन, खतरानी
पण्डित	आनी, आयन	पण्डितानी, पण्डितायन	मेहतर	आनी	मेहतरानी

॥ ६ ॥ कई पुल्लिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भिन्नशब्दोंसे होताहै जैसा

पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
भाई	बहिन	पुरुष	स्त्री	पिता	माता
बाप	मा	राजा	रानी	मर्द	औरत
		बैल	गाय	नर	मादी

भाषामें हरएक नामकालिंग जानना बहुत कठिनहै, इसलिये यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिसनामका लिंगज्ञात नहोय उसका प्रयोग स्त्रीलिंग में करनेसे पुल्लिङ्ग में करना उचितहै ॥

---

५ पाठ

वचनकावर्णन ॥

प्र० वचन किसे कहतेहैं और वे कितनेहैं ?

उ० वचन संख्याको कहतेहैं; वे दोहैं एकवचन और बहुवचन; नामके जिस रूपसे एकका बोधहो उसे बहुवचन कहतेहैं; जैसा लड़का, घोड़ा एकवचन; लड़के, घोड़े बहुवचन ॥

प्र० नामका बहुवचन किसरीतसे बनताहै ?

उ० आकारांत पुल्लिङ्ग शब्दके अंत्यआकेस्थानमें ए आदेश करनेसे बहुवचन होताहै; जैसा एकवचन वहुवचन- ए-व व-व ए-व-व-व

घोड़ा	घोड़े	मोटा	मोटे	दंडा	दंडे
गधा	गधे	कोठा	कोठे	लड़का	लड़के इत्यादि ॥

शेषपुल्लिङ्ग शब्दोंके एक वचन और वहुवचन के रूप एकसे होतेहैं; जैसा मर्द, पर्वत, माल साधु इत्यादि ॥

सम्बन्धवाचक आकारांत और इतरकई एकआकारांतशब्द एकवचन और वहुवचनमें समानरूप होतेहैं जैसा वावा, पिता, माता, दादा, दर्या, दाना, दाता, इत्यादि ॥

स्त्रीलिंग इकारांत, ईकारांत उकारांत और ऊकारांत शब्दोंकोछोड़कर वाक़ी शब्दों के अंत्यवर्णकेस्थानमें सानुनासिक एं आदेश करनेसे वहुवचन होताहै; जैसा एकवचन, वहुवचन, ए-व- व-व- ए-व- व-व-

औरत औरतें किताब किताबें तलवार तलवारें इत्यादि ॥

इकारांत और ईकारांत शब्दोंके आगे,यां प्रत्यय करके ईकारको ह्रस्व करनेसे वहुवचन होताहै; जैसा ॥

घोड़ी घोड़ियां ; वकरी वकरियां ; वुद्धि वुद्धियां इत्यादि ॥

आकारांतस्त्रीलिंगीशब्दोंके अंत्य आ पर प्रायःअनुस्वारदेनेसे और कभी २ आकोविकल्पसे एं आदेशकरनेसे वहुवचनहोताहै; जैसा

एकवचन	वहुवचन	ए- व-	व- व-
गैया	गैयां, गैयें	भैंसिया	भैंसियां, भैंसियें इत्यादि ॥

वहुतसेनामोंके एकवचन और वहुवचनके रूपसमानहोतेहैं, इसलियेअनेकत्वकाबोध करनेकेवास्ते लोग, गण, जाति, इत्यादि वहुत्ववाचकशब्द नामके-साथआतेहैं; जैसा चाकरलोग, देवगण, पशुजाति इ० ॥

---

६ पाठ

विभक्ति और कारक विचार ॥

प्र० कारक और विभक्ति किनको कहतेहैं ?

उ० क्रियाका सम्बन्ध जिसनामवाचकशब्द में हो उसे कारककहतेहैं;

और क्रिया और कारकका सम्बन्ध जिसरूपसेज्ञातहोवे उसकोविमक्तिकहतेहैं; और सम्बन्धबोधकअक्षरोंको विभक्तिप्रत्ययकहतेहैं ॥

प्र० कारक कौन २ हैं ?

उ० कारकछःहैं, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, इनका वर्णन आगेकियाहै ॥

प्र० विभक्तियां कितनीहैं ?

उ० ये विभक्तियां आठहैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, और सम्बोधन ॥

प्र० विभक्ति प्रत्ययकौनरहैं और उनकीयोजना कैसीहोतीहै ?

उ०	विभक्तिकानाम	प्रत्यय	विभक्तिकानाम	प्रत्यय
	१ प्रथमा	०	५ पंचमी	से
	२ द्वितीया	को	६ षष्ठी	का, की, के
	३ तृतीया	ने, से	७ सप्तमी	में, पै, पर
	४ चतुर्थी	को	८ सम्बोधन	०

प्रथमाविभक्तिमें नामसे कुछ प्रत्ययनहींहोता जो मूलरूपहै वहीरहताहै; प्रथमाके एकवचनकारूप और कभी २ बहुवचनकारूप दोनों तुल्यहोतेहैं ॥

इतरविभक्तियोंमें प्रत्ययहोतेहैं, वे नामवाचकके मूलरूपसे या उसरूपमें कुछविकारहोकर आगे जोड़ेजातेहैं, जिसरूपमें प्रत्ययजोड़ेजातेहैं उसकोविमक्तिसामान्यरूप या सामान्यरूप कहतेहैं, फिरवहरूप नामवाचककामूलरूपहो या विकृतरूपहो; जैसा लड़का, लड़केको, लड़कोंको, यहां लड़के और लड़कों ये लड़काशब्दके क्रमसे एकवचन और बहुवचनके सामान्यरूपहैं; द्वितीयाआदि विभक्तियोंमें और संबोधनमें इतनाभेदहै कि संबोधनमें प्रत्यय नहींहै और अय, अरे, हे इत्यादिशब्द नामकेपूर्वलगातेहैं ॥ विभक्ति प्रत्ययोंका योगकरना विभक्तिकार्य कहलाताहै ॥

प्र० प्रथमादिछःकारक और सम्बन्धबोधकषष्ठी इनका पृथक् २ लक्षण कहिये ?

उ० क्रियाको जोकरे उसे कर्ता कहतेहैं; जैसा देवदत्तजाताहै ॥

क्रियाकाफल जिसपररहै उसे कर्म जानो; जैसा देवदत्त किताबको पढ़ताहै ॥

क्रियाकासाधन अर्थात् जिसके द्वाराक्रियाकीजावे उसे करण समझो; रामने रावणको बाणमेमारा, यहां बाणकरणहै ॥

जिसको कुछ दियाजावे वा जिसके निमित्त कुछकियाजावे उसे संप्रद कहतेहैं; जैसा मोहनलाल गरीबोंको खानेकोदेताहै ॥

जिसमेवियोगकियाजावे उसे अपादान कहतेहैं; जैसा बाजारमेलाया।

षष्ठीका अर्थ संबंधहै, वह दोपदार्थोंपर रहताहै, एकक्षत संबंधी दूसरा संबंधी ॥ क्षतसंबंधीसे षष्ठीके प्रत्यय का की के होतेहैं; संबन्धी पुल्लिङ्ग एकवचन हो तो क्षतसंबंधीकेआगे का; स्त्रीलिंगहो तो की, पुल्लिङ्ग बहुवचनहोतो के लगातेहैं, क्षतसंबंधी संबंधीका विशेषणहोताहै, उसका क्रियामें अन्वयनहींहोता, इसलिये षष्ठीकारकमें नहींली; जैसा राजाकाघोड़ा, राजाकीघोड़ी, राजाकेघोड़े इत्यादि ॥

सप्तमीका अर्थ अधिकरण अर्थात् आधारहोताहै; जैसा श्रीकृष्णघरमेंहै, गोपाल घोड़ेपै बैठकरगयाहै इत्यादि ॥

संबोधन = सम्मुखीकरण अर्थात् किसीकोचिताकर अपने सम्मुखकरना, संबोधनके बोधक हे, अरे, अय, इत्यादि अव्यय नामके पूर्व लगातेहैं; जैसा हे राम,मेरा दुःखदूरकर, अरेमोहन,अवक्षपाकर इनका बर्णन कारकविचारमें अच्छीतरहसे कियाजायगा ॥

प्र० नामसे विभक्ति कार्य कैसा होताहै यह मेरेध्यानमें अच्छीतरहसे नहीं आया इसलिये उदाहरणदेकर मुझे समझाइये ?

उ० विभक्ति कार्य अच्छीतरहसे समझमें आवे इसलिये पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग नामोंके विभक्तिकार्यके विषयमें पृथक् २ नियमलिखताहूं ॥

---

१ पाठ

पुल्लिङ्गनाम ॥

इन नामोंके दोगण कियेहैं १ एक अकारांतपुल्लिंगनाम, २ दूसरा आकारांतपुल्लिङ्ग नामोंको छोड़ शेषपुल्लिङ्गनाम ॥

नियम ॥

१ आकारांतपुल्लिङ्ग नामके अन्त्य आ को ए आदेश करनेसे प्रथमाका

बहुवचन और एकवचन सामान्यरूप और संबोधनके एकवचन का रूप बनता है; अन्त्य आ को ओं आदेश करनेसे बहुवचनसामान्य रूप, होताहै, और संबोधनके बहुवचनमें ओ आदेश होताहै; सामान्यरूपके आगे प्रत्यय जोड़े जातेहैं ॥

२ अवशिष्टपुल्लिङ्ग नामोंकी प्रथमाके बहुवचनकारूप और एकवचन सामान्यरूप प्रथमाके एकवचनके रूपवत् होतेहैं, द्वितीयादिविभक्तियोंके बहुवचनमें अंत्यवर्णके आगे ओं आगम करके बहुवचन विभक्ति सामान्य रूप बनता है, संबोधनमें केवल ओ आगम किया जाताहै ॥ सामान्यरूपकेआगे प्रत्यय जोड़तेहैं ॥

प्रथम नियमका उदाहरण ॥

आकारांत पुल्लिङ्ग लड़काशब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	१ लड़का	लड़के
द्वितीया	२ लड़केको	लड़कोंको
तृतीया	३ लड़केने - से	लड़कोंने - से -
चतुर्थी	४ लड़केको	लड़कोंको
पंचमी	५ लड़केसे	लड़कोंसे
षष्ठी	६ लड़केका - की - के -	लड़कोंका - की - के -
सप्तमी	७ लड़केमें - पै - पर	लड़कोंमे पै - पर
संबोधन	८ अयलड़के	अय लड़को

इसी रीतिसे आगे लिखेहुए नामोंको छोड़ शेषसब आकारांत पुल्लिङ्ग नामोंका विभक्तिकार्य जानो ॥

अपवाद—आकारांत पुल्लिङ्ग विशेषनाम, संबंधवाचकनाम, और संस्कृत शब्द ये पूर्वोक्त नियमके अपवादहैं; इनका विभक्तिकार्य दूसरेनियमसे होताहै; जैसा, मोहना, रामा, भैय्या, काका, मामा, दाता, कर्ता, इत्यादि ॥

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	१ भैय्या	भैय्या
द्वितीया	२ भैय्याको	भैय्याओंको
तृतीया	३ भैय्याने-से	भैय्याओंने-से
चतुर्थी	४ भैय्याको	भैय्याओंको
पंचमी	५ भैय्यासे	भैय्याओंसे
षष्ठी	६ भैय्याका-की-के	भैय्याओंका-की-के
सप्तमी	७ भैय्यामें-पै-पर	भैय्याओंमें-पै-पर
सम्बोधन	अय भैय्या	अय भैय्याओ

द्वितीयनियमके उदाहरण

अकारांत पुल्लिङ्ग-नाम +

द्वितीयादि विभक्तियोंके बहुवचनमें अंत्यअको ओं आदेशकरके प्रत्यय जोड़तेहैं, संबोधनके बहुवचनमें अंत्यअको ओआदेशकियाजाताहै ॥

अकारांतपुल्लिङ्गबालकशब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र-	१ बालक	बालक
द्वि-	२ बालकको	बालकोंको
तृ-	३ बालकने-से	बालकोंने-से
च-	४ बालकको	बालकोंको
पं०	५ बालकसे	बालकोंसे
ष०	६ बालकका - की के	बालकोंका की - के
स०	७ बालकमें - पै पर	बालकोंमें पै - पर
सं	८ हे बालक	हे बालको

+ धन, बन, बालक आदिशब्दोंका उच्चारण कुछ हलंत सा किया करतेहैं पर इनके अंत्य अक्षर के नीचे व्यंजनका चिह्न नहीं लगातेहैं और ये शब्द संस्कृतमें बराबरअकारांतहैं इसलिये उन्हें यहां भी अकारांतमानाहै ॥

इसी प्रकार तालाव, मालिक, पालक, वृच, पर्वत इत्यादि जानो ॥

इकारांत और ईकारान्त पुल्लिंग नाम ॥

इकारांत पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग शब्द शुद्धहिन्दी नहींहैं, पर जो हिन्दीमें हैं वे संस्कृतसेआयेहैं; द्वितीयादिविभक्तियोंके वहुवचनमें अंत्यवर्णमेआगे यों आगमकरतेहैं संवोधनके वहुवचनमें यो होताहै, और अंत्यवर्ण दीर्घ ई होवे तो उसेह्रस्वकरतेहैं, ॥

इकारांत पुल्लिङ्ग कविशब्द ॥

	एकवचन	वहुवचन
प्र०	१ कवि	कवि
द्वि०	२ कविको	कवियोंको
तृ०	३ कविने, से	कवियोंने,से
च०	४ कविको	कवियों को
पं०	५ कविसे	कवियोंसे
ष०	६ कविका - की - के -	कवियोंका - की - के -
स०	७ कविमें - पै - पर	कवियोंमें - पै - पर -
सं०	८ हे कवि	अय कवियो

इसी तरहसे हरि रवि पति इत्यादि जानो ॥

ईकारान्त पुल्लिंग मालीशब्द ॥ +

विभक्ति-	एकवचन-	वहुवचन-	विभक्ति-	एकवचन-	वहुवचन
१	माली	माली	५	माली से	मालियोंसे
२	मालीको	मालियोंको	६	मालीका-की-के-	मालियोंका-की-के
३	मालीने-से-	मालियोंने-से-	७	मालीमें-पै-पर	मालियोंमें-पै-पर
४	मालीको-	मालियोंको	८	हे माली	अय मालियो

इसी तरह से धोवी, तेली, धनी इत्यादि जानो ॥

+ कोई २ लोग द्वितीया आदि विभक्तियों के वहुवचनमें ईकारांत पुल्लिंगनाम के रूप यों के वदले ओं आगम करके वनाते हैं जैसा मालिओंको मालिओंने-से इ० ॥

उकारांत पुल्लिङ्ग साधु शब्द ॥

१	साधु	साधु	५	साधुसे	साधुओंसे
२	साधुको	साधुओंको	६	साधुका-की, के,	साधुओंका-की-के
३	साधुने-से	साधुओंने-से	७	साधुमें-पै-पर	साधुओंमें-पै-पर
४	साधुको	साधुओंको	८	अयसाधु	अयसाधुओ

इसीतरहसे भानु, प्रभु आदि जानो ॥

ऊकारांत पुल्लिंग भालू शब्द ॥

ऊकारांतके बहुवचन सामान्यरूपमें अंत्य ऊ को ह्रस्व होजाता है ॥

१	भालू	भालू	५	भालूसे	भालुओंसे
२	भालूको	भालुओंको	६	भालूका-की-के	भालुओंका-की-के
३	भालूने-से	भालुओंने-से	७	भालूमें पै-पर	भालुओंमें-पै-पर
४	भालूको	भालुओंको	८	अयभालू	अयभालुओं

एकारांत पुल्लिंग नाम ॥

१	चौबे	चौबे	६	चौबेका-की-के	चौबेओंका-की-के,
२।४	चौबेको	चौबेओंको	७	चौबेमें-पै-पर	चौबेओंमें-पै-पर
३।५	चौबेने-से-	चौबेओंने-से	८	अयचौबे	अयचौबेओं

इसीप्रकार पाँड़े आदिशब्दजानो, और ऐ, ओ, औ, ये जिनकेअन्तमेहैं ऐसे शब्दहिन्दीभाषामेंनहींहैं ॥

८ पाठ

स्त्रीलिङ्गनाम ॥

प्रथमाके बहुवचनको छोड़कर शेषविभक्तियोंमें स्त्रीलिंग नामोंका विभक्ति कार्य जो पुल्लिङ्ग नाम आकारांतनहींहैं उनके समानहोताहै, स्त्रीलिंगनामोंके भी दो गणमानलियेहैं ॥

१ इकारांत और ईकारांत स्त्रीलिंगनाम ॥

२ शेषस्त्रीलिंगनाम ॥

१ नियम ॥

इकारांत और ईकारान्तस्त्रीलिंग नामोंके अंत्य इ और ई को इयां आदेशकरनेसे प्रथमाके बहुवचनका रूप बनताहै, शेषरूपपुल्लिंग इकारांत और ईकारान्तनामोंके सदृशहोतेहैं ॥

नियम २ ॥

इकारांत और ईकारान्त स्त्रीलिंग नामोंकोछोड़के शेषस्त्रीलिंगनामोंमेंसे कईनामोंके अंत्यअक्षरको ए आदेशकरनेसे प्रथमाके बहुवचनका रूपसिद्ध होताहै, और कईनामोंको प्रथमाके एकवचन और बहुवचन समानहोतेहैं ॥

उदाहरण १

इकारांतस्त्रीलिंग बुद्धिशब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्र- १	बुद्धि	बुद्धियां	पं-५	बुद्धिसे	बुद्धियोंसे
द्वि-२	बुद्धिको	बुद्धियोंको	ष-६	बुद्धिका-की-के	बुद्धियोंका-की-के
तृ- ३	बुद्धिने-से-	बुद्धियोंने-से	स-७	बुद्धिमें-पै-पर-	बुद्धियोंमें-पै-पर-
च- ४	बुद्धिको	बुद्धियोंको	सं-८	हेबुद्धि	हेबुद्धियो

इसी तरह मति आदिशब्दजानो ॥

ईकारांत स्त्रीलिंगघोड़ीशब्द ॥

१	घोड़ी	घोड़ियां	६	घोड़ीका-की-के	घोड़ियोंका-की-के
२।४	घोड़ीको	घोड़ियोंको	७	घोड़ीमें-पै-पर	घोड़ियोंमें-पै-पर
३।५	घोड़ीने-से	घोड़ियोंने-से	८	अयघोड़ी	अयघोड़ियो

२ गण नियम और उदाहरण

अकारान्तस्त्रीलिंगनामके अंत्यअक्षरको एं आदेशकरनेसे प्रथमाके बहुवचन कारूपसिद्ध होताहै, और शेषरूप अकारांतपुल्लिंगवत् ॥

अकारांत स्त्रीलिंगबातशब्द ॥

विभ-	एकवचन	बहुवचन	वि-	एकवचन	बहुवचन
१	बात	बातें	५	बातसे	बातोंसे

२	बातको	बातोंको	६	बातका-की-के	बातोंका-की-के
३	बातने-से-	बातोंने-से	७	बातमें-पै-पर-	बातोंमें-पै-पर-
४	बातको	बातोंको	८	हेबात	हेबातो

इसीतरह किताब, चील, रातआदिजानो ॥

आकारांतस्त्रीलिंगनामके अंत्यआकेसिरपर अनुस्वार देनेसे प्रथमाके बहुवचन कारूपहोताहै, शेषरूप मुख्यनियमसे बनतेहैं ॥

आकारान्तस्त्रीलिंगनामकेरूप

विभ-एकवचन	बहुवचन	वि- एकवचन	बहुवचन
१ गैय्या	गैय्यां	६ गैय्याका-की-के	गैय्याओंका-की-के-
२।४ गैय्याको	गैय्याओंको	७ गैय्यामें-पै-पर-	गैय्याओंमें-पै-पर-
३।५ गैय्याने-से-	गैय्याओंने-से	८ हेगैय्या	हेगैय्याओ

उकारान्तस्त्रीलिंगनामकेरूप		ऊकारांतस्त्रीलिङ्गनामकेरूप	
१ धेनु	धेनु	१ झाडू	झाडू
२।४ धेनुको	धेनुओंको	२।४ झाडूको	झाडुओंको
३।५ धेनुने-से-	धेनुओंने-से-	३।५ झाडूने-से-	झाडुओंने-से-
६ धेनुका-की-के-	धेनुओंका-की-के	६ झाडूका-की-के-	झाडुओंका-की-के
७ धेनुमें-पै-पर	धेनुओंमें-पै-पर	७ झाडूमें-पै-पर	झाडुओंमें-पै-पर
८ हेधेनु	हेधेनुओ	८ हेझाडू	हेझाडुओ

जोरूशब्दकी प्रथमाका बहुवचन जोरूएंहोताहै; एकारांतशब्दप्रायः स्त्रीलिंगमें नहींआता, ऐ ओ औ ये वर्ण जिनके अन्तमें हैं ऐसेनाम हिन्दीमें नहींहैं ॥

९ पाठ

सर्वनामविचार

पुरुषवाचकसर्वनाम

प्र० सर्वनामकिसेकहतेहैं ?

उ० नामको एकवारकहकर फिर उसके कहनेका प्रयोजन पड़ेतो उसकी जगह जो शब्दआतेहैं, उन्हेंसर्वनाम कहतेहैं; इससे वारम्वारनामको कहनेका काम नहीं पड़ता, और सर्वनामोंकीजगहआताहै, इसलिये सर्वनामयह सार्थ

संधारकवीगईहै ॥ सर्वनामोंको नामवत्‌लिंग वचन और विभक्तिकार्य होताहै ॥ परलिंगभेदसे उनकेरूपोंमें कुछभेदनहींहोता अर्थात्‌ पुल्लिंग और स्त्रीलिंगकेलिये एकसेहीरूपहोतेहैं, नामकेअनुरोधसे सर्वनामकालिंगबूझाजाताहै ॥

प्र० सर्वनाम कितनेप्रकारकेहैं ?

उ० सर्वनाम पांचप्रकारकेहैं पुरुषवाचक, दर्शक, सम्बन्धी प्रश्नार्थक, सामान्य ॥

पुरुषवाचकसर्वनाम ॥

प्र० पुरुषवाचकसर्वनाम किसेकहतेहैं ?

उ० मैं तू वह ये पुरुषवाचक सर्वनामहैं, मैं यह अपनेकावाचक बोलनेवालेको बताताहै, इसलिये उसे प्रथमपुरुष कहतेहैं; तू यहजिसको बोलताहै उसे बतलाताहै, इसकारणसे उसे द्वितीयपुरुषकहतेहैं; और वह उक्तदोनोंको छोड़ तीसरेका बोधकरताहै, इससेउसे तृतीयपुरुष कहतेहैं ॥

प्र० पुरुषवाचक सर्वनामोंकेरूप वचनभेदमेंकैसेहोतेहैं ?

उ० इनकेरूपपुल्लिंगऔर स्त्रीलिंगमें एकसेहोतेहैं पर वचनोंमेंबदलतेहैं ॥

पुल्लिङ्गस्त्रीलिंग		पुल्लिंगस्त्रीलिंग		पुल्लिंगस्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	ब-व-	ए-व-	ब-व
मैं	हम	तू	तुम	वह	वे

प्र० प्रथमपुरुष सर्वनामकी कारकरचनामें रूपकिसप्रकारसेहोतेहैं ?

उ० प्रथमाके एकवचनमें मैं और बहुवचनमें हम होताहै, और षष्ठीको छोड़ द्वितीयादिविभक्तियोंके एकवचनमें मुझ और बहुवचनमें हम वा हमों आदेशहोकर आगेप्रत्ययजोड़तेहैं, द्वितीया और चतुर्थीके एकवचनमें ए बहुवचनमें एं प्रत्ययविकल्पसेकरके मुझ और हम सामान्य रूपोंकेअंत्यअकारका लोपहोताहै, तृतीयाका ने प्रत्ययलगेतो मुझ आदेशनहोगा मूलरूपोंसे जोड़ा जाताहै, षष्ठीके एकवचनमें प्रकृतिको मे आदेश और का की के प्रत्ययोंको रा री रे+ आदेश क्रमसे करतेहैं बहुवचनमें हमकेअंत्यअकोदीर्घकरतेहैं, सर्वनामोंका सम्बोधन नहीं होता ॥

+ षष्ठीके प्रत्यय रा री रे केवल प्रथम और द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनामोंमेंहोतेहैं ॥ और ना नी ने निजवाचक आप शब्दसेहोतेहैं ॥ इनदृपोंकीयोजना का की के प्रत्ययांत रूपोंकेसमानहोतीहै ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	मैं	हम
२	मुझको, मुझे	हमको, हमोंको, हमें
३	मैंने, मुझसे	हमने, हमोंने, हमसे, हमोंसे
४	मुझको, मुझे	हमको, हमोंको, हमें
५	मुझे	हमसे, हमोंसे
६	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
७	मुझमें-पै,पर	हममें, हमोंमें, पै-पर-

प्र० द्वितीयपुरुष वाचक सर्वनामकेरूप कैसेबनतेहैं ?

उ० प्रथमाके एकवचनमें तू बहुवचनमें तुम होतेहैं, द्वितीयादि विभक्तियों के एकवचनमें तुझ और बहुवचनमें तुम वा तुम्हों आदेश होतेहैं, पर पष्ठीके एकवचनमें ते और बहुवचनमें तुम्ह आदेश होतेहैं, आदेशोंके आगे प्रत्ययोंका योगकियाजाताहै शेषकार्य पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	तू	तुम
२। ४	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्होंको, तुम्हें
३	तूने, तुझसे	तुमने, तुम्होंने, तुमसे, तुम्होंसे
५	तुझसे	तुमसे, तुम्होंसे
६	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
७	तुझमें	तुममें, तुम्होंमें

प्र० तृतीय पुरुषकेरूप किसप्रकारसे होतेहैं ॥

उ० प्रथमाके एकवचनमें वह बहुवचनमें वे होतेहैं, शेषविभक्तियोंके एकवचनमें उस बहुवचनमें उन वा उन्हों आदेश करके प्रत्यय जोड़तेहैं, द्वितीया और चतुर्थीमें कामो २ प्रत्ययोंको ए वा एं आदेश पूर्ववत् करतेहैं और बहुवचनमें प्रकृतिको उन्ह आदेश करतेहैं ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	वह	वे
२।४	उसको,उसे	उनको, उन्होंको, उन्हें
३	उसने, उससे	उनसे, उन्होंसे; उनने, उन्होंने

५	उससे	उनसे, उन्होंसे
६	उसका, उसकी, उसके,	उनका, उन्होंका, की - के
७	उसमें, पै - पर	उनमें, उन्होंमें, पै - पर -

द्वितीय पुरुष और तृतीयपुरुष वाचक सर्वनामोंको आदरार्थमें आप आदेश करके विभक्तियां लगातेहैं और इसके रूप बहुवचनमें होतेहैं; जैसा १ आप २।४ आपको ३।५ आपने, से ६ आपका - की - के ७ आपमें-पै-पर- ॥

आदरार्थक आप शब्दके साथ लोगशब्दका प्रयोग यथार्थ बहुत्व बताने के लिये करतेहैं; जैसा आप लोगोंको यह बात उचितहै, आप लोगोंसे आप लोगोंमें इत्यादि ॥

कभी २ आप इस सर्वनामका प्रयोग तीनोंपुरुषोंमें कियाजाताहै, तब वह शब्द निजका वाचक होताहै इसलिये उसे सामान्य सर्वनाम कहना उचित है, उसके रूप ऐसे होतेहैं कि एकवचन और बहुवचनमें १ आप २।४ आपको आपनेको ३।५ अपनेमे, आपसे ६ अपना-नी-ने-७आपमें, अपनेमें वह अपनेघरको चला, मैं अपने बापसे कहता,था तुम अपनेभाईसे कहना ॥ आपस यह परस्पर बोधकहै इससे प्राय: षष्ठी और सप्तमी विभक्तियोंकेप्रत्यय होतेहैं जैसा आपसका-की-के-आपसमें, जैसा तुमलोग आपसमें क्यों भगड़ाकरतेहो ॥

---

१० पाठ ॥

दर्शकसर्वनाम ॥

प्र० दर्शकसर्वनाम किसेकहतेहैं और उनसे विभक्तिकार्य कैसा होताहै ?

उ० वह और यह दर्शकसर्वनाम कहलातेहैं, वह दूरकी वस्तुको बतलाताहै और यह समीपकी वस्तुको; वह के रूप तो लिखआयेहैं, यह के रूप प्रथमाके एकवचनमें यह बहुवचनमें ये होताहै, शेषविभक्तियोंकेएक वचनमें इस बहुवचनमें इन इन्हों इन्ह आदेश विकल्पसे करके प्रत्यय जोड़तेहैं ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	यह	ये
२।४	इसको, इसे	इनको, इन्होंको, इन्हें

३।५	इसने, इससे	इनने, इन्होंसे, इनसे
६	इसका-की-के-	इनका, इन्होंका-की-के-
७	इसमें-पै-पर	इनमें, इन्होंमें-पै-पर-

---

११ पाठ

संबन्धी सर्वनाम ॥

प्र० संबन्धीसर्वनाम किसेकहतेहैं ?

उ० जो या जोन इसेसंबन्धीसर्वनाम कहतेहैं, क्योंकि जहांइसका प्रयोग होवे वहां सोवा तोन इस दर्शकसर्वनामका प्रयोग करना अवश्य पड़ताहै, वैय्याकरणलोग जो सो और वह इनको वा इनसे बनेहुए शब्दोंकोपरस्परनित्य संबन्धीकहतेहैं; जैसा जो कल आयाथा सो अच्छाथा, जिसनेयह काम कियाहै उसे इनाम दो, जैसा करोगे वैसा फल पाओगे ॥

प्र० सम्बन्धीसर्वनामकेरूप कैसेहोतेहैं ॥

उ० प्रथमाके एकवचनमें और बहुवचनमें जो ऐसाही रहताहै शेष विभक्तियोंके एकवचनमें जिस बहुवचनमें जिन वा जिन्ह वा जिन्हों आदेश पूर्ववत्होतेहैं, और सो केरूप द्वितीयादिविभक्तियोंके एकवचनमें तिस बहुवचनमें तिन वा तिन्ह वा तिन्हों आदेशहोतेहैं; आदेशोंकेआगे प्रत्ययजोड़ेजातेहैं; शेषपूर्ववत् ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	जो, जोन	जो, जोन
२।४	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्होंको, जिन्हें
३	जिसने, से-	जिनने, जिन्होंने, से-
५	जिससे	जिनसे, जिन्होंसे
६	जिसका-की-के-	जिनका, जिन्होंका-की-के-
७	जिसमें-पै-पर-	जिनमें, जिन्होंमें-पै-पर
१	सो तोन	सो तोन
२।४	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्होंको, तिन्हें
३।५	तिसने-से	तिनने-तिन्होंने-से-

६	तिसका-की-के-	तिनका-तिन्होंका-की-के
०	तिसमें-पै-पर	तिनमें-तिन्होंमें-पै-पर

१२ पाठ

प्रश्नार्थकसर्वनाम ॥

प्र० प्रश्नार्थक सर्वनामकिसे कहतेहैं और उनकेरूप कैसेहोतेहैं ?

उ० कौन और क्या ये प्रश्नकेलियेआतेहैं इसवास्ते प्रश्नार्थकसर्वनामकहातेहैं ॥ केवल कौनशब्दसामान्यतः मनुष्यको और क्या अप्राणिवाचकको लगातेहैं, परनामकेसाथ आवें तो दोनों प्राणिवाचक और अप्राणिवाचकको लगातेहैं; जैसा किसतरहसे; क्या दानाआदमी; किसकाघोड़ा ? मेरा; क्याहै ? चीज ॥

कौन शब्दको द्वितीयादि विभक्तियोंके एकवचनमें किस बहुवचनमें किन किन्ह वा किन्हों आदेश करके आगे प्रत्ययका योगहोताहै, शेष पूर्ववत् जानो ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	कौन	कौन
२।४	किसको, किसे	किनको, किन्होंको, किन्हें
३।५	किसने, किससे	किनने, किन्होंने, से-
६	किसका-की-के-	किनका-किन्होंका-की-के-
७	किसमें-पै-पर	किनमें-किन्होंमें-पै-पर

क्या इसकेरूपदोनों वचनमें एकसेही होतेहैं द्वितीयादि विभक्तियोंमें काहे आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़े जातेहैं जैसा १ क्या २।४ काहेको ३।५ काहे में-ने ६ काहेका-की-के,काहे-में-पै-पर ॥

१३ पाठ

सामान्य सर्वनाम ॥

प्र० सामान्यसर्वनाम किसेकहतेहैं और कैसा प्रयोगहोताहै ?

उ० कोई, कुछ, आप ये सामान्यसर्वनामहैं; इनमेंसे केवल कोई इसका

प्रयोग मनुष्य वाचकमें होता; और कुछ का सामान्य पदार्थमात्रमें; परनामके पीछे विशेषणके सदृशआवें, तोप्राणिवाचक और अप्राणिवाचकमें उनकाप्रयोग कियाजाताहै; जैसा किसीकोदो, किसीनगरमें, कुछपानीदे, कुछलोग इत्यादि ॥

प्र० इनको विभक्ति प्रत्यय लगानेसे कैसेरूपहोतेहैं ?

उ० आपके रूप तो पुरुषवाचकोंमें लिखआयेहैं, बाक़ी दोके ऐसे होतेहैं कि कोई को द्वितीयादि विभक्तियोंमें किसी आदेश और कुछ को किसु + आदेश होतेहैं और दोनोंवचनों में एकसेरूपजानो; जैसा १ कोई २।४ किसीको ३।५ किसीने-से-६ किसीका-कीके- ७ किसीमें-पै-पर-॥ १ कुछ २।४ किसूको ३।५ किसूने-से-६ किसूका-की-के- ७ किसूमें-पै-पर- ॥

प्र० और कोई शब्दसामान्य सर्वनाम होवें तो कहिये ?

उ० एकदूसरा दोनों और सब इनमेंविभक्तिप्रत्यय होतेहैं;द्वितीयादिविभक्तियोंकेबहुवचनमें सब शब्दके ब को भ आदेशविकल्पसेकरतेहैं; जैसा सबोंनेकहा + वा सभोंनेकहा-सभोंकोदो ॥ कई सामान्यसर्वनामहै, कईको विभक्तिप्रत्ययनहीं जोड़जाते, पर कई एक इससंयुक्तपदको विभक्तिकार्यहोताहै ॥ यदिइसपदका अर्थबहुत्वबोधकहै तोभी बहुवचनसामान्यरूपनहीं होता अर्थात् एकशब्दसे प्रत्ययोंका योगहोताहै; जैसा कईएककोमैंनेदेखा, कईएकोंकोनहींबोलते ॥

---

१४ पाठ

सर्वनामोंकेविषयमें स्फुटविचार ॥

प्र० नामकेसाथ सर्वनामोंकीयोजना किसप्रकारसेहोतीहै ?

उ० नामकेपीछे सर्वनामविशेषणकेरूपमेंआवेतो यहनियमहै किविभक्ति

+ कोई २ कहतेहैं कि कोई इससामान्य सर्वनामकेरूप द्वितीयादि विभक्तियोंके बहुवचनमें नहीं हैं पर ऐसे वाक्यसे देखो, हमारी पाठशालाकी परीक्षाहुई तबकिसी २ विद्यार्थी ने अच्छे २ उत्तरदिये, यहांस्पष्टहै कि किसी २ बहुत्वबतलाताहै इसलिये बहुवचनहै किसी रूपकी द्विरुक्ति करके आगे प्रत्ययोंकोजोड़कर बहुवचन बतलातेहैं ॥

+ कोई २ कहतेहैं कि कई यह प्रश्नार्थकसर्वनामहै ॥ परयह रूपप्रश्नमेंनहीं आता - कौनसाहै और उसका अर्थ कितनेहैं ॥

प्रत्ययनामसे जोड़देतेहैं सर्वनाममेंनहीं, नामप्रथमांत होवेतो सर्वनामभी प्रथमांतरहताहै, नामअन्यविभक्तिमेंहोवेतो सर्वनामका सामान्यरूपपीछे आताहै, नामकेवचनानुसार सर्वनामका वचनरहताहै; जैसा क्या, तुमहोशयार मनुष्यऐसेफसे, वहबातमैंनेसुनी, कौनजानवरहै, कोईसरकारीनौकररहताहै, मुफ़्तरौवकोधनदो, उसलड़केकाहाथटूटगया, मुझनिर्बुद्धिकोइतनायशमिला यहोवहुतहै इत्यादि ॥

प्र० बहुवचनमें द्वितीयादिविभक्तियोंके दोरूपजोलिखेहैं उनकेअर्थमें कुछभेदहोवेतोकहिये ?

उ० ओकारांतसामान्यरूपसे जोरूपबनतेहैं वे सदावहुत्वबतलातेहैं, हमोंको, तुम्होंको इत्यादि ॥ अन्यरूपकभी २ आदरार्थ बहुवचनमें आतेहैं हमको, हमें, तुमको इत्यादि ॥ उक्तसर्वनामोंका परिगणन कोष्ठकमें पृथक् २ लिखताहूं ॥

पुरुषवाचक सर्वनाम	दर्शकसर्वनाम	संबंधी स-	प्रश्नार्थकस-	सामान्य सर्वनाम	ये मुख्यहैं ॥
मैं, तू, वह	यह, वह, सो, तोन	जो जोन	कौन, क्या	कोई, कुछ, आप	
0	0	0	0	॥	इनमेंसे वाज़ेअन्य सर्व-
0	0	0	0	एक दूसरा	नामवाचकके योगसेभी
0	0	0	0	दोनों, ओर	सर्वनाम और विशेषण
0	0	0	0	वाज़े, बहुत	बनतेहैं; जैसा जो कुछ
0	0	0	0	सब, हर, फ	जो कोई, दूसरा कोई,
0	0	0	0	लाना, कई	हर एक इत्यादि ॥
0	ऐसा, वैसा,	जैसा	कैसा	कैसाही	प्रकारार्थबोधक; इसउस
0	तैसा			कितनाही	इत्यादिरूपोंके सकोत-
0	इतना, इ-	जितना,	कितना,		नाओर ता आदेशकरने
0	ता उतना,	जित्ता	कित्ता		सेबनतेहैं॥ वे परिमाण
0	उत्ता तित-				बोधक काहातेहैं ॥
0	ना तित्ता				

इनमेसे प्रकारार्थ वा परिमाणार्थ वा दूसरा, फलाना, वाज़े इनको स्त्री लिंगकरनाहोतो अंत्यवर्णको ई आदेशकरतेहैं जैसा कैसा, कैसी इत्यादि और बहुधासर्वनामशब्द विशेषणभीहोतेहैं ॥

---

१५ पाठ

विशेषणविचार ॥

प्र० विशेषणकिसेकहतेहैं ?

उ० जिसशब्दसेनामकागुण वा धर्मसमझाजाय उसे विशेषणकहतेहैं; जैसा धर्मशीलमनुष्य, हुशयारलड़का इत्यादि यहांधर्मशील और हुशयार विशेषणहैं ॥ विशेषणको नामकेसदृशलिंगवचन और विभक्तियांहोतीहैं ॥

प्र० विशेषणकितनेप्रकारकेहैं ?

उ० गुणवाचक और संख्यावाचक ये विशेषणके दोप्रकारहैं; जैसा अच्छा, बुरा, कमीना इत्यादि ॥ ये गुणवाचकविशेषणहैं; पदार्थकासंख्यारूपगुण जिससे समझाजाय वहसंख्यावाचकविशेषणहोताहै; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥

प्र० विशेष्यकिसेकहतेहैं ?

उ० जिसनामकागुण विशेषणबोधितकरै वह उसविशेषणका विशेष्यहोताहै; जैसा कालाघोड़ा, एकघोड़ा, यहां घोड़ेका काला और एक विशेषणहैं और विशेषणबोधितविशेष्यता अर्थात् कालापन और एकत्व घोड़ेमेहै, इससेघोड़ा यह नामविशेष्यहै ॥ हिन्दीभाषामें विशेष्यके लिंगवचनानुसार विशेषणकेलिंगवचनहोतेहैं और विशेषणविशेष्यकेपहिलेरहताहै; जैसा कालाघोड़ा, कालीघोड़ियां ॥

गुणविशेषण ॥

प्र० गुणविशेषण किसे कहतेहैं और उसके रूपलिंग औरवचनमें कैसे होतेहैं ?

उ० जिससेकेवलगुणपायाजाय वह गुणविशेषणहै ॥ उनमेंआकारांत विशेषणोंको छोड़ बाक़ी विशेषणोंकेरूप विशेष्यकेलिंगवचन और विभक्तिके अनुसार नहीं बदलतेहैं; जैसा सुंदरमर्द, सुन्दरऔरत, सुन्दरलड़का, सुन्दर लड़के इत्यादि ॥

प्र० आकारांतविशेषणकीयोजना कैसीहोतीहै ?

उ० विशेषणका रूपनामके लिङ्ग वचन और विभक्तिके अनुसार होताहै अर्थात् विशेष्य पुल्लिङ्ग और प्रथमाके एकवचनमें होवे तो, विशेषण आकारांत ही रहताहै, विशेष्य पुल्लिङ्ग और प्रथमाके वहुवचनमें हो या द्वितीयादि विभक्त्यंत अथवा सशब्दयोगिकहोवे तो विशेषणकेअंत्य आ को ए आदेशहोताहै विशेष्य स्त्रीलिंगहोवे तो विशेषणकेअन्त्य आ को ई आदेशहोताहै; जैसा काला घोड़ा, कालेघोड़े, कालेघोड़ेको, कालेघोड़ोंदर, कालीघोड़ी, वा कालीघोड़ियां, अच्छे लड़के, इत्यादि ॥

प्र० विशेषण विभक्तिका योग किसप्रकारसे होताहै ?

उ० जब विशेषण तद्गुण विशिष्टनाम वाचकके लिये आताहै तब उसको नामके समान विभक्तिलिङ्ग वचनलगतेहैं, विशेषण आकारांतहोवे तो आकारांत नामवत् इकारांतादिकोंको इकारांतादि नामवत् विभक्तिकार्यहोताहै ॥

पुल्लिंगभलाशब्द ॥

वि०	एकवचन	वहुवचन	वि०	एकवचन	वहुवचन
१	भला	भले	६	भलेका-की-के	भलोंका-की-के-
२।४	भलेको	भलोंको	७	भलेमें-पै-पर	भलोंमें-पै-पर-
३।५	भलेसे-ने-	भलोंसे-ने	८	हेभला	हेभले

स्त्रीलिंगभलीशब्द ॥

वि०	एकवचन	वहुवचन	वि०	एकवचन	वहुवचन
१	भली	भली	६	भलीका-की-के	भलियोंका-की-के
२।४	भलीको	भलियोंको	७	भलीमें-पै-पर,	भलियोंमें-पै-पर
३।५	भलीने-से	भलियोंने-से	८	हेभली	हेभलियो

तद्गुणविशिष्ट अकारांतसुन्दरशब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	वहुवचन	विभक्ति	एकवचन	वहुवचन
१	सुन्दर	सुन्दर	६	सुन्दरका-की-के	सुन्दरोंका-की-के
२।४	सुन्दरको	सुन्दरोंको	७	सुन्दरमें-पै-पर	सुन्दरोंमें-पै-पर

३।५ सुन्दरने-से सुन्दरोंने-से ८ हेसुन्दर हेसुन्दरो
इसीतरह और विशेषण जानों ॥

---

१६ पाठ

उपमा वाचक और विशेषणका न्यून और अधिक भाव ॥

प्र० सादृश्यार्थक प्रत्यय किन २ शब्दोंमें होतेहैं ॥

उ० सादृश्यार्थक और विशेष्यता बोधक सा प्रत्ययकायोग नाम, सर्वनाम, और विशेषणके आगे कियाकरतेहैं विशेषणके साथ वह प्रत्यय आवे तो कभी २ अर्थ न्यूनत्वजनाताहै जैसा तेरीकुतियासीकुतिया, मेरीसीआंख, छोटासाघर, इत्यादि ॥ सांतपदको आकारांतविशेषणके समानलिंगवचनादि कार्यहोताहै ॥

प्र० एकपदार्थमें दूसरेसे वा सवसजातीय पदार्थोंसेगुणाधिक्य या गुणन्यूनत्वहोवे तोकिसप्रकारसे बतलानाचाहिये ?

उ० यह गुणाधिक्यवतानेकेलिये विशेषणको कुछकार्यनहींहोता, पर जिसकेसाथतुलनाकीजावे उसनामको पंचमीकाप्रत्यय से जोड़ाजाताहै, और सवसजातीयोंसे तुलनाहोवेतो उसनामकेपीछे सव यहशब्दलगादेतेहैं; यह नियमहिन्दीमेंसाधारणहै, परकभी २ संस्कृतकीरीतिकेअनुसार विशेषणको तर और तम प्रत्ययजोड़के पूर्वोक्तकार्यकरतेहैं; जैसा मोहनलाल सुन्दरलालसे बुद्धिमानहै, विद्या द्रव्यसेअच्छीचीजहै, हमारीघोड़ी तुमारीघोड़ीसेचालाकहै, हिमालयपर्वत सवपर्वतोंसेऊंचाहै, गनपत अपनेसवसाथियोंसे होशयारहै, पुण्य - पुण्यतर - पुण्यतम - प्रिय - प्रियतर - प्रियतम - इत्यादि ॥

---

१७ पाठ

संख्याविशेषण ॥

प्र० संख्याविशेषण किसेकहतेहैं और उसकेरूपकैसेहोतेहैं ?

उ० संख्याजिससे बोधितहोय उसे संख्यावाचक कहतेहैं; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥ इनशब्दोंकाप्रयोग विशेष्यकेसाथकियाजावे तो रूपमें

छभेदनहींहोता; जैसा एकमर्दको वा औरतको, दो तीन मर्दोंने इत्यादि ॥ जो संख्यावाचकसे विभक्तिकायोगकियाजावेतो ऐसेरूपहोतेहैं; जैसा १ दोनों ॥४ दोनोंको ३ दोनोंने ४ दोनोंमें ६ दोनोंका-की-के, दोनोंमें-पै-पर हे दोनो-गणमेंसे कोई दो व्यक्तियां ली जांय तो यहां केवल दो इसरूपको विभक्ति प्रत्यय जोड़तेहैं जैसा दोको-ने-से इ० ॥ बाकी एक तीन चार इत्यादि अकारांत वा आकारांत इकारांत ईकारांत संख्यावाचकोंसे विभक्तियोंका योगकरतेहैं तबतत्तद्वर्णांतनामके सदृशरूपहोतेहैं और कईएकसंख्याविशेषण समूहवाचक विशेषणहैं जैसा गंडा, कोरी, सैंकड़ा, इत्यादि ॥ बहुत्वबतानेमें विशेष्यकेपूर्वसंख्यावाचकसे ओं जोड़तेहैं, जैसा हज़ारों आदमी लाखोंरुपये इत्यादि ॥

क्रमवाचक ॥

प्र० क्रमवाचक विशेषणकिसेकहतेहैं और उसकेरूपभेदहोंतोकहिये ?

उ० जो विशेषणक्रमबतावे उसेक्रमवाचकविशेषण कहतेहैं; जैसा पहिला, दूसरा, हज़ारवां यहांपांचसेआगे संख्यावाचकको वां वीं वें आगमकरनेसे क्रम वाचक बन जाताहै, और एकसे छः तक पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवा, छठवां छठा इत्यादि आदेश होतेहैं, और इनसे लिंग वचन और विभक्तिका योगकरनाहो तो आकारांत विशेषणके समान रूप होतेहैं; जैसा दसवां लड़का, दसवेंलड़के को-से-का-की- दसवींलड़की, दसवींलड़कियां, दसवीं लड़कीको, दसवींलड़कियोंको इत्यादि ॥

आवृत्तिवाचक ॥

प्र० आवृत्तिवाचक किसे कहतेहैं ?

उ० संख्या वाचकसे गुनाप्रत्यय लगानेसे और प्रकृतिको ह्रस्व वा न लोप वा, औकारआदि आदेश करनेसे आवृत्ति वाचक होतेहैं; जैसा

संख्या वाचक दो तीन चार पांच छः इत्यादि ॥

आवृत्तिवाचक दुगुना, तिगुना, चौगुना, पचगुना, छगुना, इत्यादि ॥

संख्या वाचकको बार वा बेर प्रत्यय जोड़नेसे भी आवृत्तिवाचक बनजाते हैं ॥ जैसा एकबार, दो बार वा बेर इ० ॥

संख्यावाचक ॥

प्र० संख्यांशवाचक किसे कहतेहैं और वे कौनरहैं ?

उ० संख्याका अंश अर्थात् भाग प्रदर्शक जो विशेषण उसे संख्यांशवाचक कहतेहैं, ॥

जैसा पाव चौथे चौथाई तिहाई आधा आध पौन पौने सवा डेढ़ अढ़ाई॥ कोई संख्या उत्तर अंकसे एकचतुर्थांश कमहोवे वा अधिक होवे तो पौने पौन सवा क्रमसेपीछेआतेहैं जैसा पौने दो सवा दो इत्यादि, और एक द्वितीयांश अधिक होवेतो एकमें डेढ़ दोमें ऋढ़ाई तीन आदिमें साढ़ेतीन साढ़ेचार इत्यादि होतेहैं और जब सौ हज़ार लाख इत्याद्यन्तसंख्या वाचकके साथ पौने सवा साढ़े आतेहैं तब सौ, हज़ार इत्यादि संख्याका भाग जानो जैसा पौनेदोसौ १७५ सवादोसौ २२५ साढ़ेतीनसौ ३५० इत्यादि ॥

क्रियापदविचार १८

क्रियापदलक्षण और उसके भेद ॥

प्र० क्रियापद किसे कहतेहै ?

उ० जिससे कृति वा स्थिति अर्थात् देह और मनके व्यापारका बोध हो उसेक्रिया पद कहतेहैं जैसा लिखताहै, बोलताहै, सोचताहै, खाचुका इत्यादि ॥

प्र० क्रियापद किससे बनताहै ?

उ० क्रियापद धातुसे बनताहै ॥

प्र० धातुकिसे कहतेहैं ॥

उ० क्रियाका मूल अर्थात् प्रत्ययादिकार्य रहित व्यापार बोधक जो शुद्धरूपहै उसे धातु कहतेहैं; जैसा गा, सो बैठ, कर, इ० ॥ भाषावाले इन धातुओंकेआगे ना प्रत्यय लगाकर धातु बतलातेहैं, इसमें कुछ हानि नहीं।

प्र० धातु कितनेप्रकारकीहैं ?

उ० धातु दो प्रकार की हैं एक सकर्मक दूसरी अकर्मक ॥

प्र० सकर्मक और अकर्मक क्रियापदोंका क्या लक्षणहै ?

३० जिसक्रियाके व्यापारसे उत्पन्नफल कर्त्तासे अन्यपदार्थमें जावे वह क्रियापद और उसकी धातु सकर्मक कहातीहै; जैसा वह लड़केकोपढ़ाताहै, यहां क्रियापदके व्यापारकाफल लड़केमेंहै, पढ़ताहै यहक्रियापद और पढ़ा यहधातु सकर्मकहै॥ और जिसक्रियाके व्यापारका फल कर्त्ताहीमें रहे उसक्रिया पदको और उसकी धातुको अकर्मक कहतेहैं; जैसा वह सोताहै, यहां सोता है इसक्रियाका फल कर्त्ताहीमें रहताहै इसलिये वहक्रिया पद और उस की सोधातु अकर्मकहै॥

उदाहरण॥

सकर्मकक्रियापद	अकर्मकक्रियापद
वह घरको बनाताहै	बालमुकुन्दबैठाहै
मोहनपोथीलिखताहै	कुत्ताभोंकताहै
बालक रोटी खाताहै	यज्ञदत्तपढ़ताहै

क्रियापद सकर्मकहै वा अकर्मकहै इसका ज्ञान होने की और भी रीतिहै॥

१ जिस क्रियापदमें क्या और किसको ऐसाप्रश्न करके उत्तर मिलसके तो वह क्रियापद सकर्मक जानो; जैसा वह खाताहै और खिलाताहै इसवाक्य में क्या खाताहै और किसको खिलाताहै ऐसा प्रश्न करनेसे रोटी और कुत्तेको इत्यादि ये उत्तर मिलतेहैं इसलिये खाताहै और खिलाताहै ये क्रियापद सकर्मक हैं. जिसधातुका प्रयोग सामान्य भूतकालमें किया जावे तो कर्त्ताको तृतीया विभक्तिका प्रत्यय ने लगताहै वह धातुसकर्मक जानो जैसा गोविंदने बैलछोड़ा, रामनेरावणकोमारा, मोहनलालनेघरबनाया, हीरालालनेमिट्टी खोदी, इत्यादि यहां सबक्रियापदसकर्मक जानो; लाना, भूलना, बोलना; समझना, बकना, ये कहीं २ अपवादहैं, और जिसक्रियापदसे उत्तरनमिले उसेअकर्मक जानो; जैसा सोताहै, बैठाहै, इत्यादि॥

धातुओंकेभेद ॥

प्र० धातुओंके और कौन २ भेदहैं ?

उ० सिद्धधातु, साधितधातु, और अनुकरणधातु, ये तीन भेदहैं; सिद्ध धातुओंका सहायधातु यह एकभेदहै ॥

प्र० सिद्धधातुकिसे कहतेहैं ?

उ० जो किसीसे न बनीहोवे वहसिद्धधातुहै; जैसा सो, बैठ, खा, पी, इत्यादि ॥ एकधातुकेआगे दूसरीधातु आकर मूलधातुका अर्थकाल इत्यादि बतलातीहै उसेसहायधातु कहतेहैं; जैसा सोगया, जाताहै, पकातारहताहै, करताहोगा, पकाकरताहै इत्यादि ॥

प्र० साधितधातु किसेकहतेहैं ?

उ० सिद्धधातुको प्रत्ययादिकार्यकरनेसे जो नयीधातुबनतीहै वह साधितधातुहै; जैसा रिझाना, समझाना, खिलावना, इ० ॥ इनके दो भेदहैं प्रयोजक, और नामधातु ॥

प्र० प्रयोजक क्रियापदकिसेकहतेहैं ?

उ० जहांक्रियाके मुख्यकर्ताका कोईदूसरा प्रेरक होकर वाक्यमेंकर्ता होताहै वहां वहक्रियापद प्रयोजक जानो ॥ प्रयोजकक्रियापदका यहधर्महै किमूलधातु अकर्मकहोवे, तोसकर्मकहोजातीहै अर्थात् अकर्मकक्रियापदका कर्ताप्रयोजक क्रियापदकाकर्महोताहै, और मूलधातु सकर्मकहोय तो औरएक कर्मबढ़जाताहै, परयहकर्म हिन्दीमें करण या अपादानरूपसे आताहै; जैसा अन्नपकताहै, और क्रियापद प्रयोजक करनेसे, वहमनुष्य अन्नपकाताहै यहां मनुष्यकर्त्ता और अन्नकर्महुएहैं - वहघरबनाता है॥प्रयोजक क्रियापदकरनेसे मैं उससेघरबनवाताहूं॥प्रयोजकक्रियापदकी धातुभी प्रयोजकजानो ॥

प्र० नामधातुकिसे कहतेहैं ?

उ० नामधातु उनधातुओंको कहतेहैं, जो कि नाम अथवा विशेषणसे बनतीहैं; जैसा चौड़ा, चौड़ाना; तरस, तरसना; पानी, पनियाना; आधा, अधियाना ॥

प्र० अनुकरणधातु किसे कहतेहैं ?

उ० कार्यसदृश उच्चारण जिसधातु काहो वहअनुकरण धातु कहलातीहै; जैसा बकबकताहै, घुरघुराता,है इत्यादि ॥

१९ पाठ

क्रियापदके लिङ्गवचन और पुरुष ॥

प्र० क्रियापदमें कौन २ बातें अवश्यहें ॥

उ० क्रियापदमें लिंग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, और प्रयोग अवश्य होतेहैं, और इनका ज्ञानक्रियापदके रूपमें होताहै इन भेदोंसे क्रियापदके रूपप्राय: बदलतेहैं

प्र० क्रियापदके लिंग, वचन, और पुरुष कितनेहैं ?

उ० दो लिंग पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग; दोवचन एकवचन और बहुवचन; तीन पुरुष प्रथमपुरुष, द्वितीयपुरुष, तृतीयपुरुष ॥

पुल्लिङ्ग

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	मैं करताहूं	हम करतेहैं
द्वितीय पुरुष	तू करताहै	तुम करतेहो
तृतीय पुरुष	वह करताहै	वे करतेहैं

स्त्रीलिङ्ग

प्र० - पु-	मैं करतीहूं	हम करतीहैं
द्वि - पु-	तू करतीहै	तुम करतीहो
तृ - पु-	वह करतीहै	वे करतीहैं

---

२० पाठ ॥

अर्थविचार ॥

प्र० क्रियापदका अर्थसमझाइये और उसके भेदबतलाइये ?

उ० कोईक्रिया अथवा व्यापार करनेके विषयमें बोलने वालेके मनमें जो भाव होवे तद्भाव बोधक जो क्रियापदका रूप उसे अर्थकहतेहैं और वे अर्थ पांचप्रकारकेहैं स्वार्थ, आज्ञार्थ, विध्यर्थ, संशयार्थ और संकेतार्थ ॥

१ जब कोई बात है वा नहीं इतना बोधक्रियापदसे होताहै तब वह क्रियापद स्वार्थमें रहताहै; जैसा वह करताहै, उसने काम नहींकिया ॥

२ जब बोलनेवाला आज्ञा वा उपदेश वा प्रार्थना करताहै ऐसाबोध क्रियापदके रूपसेहोवे, तो वहक्रियापद आज्ञार्थमेंजानो; जैसा तूकाम मतकर; जो अपनेसे हलकाहोवे उसेकोईकाम करनेकेलिये कहना वह आज्ञाकहलातीहै और जो अपनेसे बड़ाहोवे उसे कुछकरनेकेलिये कहना उसे प्रार्थनाजानो, पर कभी २ दोनों अर्थोंमेंक्रियापदकेरूप एकमेहोआतेहैं; जैसा अयराजामेरा संकटदूरकर, पानीला, यहांपहिलेमें प्रार्थना और दूसरेमें आज्ञाहै ॥

३ आज्ञाकाअर्थ गर्भितहोकर धर्म, शक्यता, योग्यता, संभावना, आशंसा, इत्यादिअर्थोंकाबोध क्रियापदकेरूपसेहोताहै, तबविध्यर्थ में क्रियापदहै ऐसाजानो; जैसा वहकामकरे, अर्थात् जो वहकामकरे तो योग्यहै; होसके सोकर ॥

४ क्रियापदकेरूपसे संदेहकाबोधहोवे, तो उसे संशयार्थकहतेहैं; जैसा वह गयाहोगा, उसनेकियाहोगा ॥

५ एकक्रियाकीसिद्धि दूसरीक्रियापदहै ऐसाबोधहोवे,तो वहक्रियासंकेतार्थमेंजानो; जैसा अगरमैं आजतक पाठशालामेंपढ़ता तोमेरीबढ़तीहोजाती, अगरमेरेसामने आजहोता तोमैंमारडालता इत्यादि ॥ इसअर्थको हेतुहेतुमत् भीकहतेहैं, कभी २ यह अर्थसमझानेकेलिये अगर तो यदि इत्यादि अव्ययोंकीयोजनाकरतेहैं ॥

---

२१ पाठ

कालविचार ॥

प्र० कालकिसेकहतेहैं ?

उ० क्रियाजिससमयमेंहुईहो उसे कालकहतेहैं, और उसकाबोध क्रियापदकेरूपसेहोताहै ॥

प्र० कालके कितनेभेदहैं ?

उ० वर्तमान; भूत, भविष्य, ये तीनभेदहैं ॥

प्र० वर्तमानकाल किसेकहतेहैं ?

उ० विद्यमानकाल अर्थात् जोचलाजाताहै उसेवर्त्तमानकालकहतेहैं; जैसा मैं पुछाकरताहूं यहांकर्ताहूं इससे वर्तमान कालकाबोधहोताहै ॥

प्र० भूतकालकिसेकहतेहैं ?

उ० वर्तमानकालसे पूर्वहोगया जोसमय उसे भूतकालकहतेहैं; जैसा नंदलालनेपुस्तकपढ़ी, यहांपढ़ी इसक्रियापदमे पूर्वकालसूचितहोताहै, इसलिये पढ़ी यह भूतकालजानो ॥ यहभूतकाल सामान्यभूत, अपूर्णभूत, भूतभूत, वर्तमानभूत केभेदसे चारप्रकारकाहै १ जो क्रियापूर्वकालमें होगईहो और पूर्वकालकानिश्चितज्ञान नपायाजाय उसेसामान्यभूतकहतेहैं, जैसा वहगया, मैंनेकामकिया इत्यादि यहांकालकानिश्चयनहींहै ॥ २ भूतकालमें जिसक्रिया की पूर्णतानहोजाय उसेअपूर्णभूत कहतेहैं, जैसा मैंकरताथा, यहांमैंकाममें- लगाथा, परन्तु उससमयमें क्रियापूर्णनहींहुई ऐसाबोधहोताहै ॥ ३ भूतकालमें क्रियाकाप्रारम्भहोकर पुरीहोगईहोवेतो उसे भूतरकालसमझो ॥ अभी२जोक्रिया दूसरीभूतक्रियाके पूर्वहोगईहो उसकाप्रयोग भूतभूतकालमेहोताहै, जैसा आपके आनेकेपूर्व वहगयाथा, यहांजानापूर्णहोचुकाहै ॥ ४ जोक्रियाभूतकालमें प्रारम्भहोकर वर्तमानकालमें समाप्तहुईहै उसेवर्तमानभूतकहतेहैं, जैसा मैंने उसकोमाराहै, यहांभूतकालमें मरनाशुरूहोकर वर्तमानमें समाप्तहुआहै, इसे आसन्नभूतभीकहतेहैं ॥

प्र० भविष्यत्कालकिसेकहतेहैं ?

उ० भावी अर्थात् होनेवालीक्रियाके समयको भविष्यत्कालकहतेहैं जैसा वहजावेगा इ० ॥

---

२२ पाठ

प्रयोगविचार ॥

प्र० प्रयोगकिसेकहतेहैं ?

उ० हिन्दीमेंक्रियापदकालिंगवचन और पुरुष कर्त्ताकेअनुसार और कभी२ कर्मकेअनुसार होतेहैं, और कई एकस्थलोंमें दोनोंकेभी अनुरोधसे क्रियापद नहींरहताहै ॥ इसक्रियापदमें कर्ता और कर्मसे ऐक्यवाभिन्नत्व वाक्यकीरचना

सोधितहोताहै, इसवाक्यरचनाकेप्रकारको या इसतरहसे क्रियापदकेविकृतरूप को प्रयोगकहतेहैं ॥

प्र० प्रयोगकितनेप्रकारके होतेहैं ?

उ० कर्तरिप्रयोग, कर्मणिप्रयोग, भावे प्रयोग, ये तीनप्रकारहैं ॥

प्र० ये प्रयोग किसरीतिसे जानेजातेहैं और इनकेकुछभेद होतों कहो ?

उ० जहां कर्त्ताके अनुसार क्रियापदका रूपहोताहै अर्थात् कर्त्ताके लिंग वचनपुरुषके समान क्रियापदके लिंगवचनपुरुषहोतेहैं वहां कर्तरिप्रयोग जानो ॥ कर्तरि प्रयोगके दो भेदहैं, एक सकर्मक कर्तरि और दूसरा अकर्मक कर्तरि ॥ जहां क्रियापद सकर्मकहोवे, वहां सकर्मककर्तरिप्रयोगहोताहै; और जहांक्रियापद अकर्मकहोवे, वहां अकर्मक कर्तरि प्रयोग जानो; जैसा लड़का जाताहै, लड़केआतेहैं, लड़कियां जातीहैं, मैंजाताहूं-अकर्मक कर्तरि,मोहनलाल ख़तलिखताहै, शिवप्रसाद पानीपीताहै--सकर्मक कर्तरि प्रयोगजानो ॥

जहां कर्मके अनुसार क्रियापदकेलिंग वचन और पुरुष बदलेजावें, वहां कर्मणि प्रयोग जानो; जैसा रामनेसिंहमारा, सिंहिनीमारी मैंने ख़तभेजा, चिट्ठीलिखी, चिट्ठियांभेजीं इत्यादि ॥

कर्त्ता और कर्मके अनुसार जहां क्रियापदका रूप नहीं होता, केवल सामान्यतः पुल्लिङ्ग तृतीयपुरुष एकवचनमें रहताहै अर्थात् जहां क्रियाकाभा वही कर्त्ता हो वहां भावे प्रयोग जानो; जैसा रामलालनेसिंहकोमारा, रामने सिंहिनीकोमारा, उसनेचोरोंको पकड़ा, इत्यादि प्रयोगोंमें क्रियापदकालिंग वचन नहीं बदलता इसलिये ये भावे प्रयोगहैं ॥

प्र० ये प्रयोग किसकाल और अर्थमें होतेहैं ?

उ० ये प्रयोग, धातु वर्त्तमानकाल वाचक और भूतकालवाचक धातु साधितविशेषणोंमें बनतेहैं ॥

सब अर्थ और कालमें अकर्मक धातु और बोल, भूल, ला, बक समझ इन सकर्मक धातुओंमें कर्तरिप्रयोग होताहै; जैसा वह जावे, रामलाल घरको पहुंचा वह बोला, मैं यह बात भूला, वह बासन लावेगी इत्यादि ॥

धातु और वर्तमानकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे जो रूपबनते हैं उनमें सकर्मकधातुओंमें कर्तरिप्रयोग बनताहै; जैसा वह लड़का अपनी मा को बहुत कष्ट देताहै, नर्मदा प्रसाद अच्छा बोलताथा इ० ॥

भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषणमें जो काल और अर्थ बनतेहैं इनमें बोलधातुकागणछोड़ सकर्मकधातुओंमें कर्मणि और भावेप्रयोगहोतेहैं परन्तुइनाध्यानमें रखनाचाहिये कि कर्मणिप्रयोगमें कर्ता तृतीयांत और कर्म प्रथमांत, और कर्मकेअनुसार क्रियापदरहतेहैं; और भावेप्रयोगमें कर्तातृतीयांत, कर्मद्वितीयांत, और क्रियापदपुल्लिंग तृतीयपुरुष एकवचनहोतेहैं; जैसा मैंने चिट्ठीलिखी, कृष्णनेशेरमारा; उसनेबहुतसेदेशदेखेहैं, कर्मणिप्रयोग ॥ कृष्णनेशेर-कोमारा, मैंनेआपकेयहां सेवककोभेजाथा- भावेप्रयोग ॥

---

२३ पाठ

क्रियापदबनानेकीरीति ॥

प्र० धातुमेंक्रियापद किसरीतिमेंबननेहैं ?

उ० हिन्दीभाषामेंक्रियापद बहुधा एकहीरीतिसे बनजातेहैं इसविषयमें तीननियमहैं ॥

१ धातुकाशुद्धरूप अर्थात् धातुसाधितभाववाचक नामका ना गिराकर जो शेषरहताहै वहआज्ञार्थ द्वितीयपुरुष एकवचनकारूपहोताहै; जैसा बोल नासे बोल यहआज्ञार्थ द्वितीयपुरुष एकवचनकारूपहोताहै ॥

२ धातुको ता प्रत्ययलगानेसे वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषण होताहै; जैसा बोलता ॥

३ धातुकेअंत्यवर्णको आ मिलानेसे भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषण होताहै; जैसा बोला ॥

धातुकेअंतमें आ ई ऊ ए ओ होवेतो पूर्वोक्त आकारआदिकोंकेपीछे य् आगमकरके ईकार और ऊकारको ह्रस्वकरदेतेहैं; जैसा ला लाया, पी पिया, छू छुआ दे दिया, रो रोया परन्तु कईधातुओंकेरूप और रीतिसेहोतेहैं, जैसा कर किया, जा गया, हो हुआ इत्यादि ॥

इनतीनरूपोंसे और इनमें हो इससहायधातुके वर्तमान और भूतकालको जोड़कर सबअर्थ और कालोंकेरूप बनजातेहैं ॥

यहस्मरण रखनाचाहिये कि क्रियापदकारूपपुल्लिङ्ग एकवचनमें आकारांत

होवे,तो अंत्यआको बहुवचनमें ए, स्त्रीलिंग एकवचनमें ई और बहुवचनमें ईं आदेशहोतेहैं, यहप्रायःरीतिहै॥ जब दो अथवा अधिक रूप स्त्रीलिंगी आतेहैं तबरूपके अंत्यईपर अनुस्वार करदेतेहैं; जैसा औरतें बैठतीथीं॥

सहायधातुहो॥

	वर्तमानकाल		भूतकाल	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन-	बहुवचन-
प्र-पु-	मैंहूं	हमहैं	मैंथा	हमथे
द्वि-पु-	तूहै	तुमहो	तूथा	तुमथे
तृ-पु-	वहहै	वेहैं	वहथा	वेथे
		स्त्री-	मैंथी	हमथीं इ०॥

---

२४ पाठ

केवलधातुसे बनेहुए अर्थ और काल॥

प्र० शुद्धधातुसे कौन २ अर्थ और कालबनतेहैं ?

उ० शुद्धधातुसे हेतुहेतुमद्भविष्यकाल, और आज्ञार्थकेरूप बनजातेहैं॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल॥

धातुसेवक्ष्यमाणप्रत्यय लगानेसे हेतुहेतुमद्भविष्यकालके रूप बनजातेहैं॥ इसके रूपोंमें लिंगभेदनहींहोता॥

प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	ऊं	एं
द्वि-	ए	ओ
तृ-	ए	एं

जबधातु अकारांतहै तबउसकेअंत्य अकेस्थानमें ये प्रत्यय आदेशहोतेहैं; जैसा बोलूं, बोले इ०॥ धातुके अंतमें आकारादिस्वरहोवे तो ऊं और ओ प्रत्ययोंकोछोड़ बाक़ीकेप्रत्ययोंकेपीछे व् आगम विकल्पसेहोताहै; जैसा खावे वा खाए॥

और जबआगमनहीं होता तब ये प्रत्यय धातुओंकेआगे जोड़ेजातेहैं; कभी २ ए को य आदेशकरतेहैं; जैसा लावे, लाए, जाय, खाय, इत्यादि ॥

धातुएकारांत हो तो ऊं और ओ को छोड़ शेष प्रत्ययोंके पीछे व् आगम विकल्प से पूर्वोक्त नियमसेहोताहै, पर जब आगम नहीं करतेहैं तब धातुके एकारके स्थानमें उन प्रत्ययोंको आदेश करतेहैं; जैसा दे धातु

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
देऊं	देवें	दूं	दें
देवे	देओ	दे	दो
देवे	देवें	दे	दें

भविष्यकाल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्य कालकेरूपोंमें पुल्लिङ्ग एकवचनमें गाबहुवचनमेंगे औरस्त्री लिंग एकवचनमें गीबहुवचनमें गींबढादेतेहैं; जैसा बोलूंगी,देऊंगा दूंगा इ० ॥

आज्ञार्थ ॥

शुद्धधातुका जो रूपहै वही आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एकवचनका रूप समझो, शेषरूप हेतु हेतुमद्भविष्यकालके समानहोतेहैं; जैसा दे, बोल, इत्यादि॥

प्र० वर्तमानकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे कौनरकाल बनतेहैं ?

उ० संकेतार्थभूत, वर्तमानकाल, और अपूर्णभूत ॥

संकेतार्थभूत ॥

वर्तमानकालवाचकधातुसाधितविशेषणकेरूप लिंग वचनानुसार योजना कियेजातेहैं जैसा बोलता, बोलते इत्यादि ॥

वर्तमानकाल ॥

वर्तमानकालवाचक धातुसाधित विशेषणके आगे हो धातुके वर्तमानकाल के रूपजोड़नेसे वर्तमानकालके रूपबनतेहैं; जैसा बोलताहै, बोलतेहैं इत्यादि॥

अपूर्णभूत ॥

वर्तमानकाल वाचक धातुसाधित विशेषणके आगे हो धातुके सामान्य भूतकालके रूप जोड़नेसे अपूर्ण भूतकालके रूपबनजातेहैं; जैसा बोलताथा, बोलती थी इ० ॥

प्र० भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे कौन २ काल बनतेहैं ?

उ० सामान्यभूतकाल, वर्तमानभूतकाल; और भूतभूतकाल, बनतेहैं ॥

सामान्यभूत ॥

भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणके लिंग वचनानुसार जो रूप होते हैं वेही सामान्य भूतकालके रूपजानो; जैसा बोला, बोली, बोले इत्यादि ॥

वर्तमानभूत ॥

भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषणके आगे हो धातुके वर्तमानकालके रूप जोड़नेसे वर्तमान भूतकालके रूप बनजातेहैं; जैसा बोलाहै बोलेहैं इत्यादि ॥

भूतभूत ॥

भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणके आगे हो धातुके भूतकालकेरूप जोड़नेसे भूतभूतकालके रूपहोतेहैं; जैसा बोलाथा, बोलेथे, बोलीथी इ० ॥

प्र० धातुमेंपूर्वोक्त रूपोंकेसिवाय और कौन २ रूपबनतेहैं ?

उ० आदरपूर्वक आज्ञार्थ और भविष्यंकालका प्रयोगबनानाहोतो धातुको इये इयो वा इयेगा ये प्रत्ययलगादेतेहैं अकारांतधातुहोतो अंत्य अ के स्थानमें इन प्रत्ययोंको आदेशकरतेहैं; धातुकेअंतमें ए वाए होतो उसधातुको जिये जियो जियेगा ये प्रत्ययलगातेहैं, और ए कारको ई में बदलतेहैं बाक़ी कीधातुओंको इये इत्यादि प्रत्ययलगातेहैं; जैसा लाइये, पीजिये ॥

धातुसाधित भाववाचकनाम ॥

शुद्धधातुसे ना प्रत्ययजोड़नेसे भाववाचक नामहोताहै और उसमेंविभक्ति प्रत्ययआकारांत पुल्लिंगनामवत्होतेहैं; जैसा बोलना; बोलनेका,की,के, बोलने में इत्यादि ॥

कर्तृवाचकधातु साधितनाम ॥

भाववाचक नामके ना को ने आदेशकरके आगेवाला अथवा हारा ये प्रत्ययजोड़नेसे कर्तृवाचक धातुसाधितनामहोताहै; जैसा बोलनेवाला-बोलनेहारा इत्यादि ॥

धातुसाधितविशेषण ॥

पूर्वोक्तरीतिसे बनेहुए वर्तमानकालवाचक और भूतकालवाचक धातुसाधित

विशेषणोंकेआगे कभी २ हुआ यहरूपजोड़तेहैं; जैसा बोलता, बोलताहुआ; बोला, बोलाहुआ इत्यादि ॥

धातुसाधितअव्यय ॥

शुद्धधातु और उसकेआगे कर के करके वा करकर प्रत्यय लगानेसे समुच्चयार्थक वा भूतकालवाचक धातुसाधित अव्ययबनजातेहैं; जैसा बोल, बोलकर, बोलके, बोलकरके, बोलकरकर इत्यादि-ता प्रत्ययांत वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणके ता को ते आदेशकरके आगेही अव्ययजोड़नेसे तत्काल बोधक धातुसाधित अव्यय बनजाताहै; जैसा बोलतेही इत्यादि ॥

---

२४ पाठ

क्रियापदकेरूप ॥

प्र० पूर्वमेंक्रियापद बनानेके नियम आपने कहे उनकेअनुसार बनेहुए रूपकहिये ?

उ० क्रियापदके रूपसमझमें सुलभसेआवें इसलिये तीनभागोंमें बनाकर लिखताहूं ॥

होना ... अकर्मक ... ...
हो- ... शुद्धधातु ... ...
होता ... वर्तमानकाल वाचकधातुसाधितविशेषण
हुआ ... भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषण ...

शुद्धधातुसे बनेहुए काल

कर्तरिप्रयोग ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल———विध्यर्थवर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-पु-	मैंहोऊं-हों	हमहोवें-होएं-हों-
द्वि-पु-	तूहोवे-होए-होय-हो-	तुमहोओ-हो-होंय-
त-पु-	वह होवे-होए-होय हो	वे होवें-होएं हो होंय-

स्वार्थभविष्यकाल ॥

मैंहोऊंगा-हूंगा	हमहोवेंगे-होएंगे-होंगे-
तूहोवेगा-होयगा-होगा	तुमहोओगे-होगे-
वहहोवेगा-होएगा-होगा	वेहोवेंगे-होएंगे-होंगे-
स्त्री-मैंहोऊंगी-हूंगी-	हमहोवेंगी-होएंगी-होंगी-इ०

आज्ञार्थवर्तमानकाल ॥

मैंहोऊं-हों-	हमहोवें-होएं-हों
तूहो-	तुमहोओ-हो
वहहोवे होय-हो	वेहोवें-होएं-हों

वर्तमानकालवाचक धातुसाधित विशेषणसे बनेहुए काल ॥

कर्तरिप्रयोग ॥

संकेतार्थभूतकाल—स्वार्थरीतिभूतकाल

पुल्लिङ्ग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते
स्त्री-मैं होती	हम होतीं-इत्यादि

स्वार्थवर्तमानकाल ॥

मैं होताहूं	हम होतेहैं
तू होताहै	तुम होतेहो
वह होताहै	वे होतेहैं
स्त्री- मैं होतीहूं	हम होतीहैं- इ०

स्वार्थअपूर्णभूतकाल ॥

मैं होताथा	हम होतेथे
तू होताथा	तुम होतेथे
वह होताथा	वे होतेथे
स्त्री-मैं होतीथी	हम होतीथीं इत्यादि

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणोंसे बनेहुए काल ॥

कर्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थसामान्यभूतकाल ॥

मैं हुआ	हम हुए
तू हुआ	तुम हुए
वह हुआ	वे हुए
स्त्री- मैं हुई	हम हुईं इत्यादि

स्वार्थवर्तमानभूतकाल ॥

मैं - हुआ हूं	हम हुएहैं
तू हुआहै	तुम हुएहो
वह हुआहै	वे हुएहैं
स्त्री- मैं हुई हूं	हम हुईंहैं इ०

स्वार्थभूतभूतकाल ॥

मैं हुआथा	हम हुएथे
तू हुआथा	तुम हुएथे
वह हुआथा	वे हुएथे
स्त्री- मैं हुईथी	हम हुईंथीं- इ०

आदरपूर्वकआज्ञार्थ ॥

हूजिये हूजियो हूजियेगा इत्यादि० ॥

धातुसाधितनाम ॥

होना............भाववाचक होनेवाला ॥ होनेहारा......कर्तृवाचक ॥

धातुसाधितविशेषण ॥

होता – होताहुआ- } वर्तमानकालवाचक ‖ पु-हुआ-स्त्री-हुई-भूतकालवाचक॥
स्त्री-होती-होतीहुई- }

धातुसाधितअव्यय ॥

हो–होकर–होके–होकरके.......समुच्चयार्थक
होतेही ....तत्कालबोधक
बोलधातुका गणछोड़ सकर्मकधातुओंका यहधर्महै कि जिनकालोंके रूप

भूतकालवाचकधातुसाधितविशेषणसेजनतेहैं, उनमें सकर्मकक्रियापदके कर्ता से तृतीया विभक्ति होतीहै, यह आगे लिखेहुए रूपोंसे समझमें आवेगा॥

मारना सकर्मक ॥

मार.........शुद्धधातु

मारता......वर्तमानकालवाचकधातुसाधितविशेषण ॥

मारा.........भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषण ॥

केवल धातुसे बने हुए काल ॥

कर्तरिप्रयोग ॥

हेतु हेतुमद्भविष्यकाल-विध्यर्थवर्तमानकाल ॥

पुरुष एकवचन	बहुवचन
प्र- मैं मारूं	हम मारें
द्वि- तू मारे	तुम मारो
तृ- वह मारे	वे मारें

स्वार्थभविष्यत्काल ॥

मैं मारूंगा	हम मारेंगे
तू मारेगा	तुम मारोगे
वह मारेगा	वे मारेंगे
स्त्री- मैं मारूंगी	हम मारेंगीं

आज्ञार्थवर्तमानकाल ॥

मैं मारूं	हममारें
तू मार	तुममारो
वह मारे	वे मारें

वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसे बनेहुएकाल ॥

संकेतार्थभूत वा स्वार्थरीतिभूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष- बहुवचन
मैं मारता	हम मारते
तू मारता	तुम मारते
वह मारता	वे मारते
स्त्री- मैं मारती	हम मारतीं

स्वार्थवर्तमानकाल ॥

मैं मारताहूं	हम मारतेहैं
तू मारताहै	तुम मारतेहो
वह मारताहै	वे मारतेहैं
स्त्री- मैं मारतीहूं	हम मारतीहैं इत्यादि

स्वार्थअपूर्णभूतकाल ॥

मैं मारताथा	हम मारतेथे
तू मारताथा	तुम मारतेथे
वह मारताथा	वे मारतेथे
स्त्री- मैं मारतीथी	हम मारतीथीं

भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषणसे बनेहुएकाल

कर्मणि वा भावेप्रयोग

स्वार्थसामान्यभूतकाल ॥

पुरुष- एकव-	पुरुष- बहुवचन
मैंने, तूने, उसने } मारा	हमने, तुमने, उन्होंने } मारा

स्वार्थवर्तमानभूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने } माराहै	हमनें, तुमने, उन्होंने } माराहै

स्वार्थभूतभूतकाल ॥

मैंने, तूने, उसने } माराथा	हमने, तुमने, उन्होंने } माराथा

आदरपूर्वकआज्ञार्थ ॥

मारिये..........मारियो..........मारियेगा..........इत्यादि ॥

धातुसाधितनाम ॥

मारना……भाववाचक……मारनेवाला……मारनहारा…कर्तृवाचक

धातुसाधितविशेषण ॥

पु- मारता-मारताहुआ स्त्री-मारती-मारतीहुई	वर्तमानका-वा-	मारा,माराहुआ मारी,मारीहुई -	भूतकालवाचक

धातुसाधितअव्यय ॥

मार……मारकर……मारके……मारकरके……समुच्चयार्थक
मारतेही…………………………… तत्कालबोधक

गिरनाअकर्मकधातु ॥

गिर…………………शुद्धधातु·
गिरता………………वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषण
गिरा………………भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषण……

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल… भविष्यकाल ………… आज्ञार्थवर्तमानकाल - संकेतार्थभूतकाल …… वर्तमानकाल … … … अपूर्णभूतकाल … … …	इसधातुके इन छः कालोंकेरूप मार धातुकेरूपोंके सदृशहोतेहैं ॥

भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेबनेहुएकाल

कर्तरिप्रयोग ॥

स्वार्थसामान्यभूतकाल		स्वार्थवर्तमान भूतकाल	
पु- एकवचन	पु- बहुवचन	पु- एकवचन	पु- बहुवचन
मैं गिरा	हम गिरे	मैं गिरा हूं	हम गिरेहैं
तू गिरा	तुम गिरे	तू गिराहै	तुम गिरेहो
वह गिरा	वे गिरे	वह गिराहै	वे गिरेहैं
स्त्री- मैं गिरी	हम गिरीं	स्त्री- मैं गिरीहूं	हम गिरीहैं

स्वार्थभूतभूतकाल ॥

मैं गिराथा	हम गिरेथे	स्त्री- मैं गिरीथी	हमगिरींथीं
तू गिराथा	तुम गिरेथे		
वह गिराथा	वे गिरेथे	शेषरूपमारधातुकेसदृशहोतेहैं ॥	

खानासकर्मक

मुख्यभाग
- खा……शुद्धधातु
- खाता…वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषण
- खाया…भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषण

धातुसेवनेहुएकाल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल—विध्यर्थवर्तमानकाल

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
प्र- मैं खाऊं	हम खाएं खावें
द्वि- तू खाए खावे खाय	तुम खाओ खावो
तृ- वह खाए खावे खाय	वे खाएं खावें खांय

स्वार्थभविष्यकाल ॥

मैं खाऊंगा	हम खाएंगे खावेंगे
तू खाएगा खावेगा	तुम खाओगे खावोगे
वह खाएगा खावेगा	वे खाएंगे खावेंगे
स्त्री- मैं खाऊंगी	हम खाएंगीं इ०

आज्ञार्थवर्तमान ॥

मैं खाऊं	हम खाएं खावें
तू खा	तुम खाओ खावो
वह खाए खावे	वे खाएं खावें

वर्तमानकालवाचकधातु साधितविशेषणसेवनेहुएकाल

संकेतार्थभूतकालखार्थरीतिभूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं खाता	हम खाते
तू खाता	तुम खाते
वह खाता	वे खाते
स्त्री- मैं खाती	हम खातीं इ०

खार्थवर्तमानकाल ॥

मैं खाताहूं	हम खातेहैं
तू खाता है	तुम खातेहो
वह खाताहै	वे खातेहैं
स्त्री- मैं खातीहूं	हम खातीहैं इत्यादि

खार्थअपूर्णभूतकाल ॥

मैं खाताथा	हम खाते थे
तू खाताथा	तुम खातेथे
वह खाताथा	वे खातेथे
स्त्री- मैं खातीथी	हम खातीथीं इत्यादि

कर्मणि या भावेप्रयोग ॥

भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणसे बनेहुएरूप

खार्थसामान्यभूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	खाया	हमने तुमने उन्होंने	खाया

खार्थवर्तमानभूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	खायाहै	हमने तुमने उन्होंने	खायाहै

स्वार्थभूतभूतकाल ॥

मैंने तूने उसने	खायाथा	हमने तुमने उन्होंने	खायाथा

आदरपूर्वकआज्ञार्थ ॥

खाइये, खाइयो, खाइयेगा,

धातुसाधितनाम ॥

खाना......भाववाचक खानेवाला-खानेहारा-कर्तृवाचक

धातुसाधितविशेषण ॥

खाता—खाताहुआ......वर्तमानकालवाचक
खाया—खायाहुआ......भूतकालवाचक ...

धातुसाधितअव्यय ॥

खा—खाकर—खाके—खाकरके......समुच्चयार्थक
खातेही............................तत्कालवाचक

सोनाअकर्मक ॥

ध्यभाग { सो.........शुद्धधातु
सोता......वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषण
सोया......भूतकालवाचक }

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल...
स्वार्थभविष्यकाल ......
आज्ञार्थवर्तमानकाल -
संकेतार्थभूतकाल ......
स्वार्थवर्तमानकाल ...
स्वार्थअपूर्णभूत ....
} इसधातुकेइनकालोंकेरूपखाधातुके तुल्य ॥

भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणोंसे बनेहुएकाल

कर्तरिप्रयोग ॥

स्वार्थसामान्यभूतकाल ॥

पुरुष एकवचन	पु- बहुवचन
मैं सोया	हम सोये
तू सोया	तुम सोये
वह सोया	वे सोये

स्वार्थवर्तमानभूतकाल ॥

पु - एकवचन	पुरुष बहुवचन
मैं सोयाहूं	हम सोयेहैं
तू सोयाहै	तुम सोये हो
वह सोयाहै	वे सोयेहैं

स्वार्थभूतभूतकाल ॥

मैं सोयाथा	हम सोयेथे
तू सोयाथा	तुम सोयेथे
वह सोयाथा	वे सोयेथे

शेषरूप खा धातुकेसदृश होतेहैं ॥

इसीरीतिसे हिन्दीभाषामें जोधातुहैं उनकेरूपबनालो और छः धातुओंके भूतकाल वाचक विशेषणके रूप और प्रकारसे बनतेहैं वे नीचेलिखेहैं ॥

भूतकालवाचकधातु साधितविशेषण ॥

धातु	एकवचन		बहुवचन		आदरपूर्वकआज्ञार्थ
	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिंग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिंग	
जा	गया	गई	गये-गए	गईं	
कर	किया	की	किये	कीं	कीजिये-कीजियो-
मर	मुआ	मुई	मुए	मुईं	
हो	हुआ	हुई	हुए	हुईं	
दे	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये-दीजियो-
ले	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये-लीजियो-

इनमेंसे होना जाना मरना अकर्मकहैं और करना देना लेना सकर्मक॥ होनाधातुके रूपलिखेहैं- जाना और मरना इनके रूप गिरनाधातुकेरूपवत् होतेहैं- करना देना लेना इनकेरूपसकर्मकधातुके रूपवत् होतेहैं-जाधातु तो संस्कृत धातु या जाना से निकली और गया यह रूप संस्कृत गम धातु = जानासे बनाहै; भूतकाल वाचकविशेषण जाया की योजना केवल संयुक्तक्रिया पदमें होतीहै; जैसा जाया करताहै इत्यादि॥

संस्कृतधातु कृ करना से हिन्दीधातु कर निकलीहै और इसधातुके भूत काल वाचक विशेषण और आदर पूर्वक आज्ञार्थकेरूप करा वा करिये होतेहैं, पर येरूपप्रायः प्रचारमें नहीं आते, इनकेस्थानमें की धातुसे बनेहुए रूप किया कीजिये क्रमसे आतेहैं॥

मरना संस्कृत धातु मृ = मरनासे निकलीहै॥ मुआ यहरूप संस्कृतसे प्राकृत भाषाके द्वारा आयाहै, इसमें म के बदले उ होताहै, मरा यह भूत कालवाचक धातुसाधितविशेषण केवलसंयुक्त क्रियापदमें आताहै जैसा मरा चाहताहै मया यह रूप कभी २ हुआके स्थानमें आताहै और संस्कृत भू धातुसे निकलाहै॥

---

२५ पाठ

कर्मवाच्यक्रियापद॥

प्र० कर्मवाच्यक्रियापदका लक्षण और इसके बनानेकीरीति बतलाइये ?

उ० जो नामतत्त्वतः अर्थमें क्रियाका कर्महै, जिसपर क्रियाके व्यापारका फल होवे यह जब क्रियापदका उद्देश्य+ हो तब क्रियापदका रूप कर्म वाच्य कहलाताहै॥

कर्मवाच्य क्रियापद हिन्दीमें हर जगह नहीं लातेहैं॥ जहां कर्त्ता ज्ञात न होय वा छिपाहो वहां ऐसे क्रियापदकी योजना प्रायःकरतेहैं जैसा, वहमारा गया, देखाजायगा इ०॥

+ वाक्यमें जिसके विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहतेहैं॥

हिन्दीभाषामेंकर्मवाच्यक्रियापद बनानेकी यहरीतिहै, किसकर्मकधातुकेभूत, कालवाचक विशेषणके आगे जा धातुके रूप सबकाल और अर्थमें जोड़ना; इस भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषणका रूपलिंग वचनानुसार बदलताहै, जैसा

मारा जाना

मारा जा……आज्ञार्थद्वितीयपुरुष एकवचन या शुद्धधातु
मारा जाता…वर्तमानकालवाचक धातुसाधित विशेषण
मारा गया……भूतकालवाचकधातुसाधितविशेषण

धातुसेबनेहुएकाल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल–विध्यर्थ वर्तमानकाल ॥

पु- एकवचन	पु - बहुवचन
मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें-जांय
तू मारा जावे - जाय	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे - जाय	वे मारे जावें-जांय
स्त्री-मैं मारी जाऊं	हम मारीजावें इत्यादि ॥

स्वार्थभविष्यकाल ॥

मैं मारा जाऊंगा	हम मारेजावेंगे जाएंगे
तू मारा जावेगा	तुम मारेजाओगे
वह मारा जावेगा	वे मारेजावेंगे-जाएंगे
स्त्री- मैं मारीजाऊंगी	हम मारीजावेंगीं इत्यादि

आज्ञार्थवर्तमानकाल ॥

मैं मारा जाऊं	हम मारेजावें
तू मारा जा	तुम मारेजाओ
वह मारा जावे	वे मारेजावें
स्त्री- मैं मारीजाऊं	हम मारीजावें

वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेबनेहुएरूप

संकेतार्थभूत ॥

मैं, तू, वह	मारा जाता	हम, तुम, वे	मारेजाते

ए-व-	व-व-
स्त्री- मैं मारीजाती	हम मारीजातीं

स्वार्थवर्तमानकाल ॥

मैं माराजाताहूं	हम मारेजातेहैं
तू माराजाताहै	तुम मारेजातेहो
वह माराजाताहै	वे मारेजातेहैं
स्त्री- मैं मारीजातीहुं	हम मारीजातीहैं इ०

स्वार्थअपूर्णभूतकाल ॥

मैं, तू, वह } मारा जाताथा	हम, तुम, वे } मारेजातेथे
स्त्री- मैं मारीजातीथी	हम मारीजातीथीं इ०

भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेबनेहुएरूप

स्वार्थसामान्यभूतकाल ॥

मैं, तू, वह } मारागया	हम, तुम, वे } मारेगये
स्त्री- मैं मारीगई	हम मारीगई इ०

स्वार्थवर्तमानभूतकाल ॥

मैं मारागयाहूं	हम मारेगयेहैं
तू मारागयाहै	तुम मारेगयेहो
वह मारागयाहै	वे मारेगयेहैं
स्त्री- मैं मारीगईहूं	हम मारीगईहैं

स्वार्थभूतकाल ॥

मैं, तू, वह } मारागयाथा	हम, तुम, वे } मारेगयेथे
स्त्री- मैं मारीगईथी	हम मारीगईथीं

आदरपूर्वक आज्ञार्थमें—मारेजाइये, मारेजाइयेगा

धातुसाधितनाम ॥

भाववाचक ... ...माराजाना
कर्तृवाचक ... ...माराजानेवाला-माराजानेहारा
धातुसाधितविशेषण-माराजाता, माराजाताहुआ, मारागया, मारागयाहुआ।

धातुसाधितअव्यय ॥

माराजाकर - माराजाके - माराजाकरके - समुच्चयार्थक
माराजातेही... ... ... तत्कालबोधक

---

२६ पाठ

क्रियापदकेअप्रसिद्धकाल ॥

प्र० आपनेक्रियापदकेरूप बहुधा सबअर्थ और कालमें बनानेकीरीति बतलाई - परसंशयार्थक्रियापदकेरूप बनानेकेनियम नहींकहे सो कहिये ?

उ० अच्छा प्रश्नक्रिया-संकेतार्थकेरूपभी और बनतेहैं, उनकाप्रकारसुनो

संशयार्थवर्तमान वा भविष्यकाल ॥

क्रियापदसंशयार्थ वर्तमान वा भविष्यकालमें बनानाहो,ता वर्तमानकाल वाचक धातुसाधित विशेषणके आगे हो धातुके हेतुहेतुमद्भविष्यकाल वा स्वार्थ भविष्यकालके रूप जोड़देतेहैं; जैसा बोलता होवे-होगा इत्यादि ॥

संशयार्थभूतकाल ॥

भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेहोधातुकेहेतुहेतुमद्भविष्य वा स्वार्थ भविष्यकालके रूपोंकीयोजनाकरनेसे क्रियापदसंशयार्थ भूतकालमेंबनजातेहैं; जैसा बोलाहोवे-होगा ॥

संकेतार्थवर्तमानकाल और भूतकाल ॥

वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणको होधातुकेसंकेतार्थभूतकालके रूपजोड़नेसे संकेतार्थवर्तमानकालहोताहै; इसीतरहसेभूतकालवाचक धातु-साधितविशेषणके आगेहोधातुके संकेतार्थभूतकालके रूपोंकायोग करनेसे संकेतार्थभूतकालबनजाताहै; जैसा बोलता, होता,बोलाहोता इ० ॥ ये रूपप्रचार

में बहुतसेनहींआते इसलिये एकधातुके रूपबनाकरलिखताहूं, इसीप्रकारसे और सबधातुओंकेरूपजानो ॥

संकेतार्थवर्तमानकाल ॥

मैं बोलताहोऊं-होऊंगा	हम बोलतेहोवें-होवेंगे
तू बोलता होवे-होवेगा	तुम बोलतेहोओ-होओगे
वह बोलताहोवे-होवेगा	वे बोलतेहोवें-होवेंगे
स्त्री-मैं बोलतीहोऊं-होऊंगी	हम बोलतीहोवें होवेंगीं

संशयार्थभूतकाल ॥

मैं बोलाहोऊं-होऊंगा	हम बोलेहोवें-होवेंगे
तू बोलाहोवे-होवेगा	तुम बोलेहोओ-होओगे
वह बोलाहोवे-होवेगा	वे बोलेहोवें-होवेंगे
स्त्री-मैं बोलीहोऊंहोऊंगी	हम बोलीहोवें-होवेंगीं

संकेतार्थवर्तमानकाल ॥

मैं, तू, वह } बोलताहोता	हम, तुम, वे } बोलतेहोते
स्त्री- मैं बोलती होती	हम बोलतीहोतीं

संकेतार्थभूत ॥

मैं, तू, वह } बोलाहोता	हम, तुम, वे } बोलेहोते
स्त्री- मैं बोलीहोती	हम बोलीहोतीं इ०

इस प्रकारसे सबधातुओंकेरूपबनाना ॥

यहां पूर्वोक्तनियमसे कर्तरिप्रयोग कर्मणिप्रयोग और भावेप्रयोग अपने २ स्थानमेंहोतेहैं, इनमेंसे जोकाल सहायधातुके हेतुहेतुमद्भविष्यकालके रूपोंसे बनतेहैं वे प्राय:व्यवहारमें नहींआते; संकेतार्थके जोरूपलिखेहैं, वेभी बहुधा अप्रसिद्धहैं, इनकीयोजनाकेविषयमें कुछनियमवाक्य विचारमेंलिखेजायंगे ॥

२१ पाठ

प्रयोजकक्रियापदविचार ॥

प्र० यहांतकतो सिद्धधातुकेरूपबनानेकीरीति आपनेबतलादी वह मैं समझा, अबसाधितक्रियापद किसप्रकारसेबनतेहैं यहमुझेसमझाइये ?

उ० हिन्दीभाषामें साधितक्रियापद बहुतसेआतेहैं और उनकालक्षण पूर्वमेंकियाहै अब इनके बनानेकेनियमलिखताहूं ॥

१ मुख्यनियमयहहै कि मूलधातुकोप्रयोजक करनाहोतोधातुकेअंत्यवर्ण को आमिलातेहैं, प्रयोजक वा सकर्मकधातुको और भी द्विकर्मक वा प्रयोजक करनाहो तो मूलधातुकेअंत्यवर्ण के आगे वा जोड़देतेहैं; जैसा

मूलधातु, सकर्मक वा	प्रयोजक,	द्वितीयप्रयोजक ॥
जल	जलाना	जलवाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
बन	बनाना	बनवाना
बज	बजाना	बजवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
छिप	छिपाना	छिपवाना
मिल	मिलाना	मिलवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
पैर	पैराना	पैरवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
समझ	समझाना	समझवाना
सरक	सरकाना	सरकवाना

२ द्व्यक्षर धातुओंके आद्यअक्षरमें दीर्घस्वर होवे तो उसको ह्रस्वकर आ वा जोड़देतेहैं, एकाक्षर धातुका स्वरदीर्घ होतो उसकोभी ह्रस्वकरके आगे ला वा लवा प्रत्यय जोड़तेदेहैं, ह्रस्वकरनेसे आको अ ई वा ए को इ ऊ वा ओ को उ आदेश क्रमसेहोतेहैं; जैसा ॥

मूल वा सिद्धधातु,	प्रयोजकधातु,	द्वितीयप्रयोजकधातु
जाग	जगाना	जगवाना
भीग	भिगाना	भिगवाना
भूल	भुलाना	भुलवाना
लेट	लिटाना	लिटवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना
धो	धुलाना	धुलवाना

३ कईएक अकर्मकधातुओंके आद्यअक्षरमें ह्रस्वस्वरहोवे तो उसकोदीर्घ करदेतेहैं, पर यह नियम प्रयोजकसे प्रयोजक करनाहो तो बेकामहै, प्रथम नियमसे वा मात्रजोड़ाजाताहै; जैसा

कटना	काटना	कटवाना
पलना	पालना	पलवाना
बंधना	बांधना	बंधवाना
खुलना	खोलना	खुलवाना
मरना	मारना	मरवाना

४ कई एक धातुओंके आद्यस्वरको गुण आदेशकर उनमें, ट, क, ह, होवें तो उनकेस्थानमें, ड, च, ख, आदेशक्रमसे होतेहैं, द्वितीयप्रयोजक तो प्रथमनियमसे होताहै; जैसा

बिकना	बेचना	बिकवाना	बिचवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़ाना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़ाना	फड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़ाना	छुड़वाना
फूटना	फोड़ना	फुड़ाना	फुड़वाना
रहना	रखना	रखाना	रखवाना

५ कई एक धातुओंके प्रयोजक के दो दो रूप होतेहैं; जैसा

सीखना	सिखाना	सिखलाना	सिखवाना
बैठना	बिठाना	बैठाना	बिठवाना बैठलाना बैठालना बिठालना

देखना दिखाना दिखलाना दिखवाना
रखना रखाना रखवाना इत्यादि

नामधातु ॥

कई नाम वा विशेषणके अंत्यवर्ण का लोपकर इया प्रत्यय जोड़देतेहैं, और आद्यस्वर ह्रस्वहोताहै; जैसा पानी-पनियाना-आधा-अधियाना-ऐसीधातुओंको नामधातुकहतेहैं ॥

---

२८ पाठ

संयुक्तक्रियापदविचार ॥

प्र० संयुक्त क्रियापदकिसेकहतेहैं ?

उ० संयुक्तक्रियापद उसक्रियापदकोकहतेहैं जो अर्थविशेषमेंप्रधानधातु और सहायधातुसेबनताहै; उसके पांचप्रकारहैं १ गौरवार्थक २ शक्यर्थबोधक ३ समाप्तिवाचक ४ पौन:पुन्यबोधक ५ आशंसार्थक इत्यादि ?

१ गौरवार्थकक्रियापद उसेकहतेहैं जो शुद्धक्रियापदसे अर्थकीविशेषता बताताहै और वहप्रधानधातुकेआगे डाल दे जा इत्यादिधातुओंके रूपलगानेसे बनताहै; जैसा मारडालताहै, रखदेताहै, खाजाताहूं, यहांयहस्पष्टहै कि मारताहै इससे मारडालताहै इसमें अर्थगौरवहै; इनक्रियापदोंका यहधर्म कि अप्रधानधातुकाअर्थ तत्वत:कुछनहीं परन्तु उसकेयोगसे प्रधानधातुकाअर्थ दृढ़होताहै; छोड़देना, फेंकदेना, गिरादेना, काटडालना, तोड़डालना, हो जाना, मरजाना ॥

२ शक्यर्थबोधक वा संभावनार्थक्रियापद उसेकहतेहैं कि जिसक्रिया करनेमें कर्ताकीशक्तिकाबोधहोजावे और यह प्रधानधातुको सक धातु रूपलगानेसे बनजाताहै; जैसा कामकरसकताहै अर्थात् उसको कामकरनेका सामर्थ्यहै होसकना-लिखसकनादेखसकना इत्यादि ॥

३ समाप्तिवाचक उसेकहतेहैं कि जिससे क्रियाका समाप्त होना, समझा जाय, और यह क्रियापद धातुको चुक धातुके रूप लगानेसे बनजाताहै; जैसे वहकरचुका, कहचुकना, मारचुकना, लेचुकना, लाचुकना इत्यादि ॥

४ पौन: पुन्यबोधक क्रियापद वहहै कि जिसकाकरना वारंवार होजावे, और यहक्रियापद प्रधानधातुके पुल्लिङ्ग एकवचन भूतकालवाचक विशेषणको करधातुकेरूप जोड़नेसे पौन:पुन्यबोधक क्रियापदहो जाताहै; जैसा माराकरता है, माराकरतेहैं, आयाकरना, बोलाकरना, पियाकरना इत्यादि ॥

५ आशंसार्थक क्रियापद वहहै कि जिससेकर्ताकी इच्छासमझीजावे, यह क्रियापद मुख्यधातुके पुल्लिङ्गएकवचन भूतकालवाचक विशेषणके आगे चाह धातुकेरूप लगानेसे बनजाताहै; जैसा बोलाचाहताहै, कियाचाहताहै, पढ़ा चाहना, देखाचाहना; यहक्रियापद कभी २ आसन्नभावीक्रिया बतलाताहै जैसा मराचाहताहै, गिराचाहताहै इत्यादि ॥

प्र० संयुक्तक्रियापदके मुख्यभेद और उनकाअर्थमैंसमझा, उसके और कोई भेदहोंतो कहिये ?

उ० कभी २ नाम वा विशेषणके आगे धातुजोड़नेसे संयुक्त क्रियापदवत् रूप बनजाताहै; जैसा मेरे अपराधको क्षमाकर ॥

जिसक्रियाकाकरना विनाविच्छेद कुछकालतक सदाहोतारहे वहसातत्य वाचकक्रियाकहलातीहै, यहक्रियापदप्रधानधातुके वर्तमानकालवाचक विशेषणके आगे जा रह इनधातुओंके रूपलगानेसेबनताहै, यहां यह ध्यानमेंरखना चाहिये कि वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणका रूप कर्ताकेलिंगवचनके अनुसार बदलताहै; जैसा वहकरतारहताहै, वेकरतेरहतेहैं, मारतीजातीहै मारतीजातीहैं, लिखताजाना, बोलतारहना, इत्यादि ॥

स्थितिवाचक क्रियापदवहहै जिससेकर्ता किसस्थितिमें अपना कामकरताहै इसकाबोधहोवे, यहक्रियापद वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषण पुल्लिङ्ग एकवचन सामान्यरूपको दूसरेधातुकेरूप जोड़नेसेबनताहै; जैसा गानेआताहै, रोतेदौड़ना, हंसतेचलना, इत्यादि ॥

धातुसाधितभाववाचक नामके सामान्यरूपसे दे और पा धातुकेरूपजोड़ने से अनुमति और लग धातुके रूपोंकीयोजना करनेसे प्रारंभ समझा जाताहै; जैसा अनुमति देना-वहमुझेजानेदेताहै, उसको कामकरनेदो ॥

अनुमतिपाना—वहलिखनेपावे, जानेपाताहै ॥

प्रारंभ ... ...वहकामकरनेलगा, पढ़नेलगी ॥

पर ऐसीजगहमें करने का व्यारणसे पदच्छेद करनेमें ऐसा कियाजावे तोभी ठीक है ॥ कमीरनाम और विशेषणसे क्रियापदकी योजनाकरनेसे नामसाधितक्रियापद होताहै जैसा गोताखाना-गोतामारना-जमाकरना वा होना-खड़ाकरना इत्यादि ॥ गड्डीकोखड़ीकर ऐसेस्थानमें खड़ीकर इतनाक्रियापद जानो- कईक्रियापदपुनरुक्तिवाचकहोतेहैं अर्थात् दोधातु बहुधा सदृशार्थक एकक्रियापदमेंआतेहैं, उनकी योजना वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसे जो २ कालबनताहै उसकालमें होतीहै, और करके इत्यादि प्रत्ययलगाके भूतकालवाचक धातुसाधित अव्ययबनतेहैं, यहांयहध्यानमें रखना चाहिये कि पूर्वोक्त प्रत्यय और सहायधातुकेरूप उत्तरधातुके आगे जोड़े जातेहैं; जैसा बोलताचालताहै, बोलचालकर समझाबुझाकर इत्यादि ॥

---

२९ पाठ

अव्ययविचार ॥

प्र० अव्ययकिसेकहतेहैं ?

उ० जिसशब्दको विभक्त्यादिकार्य नहींहोताहै, उसेअविभक्तिक अथवा अव्ययकहतेहैं; इसकारूप सदावैसाहीबनारहताहै अर्थात् कुछभेदनहींहोता और इनका वाक्यरचनामें बहुतप्रयोजनपड़ताहै; जैसा तब, फिर, यहां इ० ॥

प्र० अव्ययोंके भेद कौन २ हैं सो कहिये ?

उ० अव्ययोंके चारभेदहैं, क्रियाविशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, उद्गारवाची, अथवा विस्मयादिबोधक ॥

क्रियाविशेषणअव्यय ॥

प्र० क्रियाविशेषणअव्ययकिसेकहतेहैं और उसके के प्रकारहैं ?

उ० जिसशब्दसेक्रियाके गुण वा प्रकारकाबोधहोवे, उसेक्रियाविशेषण कहतेहैं; जैसा धीरेचलताहै, बहुतबकताहै इत्यादि ॥

सामान्यतः जितनेशब्द विशेषणहैं वा विशेषणसेहोवें वे सबक्रियाविशेषण होतेहैं; हिन्दीभाषामें जो क्रियाविशेषण बारम्बारआतेहैं वे पांचसर्वनामोंसे

बनहें, उनका एककोष्ठक आगेदियाहै यह वह कौन जौन तौन इनपांचसर्व-नामोंसे स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण अव्यय, बनतेहैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	०	कब	जब	तब	कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	ज्यों	त्यों	प्रकारार्थ वा गुणवाचक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	जैसा	तैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिणामवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

प्रथमवर्गके क्रियाविशेषणोंके अंत्य अ को ही आदेश करनेसे निश्चय वाचक अथवा इकृता बोधक क्रियाविशेषण बनजातेहैं जैसा अभी कभी तभी कैधी इत्यादि ॥

इसी प्रकारसे दूसरेवर्गके क्रियाविशेषणोंके अंत्य आं को ईं आदेश करते हैं और चौथेवर्गके क्रियाविशेषणोंके अंत्य वर्णके आगे ही मिलादेतेहैं; जैसा यहीं-कहीं-वोंही योंहीं इत्यादि ॥ इन अव्ययोंकेआगे लो तक तलक इत्यादि प्र-त्ययोंका योग करनेसे मर्यादाबोधितहोतीहै; जैसा अबलों-अबतक- अबतलक जबतक- जबतलक- इत्यादि ॥ इनमेंसे कभी २ द्विरुक्ति और कभी २ एकवादो का योगकरनेसे क्रियाविशेषण बनजातेहैं जैसा कभी २ जहांतहां, जहांकहीं, जबकब जबकभी इत्यादि ॥

कईएक क्रियाविशेषणोंकेसाथ निषेधार्थक न की योजनाकरनेसे अनिश्चितता वा सर्व व्यापकताके अर्थकाबोधहोताहै; जैसा बरसमें मेरेहाथमें कभी न कभी आवेगा, कहींनकहीं, जब तब इत्यादि ॥

क्रियाविशेषण अव्ययोंके और उदाहरण ॥

प्रकारार्थक—अकस्मात्-अचानक-अर्थात्-केवल-परस्पर-ठीक-तत्वतः-विशे-

यंत: शीघ्र-तृथा-निपट यथार्थ-सच-अवश्य-नि:संदेह-साधारणरूपसे-नि:संशय-इत्यादि ॥

स्थलवाचक—आसपास-आगेपीछे-निकट-नजदीक-पार-सर्वत्र-परे इ० ॥

कालवाचक—आज-कल-परसों-नरसों-हररोज़-प्रतिदिन-सदा-बारंबार-तुरंत-एकदा फिर-इत्यादि ॥

प्र० कौन २ शब्द वा शब्द समुच्चयअर्थमेंक्रियाविशेषणहोतेहैं और किस रूपसेवाक्यमेंआतेहैं ॥

उ० कई गुणविशेषण और सर्वनामका प्रथमांतरूप वा सामान्यरूपक्रिया विशेषणहोताहै जैसा वहसुन्दरलिखताहै, अच्छाबोलताहै, सीधेचलो, धीरे बोलो, वह अपनाकाम कैसाकरताहै इत्यादि ॥

धातुको कर कारके इत्यादिप्रत्यय जोड़नेसे जो रूपबनताहै उसको कभी २ क्रियाविशेषणवत् योजनाकरतेहैं; जैसा उसनेहंसकरकहा, यहांहंसकर क्रिया विशेषणहै ॥ पंचम्यंत नामकाअर्थ कईजगहक्रियाविशेषणवत् होताहै; जैसा जो मनुष्य नीतिसे चलताहै वहसुखपावेगा, दिलसेकामकरोगे तो प्रयत्नसफलहोगा, किसतरह या किसतरहसे कामकरोगे इत्यादि ॥

क्रियाविशेषणकेसाथ कभी२ विभक्ति प्रत्ययोंका योगकरदेतेहैं; जैसा यहांका रहनेवाला, आजकाकाम, यहांसेजाओ, कहांकोजातेहो इत्यादि ॥ ऐसेस्थल में षष्ठी प्रत्ययांतशब्द विशेषणवत् और शेषशब्दक्रियाविशेषणवत्मानना ॥

उभयान्वयीअव्ययविचार + ॥

प्र० उभयान्वयीअव्ययका क्या लक्षणहै और उसके कै प्रकारहैं ?

उ० जिसअव्ययकासम्बन्ध दोशब्दोंके अथवा दो वाक्योंके अन्वयकी तरफ़होताहै [illegible] जैसा और, पर, इत्यादि ॥ राम और कृष्ण आये, [illegible] कृष्ण इनकाअन्वय आगमन-क्रियामेंहै अर्थात् राम आया और कृष्ण भी आया ॥

जो उभयान्वयी अव्यय वारम्वार बोलनेलिखनेमेंआतेहैं, उनका कुछ परिगणन ॥

समुच्चयवाचक……और - भी

कारणवाचक……क्योंकि

+ उभयान्वयी विचारको शब्दयोगी अव्ययविचारके पीछे पढ़ो ॥

पक्षान्तरबोधक ...पर-परन्तु-किंतु-वा-या-अथवा-नहींतो-चाहें-

संकेतार्थक.........यदि-जो-तो-तथापि-तोभी-

स्वरूपबोधक ......कि

शब्दयोगीअव्यय ॥

प्र० शब्दयोगी अव्ययकिसेकहतेहैं और उनकीयोजना किसरीतिसे होतीहै ?

उ० जिसअव्ययमे स्थल और कालकाबोधहोताहै और जिसकीयोजना नाम और सर्वनामकेसाथहोनेसे उनका पष्ठ्यंतसामान्यरूप प्रायःहोताहै, उसे शब्दयोगीअव्ययकहतेहैं ॥ हिन्दीभाषामें शब्दयोगीअव्ययतो केवलसप्तमीविभक्त्यन्तनामहैं परन्तुविभक्तिप्रत्यय लुप्तहैं, इसलिये जबइनअव्ययोंकी योजनाकीजावे तबपूर्वनामको और सर्वनाम षष्ठीविभक्तिकाके प्रत्ययलगातेहैं और उसके आगे अव्ययोंको बोलते; पर बिन वा बिना यहशब्दयोगीअव्यय बहुधानामके पूर्वआताहै; जैसा मर्दकेआगे, लड़केकेपास, उसके समक्ष, बिनास्याहीके कामनहीं चलताहै ॥

शब्दयोगीअव्ययोंकी गणना ॥

आगे-अंदर-भीतर-ऊपर-बाहर-बराबर-बदल-बदले-समीप-बीच-पास-पीछे-तले-सामने-गिर्द-नज़दीक-नीचे-पार-बाद-बिन-बिना-साथ-लिये-मारे-समक्ष ॥

इनमेंसेकोई २ शब्दयोगी अव्यय सर्वनामोंके साथआवेंतो उनका विभक्ति सामान्यरूप होताहै, षष्ठीका प्रत्ययनहीं जोड़तेहैं; जैसा मुझपास, जिसलिये, उसबिना, किसलिये इत्यादि ॥

सहित-समेत-सुधा- इत्यादिशब्दयोगी अव्यय नामकेसाथआवें तो नामसे षष्ठी विभक्ति नहींहोती; जैसा बालगोपालसमेत कृष्णजीआये, गोपीसहित इ० ॥

शब्दयोगी अव्यय नाम वासर्वनामकेसाथ न आवें तो वे क्रियाविशेषण अव्ययहोतेहैं ॥

केवल प्रयोगीविस्मयादिबोधक अव्यय॥

प्र० केवल प्रयोगी अव्यय क्या बतलाताहै ?

उ० जिनअव्ययोंसे कहनेवालेका दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि मनके भावसमझेजातेहैं, उन्हे केवलप्रयोगी अव्यय कहतेहैं; जैसा॥

दुःख और धिक्कारबोधक—बापरे, हायहाय, अरेरे, ऊः, हाहा, धिक्, दूरदूर, चुप, छः

हर्ष और धन्यताबोधक—जयजय, शाबाश, वाहवा, धन्यधन्य, वाजीवा,

सन्मुखीकरणबोधक—अय, ओ, अरे, हे, अबे॥

साधितशब्दविचार॥

---

३० पाठ॥

धातुसाधितशब्द॥

पूर्वमेंमूलप्रकृतिको और साधित शब्दोंको विवचित रूपबनानेकेलिये जो विभक्ति प्रत्ययादि कार्यविशेषकरना अवश्यहै, उसकावर्णन किया अबमूलसिद्ध शब्दोंसे जो साधितशब्दबनतेहैं उनकाव्युत्पत्ति प्रकारलिखताहूं॥

प्र० साधितशब्द किसेकहतेहैं ?

उ० जोशब्दमूलशब्दसे प्रत्ययादि लगाके बनतेहैं, उनकोसाधित शब्द कहतेहैं॥

प्र० साधितशब्दोंके कितनेभेदहैं ?

उ० दो; एक,धातुसेबनेहुएशब्द इनकोसंस्कृतमें कृदंतकहतेहैं; दूसरा, धातुसेअन्य जो शब्दउनसे बनेहुएशब्द इनकोसंस्कृतमें तद्धित कहतेहैं॥

प्र० धातुसाधितशब्दोंके कैप्रकारहैं, और वे शब्द किस रीतिसे बनतेहैं यहमुझे समझाइये ?

उ० धातुसाधितशब्दतीनप्रकारकेहैं नाम, विशेषण, और अव्यय; येधातु केआगे प्रत्ययोंकीयोजना करनेसेबनजातेहैं॥

धातुसाधितनाम ॥

प्र० धातुकेआगे कौन २ प्रत्ययजोड़नेसे धातुसाधित नामबनतेहैं ?

उ० ना—धातुकेआगे यह प्रत्यय लगानेसे और कभी २ केवलधातुको शुद्धरूपभाववाचक नामहोताहै; जैसा सोना, करना, बोलना, चाह, बोल इ०॥

वाला, हारा—भाववाचकनामके अंत्यना को ने में बदलकर आगेइनप्रत्ययोंको जोड़नेसे कर्तृवाचक होताहै; जैसा बोलनेवाला, बोलनेहारा, करनेवाला, करनेहारा इत्यादि ॥

अक, वैया,—कईधातुओंको येप्रत्यय मिलाकर कर्तृवाचक बनातेहैं; जैसा पाल, पालक; पूज, पूजक; जीत, जितवैया; जल, जलवैया इत्यादि ॥

कईधातुओंमेंभाववाचक आगेलिखेहुए प्रत्यय बहुलकरके लगानेसेहोतेहैं ॥

धातु	प्रत्यय	साधितशब्द
कह	आ	कहा
बो	आई	बोआई
मिल	आप	मिलाप
जल	न	जलन
पी	आस	प्यास
भुला	वा	भुलावा
सजा	आवट	सजावट
घबरा	आहट,	घबराहट

साधनार्थकनाम ॥

कतर - नी - कतरनी ; झाड़ - ऊ - झाड़ू; बेल - अन - बेलन इ० ॥

धातुसाधितविशेषण ॥

प्र० धातुसाधितविशेषण किसरीतिसे बनताहै ?

उ० वर्तमान और भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणोंका वर्णनक्रिया पद प्रकरणमेंकियाहै; उन धातुसाधितविशेषणोंकी वाक्यमेंयोजना करनीहोवे, तो उनके आगेहोधातुकेभूतकालवाचक विशेषणकेरूपोंकायोगलिंगवचनानुसार करतेहैं ॥

केवल प्रयोगीविस्मयादिबोधक अव्यय॥

प्र० केवल प्रयोगी अव्यय क्या बतलाताहै ?

उ० जिनअव्ययोंसे कहनेवालेका दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि मनके भावसमझेजातेहैं, उन्हे केवलप्रयोगी अव्यय कहतेहैं; जैसा ॥

दुःख और धिक्कारबोधक—बापरे, हायहाय, अरेरे, ऊः, हाहा, धिक्, दूरदूर, चुप, छः

हर्ष और धन्यताबोधक—जयजय, शाबाश, वाहवा, धन्यधन्य, वाजीवा,

सन्मुखीकरणबोधक—अय, ओ, अरे, हे, अवे ॥

साधितशब्दविचार ॥

---

३० पाठ ॥

धातुसाधितशब्द ॥

पूर्वमेंमूलप्रकृतिको और साधित शब्दोंको विवक्षित रूपबनानेकेलिये जो विभक्ति प्रत्ययादि कार्यविशेषकरना अवश्यहै, उसकावर्णन किया अवमूलसिद्ध शब्दोंसे जो साधितशब्दबनतेहैं उनकाव्युत्पत्ति प्रकारलिखताहूं ॥

प्र० साधितशब्द किसेकहतेहैं ?

उ० जोशब्दमूलशब्दसे प्रत्ययादि लगाके बनतेहैं, उनकोसाधित शब्द कहतेहैं ॥

प्र० साधितशब्दोंके कितनेभेदहैं ?

उ० दो; एक,धातुसेबनेहुएशब्द इनकोसंस्कृतमें कृदंतकहतेहैं; दूसरा, धातुसेअन्य जो शब्दउनसे बनेहुएशब्द इनकोसंस्कृतमें तद्धित कहतेहैं ॥

प्र० धातुसाधितशब्दोंके कैप्रकारहैं, और वेशब्द किस रीतिसे बनतेहैं यहमुझे समझाइये ?

उ० धातुसाधितशब्दतीनप्रकारकेहैं नाम, विशेषण, और अव्यय; येधातु केआगे प्रत्ययोंकीयोजना करनेसेबनजातेहैं ॥

धातुसाधितनाम ॥

प्र० धातुकेआगे कौन २ प्रत्ययजोड़नेसे धातुसाधित नामबनतेहैं ?

उ० ना—धातुकेआगे यह प्रत्यय लगानेसे और कभी २ केवलधातुका शुद्धरूपभाववाचक नामहोताहै; जैसा सोना, करना, बोलना, चाह, बोल इ० ॥

वाला, हारा—भाववाचकनामके अंत्य ना को ने में बदलकर आगेइनप्रत्ययोंको जोड़नेसे कर्तृवाचक होताहै; जैसा बोलनेवाला, बोलनेहारा, करनेवाला, करनेहारा इत्यादि ॥

अक, वैया,—कईधातुओंको येप्रत्यय मिलाकर कर्तृवाचक बनातेहैं; जैसा पाल, पालक; पूज, पूजक; जीत, जितवैया; जल, जलवैया इत्यादि ॥

कईधातुओंसेभाववाचक आगेलिखेहुए प्रत्यय बहुलकरके लगानेसेहोतेहैं ॥

धातु	प्रत्यय	साधितशब्द
कह	आ	कहा
बो	आई	बोआई
मिल	आप	मिलाप
जल	न	जलन
पी	आस	प्यास
भुला	वा	भुलावा
सजा	आवट	सजावट
घबरा	आहट,	घबराहट

साधनार्थकनाम ॥

कतर - नी - कतरनी ; झाड़ - ऊ - झाड़ू; बेल - अन - बेलन इ० ॥

धातुसाधितविशेषण ॥

प्र० धातुसाधितविशेषण किसरीतिसे बनताहै ?

उ० वर्तमान और भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणोंका वर्णनक्रिया पद प्रकरणमेंकियाहै; उन धातुसाधितविशेषणोंकी वाक्यमेंयोजना करनाहोवे, तो उनके आगेहोधातुकेभूतकालवाचक विशेषणकेरूपोंकायोग्यलिंगवचनानुसार करतेहैं ॥

पुल्लिङ्ग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	वहुवचन	एकवचन	वहुवचन
बोलताहुआ	बोलतेहुए	बोलतीहुई	बोलतीहुई
बोलाहुआ	बोलेहुए	बोलीहुई	बोलीहुई

सकर्मकधातुसे बनाहुआ वर्तमानकालवाचक विशेषण कर्तृवाचकहोताहै; और भूतकालवाचकविशेषण कर्मवाचकहोताहै, जैसा करताहुआमनुष्य, कियाहुआ काम इ० ॥

अकर्मकधातुसे बनेहुए, वर्तमानकालवाचक और भूतकालवाचक विशेषण सदा कर्तृवाचक होतेहैं: जैसा जाताहुआआदमी, गयाहुआआदमी,इत्यादि ॥

धातुसाधितअव्यय ॥

प्र० धातुसाधित अव्ययकिस रीतिसे बनतेहैं ?

उ० शुद्धधातु वा उससे कर के करके करकर इत्यादि प्रत्यय जोड़नेसे भूतकालवाचक अव्ययहोताहै जैसा बोल बोलकर, बोलकरके, बोलके, इ० ॥

---

३१ पाठ

धात्वन्यशब्दसाधित—साधितनाम ॥

प्र० धातुओंसे अन्य जोशब्द उनसे और शब्द कैसेबनतेहैं यह बतलाइये ?

उ० वान-मान-ई-नामको ये प्रत्ययमिलाकर स्वामिवाचकशब्द होताहै अर्थात् नामबोधितवस्तु उसप्राणीकेपासहै; ई प्रत्यय अंत्यस्वरको आदेश होताहै; जैसा धनवान, बुद्धिमान, पापी इत्यादि ॥

वाला—नामकोयहप्रत्यय जोड़नेसे कर्तृवाचक वा स्वामिवाचकहोताहै, आकारांत पुल्लिङ्गनामके अंत्यआको ए आदेशकर प्रत्ययजोड़ाजाताहै; जैसा घोड़ेवाला, बैलवाला, धनवालाइ० ॥

पूर्वोक्त अर्थमें कईएकनामोंसे और भी प्रत्यय वहुलकरके होतेहैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम	नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम
राह	वर	राहवर	नाल	बन्द	नालबन्द

मशाल	ची	मशालची	ज़मीन	दार	ज़मींदार
लड़का	पन	लड़कपन			
नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द	नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द
लोहा	आर	लोहार	उमेद	वार	उमेदवार
पानी	हारी	पनहारी			
घड़ि	याल	घड़ियाल	इसरीतिसे और भीजानो ॥		

भाववाचक ॥

विशेषणोंसे भाववाचक, करनाहोतो येप्रत्ययलगानेसेहोतेहैं ॥

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक	विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक
गरम	ई	गरमी	कम	ती	कमती
बूढा	पा	बुढापा	भला	पन	भलापन
मीठा	स	मिठास	बुरा	ई	बुराई
कड़वा	हट	कड़वाहट	लघु	त्व, ता,	लघुत्व, लघुता
					संस्कृतमें त्व ता होतेहैं॥
चतुर	आई	चतुराई	इत्यादि और भी जानो ॥		

कहीं २ य प्रत्ययहोताहै वहांआद्यस्वरको वृद्धि और अंत्यस्वरका लोप करके जो अंत्यहल् रहा उसे यमें जोड़तेहैं, जैसा उदार य औदार्य, कृपण य कार्पण्य-सुन्दर-य-सौंदर्य-इत्यादि ॥

न्यूनवाचक ॥

आकारांत पुल्लिङ्गशब्दकेअंतअकोई आदेशकरनेसे न्यूनवाचकहोताहै; जैसा रस्सा, रस्सी; लोटा, लोटी; डोला डोली; छुरा, छुरी इ० ॥

शब्द	प्रत्यय	साधितशब्द
बेटी	इया	बिटिया
बाग़	ईचा	बग़ीचा
तोप	अक	तुपक

साधितविशेषण ॥

नामसेविशेषण बनानेहावेंता आगेलिखेहुए प्रत्ययजोड़नेसे होजातेहैं; जैसा,

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	सा-वि
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-अक-इक-मोहक-धर्मिक		
बल	ई	बली	दुःख	इत	दुःखित
बल	इष्ठ	बलिष्ठ	रंग	ईला	रंगीला
घर	ऊ	घरू	पंच	गुना	पचगुना
सागर	वाला	सागरवाला	नाम	वर	नामवर
धन	वंत	धनवंत	दया	वान	दयावान
			कृपा-दया-लु-ल-		कृपालु, दयाल
					कृपाल दयालु

---

३२ पाठ

उपसर्गविचार ॥

प्र० जिसभांतिसे धातु वा अन्यशब्दके आगे प्रत्ययोंकीयोजनाहोनें साधितशब्दबनतेहैं वैसेशब्दकेपूर्व अक्षरवा अक्षरसमुच्चय जोड़नेसे साधितशब्द होतेहैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्नक्रिया-धातु वा अन्यशब्दकेपूर्वअर्थरहित एकवर्ण वा वर्णसमुच्चय जोड़ाजाताहै, अन्यशब्दके योगसे वे सार्थक होतेहैं, इनकोसंस्कृतमें उपसर्गकहतेहैं, उपसर्गके योगसेभिन्नर अर्थहोतेहैं ॥

अ——निषेधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अक्षत इ० ॥ शब्दकेआदिमें स्वर होवे तो अन्होताहै; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ट इ० ॥

अप——वियोगार्थक, अपराध-अपकीर्ति इ० ॥

अति——बहुत, दूर...अतिदुष्ट, अतिकृपण इ० ॥

अधि——अधिक, उपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु——पीछे, समान; अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ० ॥

अन्त——भीतर; अंतर्गत इ० ॥

अभि——तरफ़; अभिप्राय, अभिलाष इ० ॥
अव——नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार अवज्ञा इ० ॥
आ——प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि; आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥
उत्——ऊपर; उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥
उप——निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥
कु——ख़राब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥
दुस्-दुर्——कठिन, ख़राब; दुराचार,दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥
नि——नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥
निर्——बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥
परा——पीछे; पराजय, पराभव इ० ॥
परि——आसपास; परिपूर्ण, परिभ्रमण इ० ॥
प्रति——विरुद्ध, उलटा; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥
स-सह——सकाम, सलज्ज इ० ॥
वि——वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥
सु-सं——अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, संगति इ० ॥

---

३२ पाठ

सामासिकशब्दविचार ॥

प्र० सामासिकशब्दकिसेकहतेहैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एकशब्दबनताहै, उसेसामासिकशब्दकहतेहैं; जैसा देवाज्ञा, माबाप, गिल्लीदंडा, सेलापगड़ी, इत्यादि ॥ यहांगिल्ली और दंडा ये दोशब्द मिलकर गिल्लीदंडा सेला पगड़ी इत्यादि यहांगिल्ली और दंडाये दो शब्द मिलकर गिल्लीदंडा यहशब्दहुआहै, इसीतरह से औरभीजानो ॥

इनशब्दोंका आपसमें जो सम्बन्धहै, उसे समासकहतेहैं; जैसा गिल्लीदंडा यह द्वंद्वसमासहै; समाससे जो बनाहुआशब्दहै उसेसामासिकशब्दकहतेहैं, और

साधितविशेषण ॥

नामसेविशेषण वनानेहावेंतो आगेलिखेहुए प्रत्ययजोड़नेसे होजातेहैं; जैसा;

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	सा-वि
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-	अक-इक-	मोहक-धर्मिक
बल	ई	बली	दुःख	इत	दुःखित
बल	इष्ठ	बलिष्ठ	रंग	ईला	रंगीला
घर	ऊ	घरू	पंच	गुना	पचगुना
सागर	वाला	सागरवाला	नाम	वर	नामवर
धन	वंत	धनवंत	दया	वान	दयावान
			कृपा-दया-	लु-ल-	कृपालु, दयालु
					कृपाल दयालु

---

२२ पाठ

उपसर्गविचार ॥

प्र० जिसभांतिसे धातु वा अन्यशब्दके आगे प्रत्ययोंकीयोजनाहोनेसे साधितशब्दबनतेहैं वैसेशब्दकेपूर्व अक्षरवा अक्षरसमुच्चय जोड़नेसे साधितशब्द होतेहैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्नक्रिया-धातु वा अन्यशब्दकेपूर्वअर्थरहित एकवर्ण वा वर्ण समुच्चय जोड़ाजाताहै, अन्यशब्दके योगसे वे सार्थक होतेहैं, इनकोसंस्कृतमें उपसर्गकहतेहैं, उपसर्गके योगसेभिन्न२ अर्थहोतेहैं ॥

अ——निषेधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अच्छत इ० ॥ शब्दकेआदिमें स्वर होवे तो अन्होताहै; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ट इ० ॥

अप——वियोगार्थक, अपराध-अपकीर्ति इ० ॥

अति——बहुत, दूर...अतिदुष्ट, अतिक्रमण इ० ॥

अधि——अधिक, उपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु——पीछे, समान; अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ० ॥

अन्त——भीतर; अंतर्गत इ० ॥

अभि——तरफ़; अभिप्राय, अभिलाष इ० ॥

अव——नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार अवज्ञा इ० ॥

आ——प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि; आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥

उत्——ऊपर; उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥

उप——निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥

कु——ख़राब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥

दुस्-दुर्——कठिन, ख़राब; दुराचार, दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥

नि——नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥

निर्——बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥

परा——पीछे; पराजय, पराभव इ० ॥

परि——आसपास; परिपूर्ण, परिभ्रमण इ० ॥

प्रति——विरुद्ध, उलटा; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥

स-सह——सकाम, सलज्ज इ० ॥

वि——वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥

सु-सं——अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, संगति इ० ॥

---

३३ पाठ

सामासिकशब्दविचार ॥

प्र० सामासिकशब्दकिसेकहतेहैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एकशब्दबनताहै, उसेसामासिकशब्दकहतेहैं; जैसा देवाज्ञा, माबाप, गिल्लीदंडा, सेलापगड़ी, इत्यादि ॥ यहांगिल्ली और दंडा ये दोशब्द मिलकर गिल्लीदंडा सेला पगड़ी इत्यादि यहांगिल्ली और दंडाये दो शब्द मिलकर गिल्लीदंडा यहशब्दहुआहै, इसीतरह से औरभीजानो ॥

इनशब्दोंका आपसमें जो सम्बन्धहै, उसे समासकहतेहैं; जैसा गिल्लीदंडा यह द्वंद्वसमासहै; समाससे जो बनाहुआशब्दहै उसेसामासिकशब्दकहतेहैं, और

साधितविशेषण ॥

नामसेविशेषण बनानेहोवेतो आगेलिखेहुए प्रत्ययजोड़नेसे होजातेहैं; जैसा

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	सा-वि
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-	अक-इक-	मोहक-धर्मिक
बल	ई	बली	दुःख	इत	दुःखित
बल	इष्ट	बलिष्ट	रंग	ईला	रंगीला
घर	ऊ	घरू	पंच	गुना	पंचगुना
सागर	वाला	सागरवाला	नाम	वर	नामवर
धन	वंत	धनवंत	दया	वान	दयावान
			कृपा-दया-	लु-ल-	कृपालु, दयालु
					कृपाल दयालु

---

२२ पाठ

उपसर्गविचार ॥

प्र० जिसभांतिसे धातु वा अन्यशब्दके आगे प्रत्ययोंकीयोजनाहोनेसे साधितशब्दबनतेहैं वैसेशब्दकेपूर्व अक्षरवा अक्षरसमुच्चय जोड़नेसे साधितशब्द होतेहैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्नकिया-धातु वा अन्यशब्दकेपूर्व अर्थरहित एकवर्ण वा वर्णसमुच्चय जोड़ाजाताहै, अन्यशब्दके योगसे वे सार्थक होतेहैं, इनकोसंस्कृतमें उपसर्गकहतेहैं, उपसर्गके योगसेभिन्न२ अर्थहोतेहैं ॥

अ——निषेधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अच्युत इ० ॥ शब्दकेआदिमें स्वर होवे तो अन्होताहै; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ट इ० ॥

अप——वियोगार्थक, अपराध-अपकीर्ति इ० ॥

अति——बहुत, दूर…अतिदुष्ट, अतिकृपण इ० ॥

अधि——अधिक, उपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु——पीछे, समान; अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ०

अन्त——भीतर; अंतर्गत इ० ॥

अभि——तरफ़; अभिप्राय, अभिलाप इ० ॥

अव——नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार अवज्ञा इ० ॥

आ——प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि; आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥

उत्——ऊपर; उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥

उप——निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥

कु——ख़राब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥

दुस्-दुर्——कठिन, ख़राब; दुराचार, दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥

नि——नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥

निर्——बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥

परा——पीछे; पराजय, पराभव इ० ॥

परि——आसपास; परिपूर्ण, परिभ्रमण इ० ॥

प्रति——विरुद्ध, उलटा; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥

स-सह——सग्राम, सलज्ज इ० ॥

वि——वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥

सु-सं——अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, संगति इ० ॥

---

३२ पाठ

सामासिकशब्दविचार ॥

प्र० सामासिकशब्दकिसेकहतेहैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एकशब्दबनताहै, उसेसामासिकशब्दकहतेहैं; जैसा देवाज्ञा, माबाप, गिल्लीदंडा, सेलापगड़ी, इत्यादि ॥ यहांगिल्ली और दंडा ये दोशब्द मिलकर गिल्लीदंडा सेला पगड़ी इत्यादि यहांगिल्ली और दंडाये दो शब्द मिलकर गिल्लीदंडा यहशब्दहुआहै, इसीतरह से औरमीजानो ॥

इनशब्दोंका आपसमें जो सम्बन्धहै, उसे समासकहतेहैं; जैसा गिल्लीदंडा यह द्वंद्वसमासहै; समाससे जो बनाहुआशब्दहै उसेसामासिक

जिससे समासका अर्थसमझाजावे उसवाक्यको विग्रहकहतेहैं; जैसा देवाज्ञा, देवकी जो आज्ञा सोदेवाज्ञा ॥

प्र० समासकितनेप्रकारकेहैं ?

उ० समासछःप्रकारकेहैं, द्वंद्व तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु बहुव्रीहि और अव्ययीभाव ॥

द्वंद्वसमास ॥

प्र० द्वंद्वसमासकिसेकहतेहैं ?

उ० दो अथवाअधिकशब्दोंका योगहोकरबीचके और शब्दकालोपहोवे, उसेद्वंद्व जानो; इससमासमें उत्तरशब्दका जो लिंग वही सामासिक शब्दकालिंग बनारहताहै; रामकृष्ण, मावाप, इनकोपुल्लिङ्गजानो; यहां राम और कृष्ण, मा और बाप, यहविग्रहहैं ॥

हिन्दीभाषामें द्वंद्वका औरभी एकप्रकारहै उसेसमाहार द्वंद्वकहतेहैं, दो शब्दोंकेयोगसे तदंतर्गतकासमावेशहोताहै; जैसा हाथपांवटूटे, यहांहाथ और पांवके बीचमें जो अवयवहैं उनकाभी संग्रहहोताहै; इसीतरहसे सेठसाहूकार, दालरोटी, इत्यादिजानो ॥

तत्पुरुषसमास ॥

प्र० तत्पुरुषसमासकिसे कहतेहैं और उसके के प्रकारहैं ?

उ० तत्पुरुषसमास उसेकहतेहैं कि जिसमें उत्तरपदप्रधानहो और उसकी तरफ़ पूर्वशब्दकी विभक्तिकासम्बन्धहोकर, विभक्तिकालोपहो इसमें द्वितीयादि विभक्तियोंकेयोगसे छःप्रकारहोतेहैं; जैसा

विभक्तिकेतत्पुरुष	विग्रहवाक्य	सिद्धसामासिकशब्द	विभक्तिलोप
२ द्वितीयातत्पुरुष	द्विजकोताड़न	द्विजताड़न	द्वितीयाकालोप
३ तृ- त-	भक्तिसेवश्य	भक्तिवश्य	तृ- लो-
४ च- त-	यज्ञकेलियेस्तम्भ	यज्ञस्तम्भ	च- लो-
५ पं- त-	पदसेच्युत	पदच्युत	पं- लो-
६ ष- त-	देवकाभक्त	देवभक्त	ष- लो-
७ स- त-	शास्त्रमेंनिपुण	शास्त्रनिपुण	स- लो-

जब प्रौढ़भाषामें सर्वनामका समास होताहै, तबउसकारूप संस्कृतके नियममेंहोजाताहै जैसा मेराजन्म, मज्जन्म; तेराभाग्य, त्वद्भाग्य, मेरावस्त्र, मद्वस्त्र; तेरागुण, त्वद्गुण; यहां मैं तू के मत् त्वत् संस्कृतके अनुसार रूप होतेहैं इसीतरहसे औरभीजानो ॥

हिन्दीभाषामेंसर्वनामकेरूप संस्कृतकेरूपवत् समासमेंहोतेहैं ॥

हिन्दीमेंसर्वनामकेरूप	संस्कृतमें	सामासिकरूप
वह वे	तत्-चरित्र धन	तच्चरित्र, तद्धन
मैं हम	मत्-भाग्य अस्मत्-	मद्भाग्य, अस्मद्भाग्य
तू तुम	त्वत्-गृहं युष्मत्	त्वद्गृहं, युष्मद्गृहं
यह ये	एतत्-देशीय	एतद्देशीय

प्र० कर्मधारयसमासका लक्षणबतलाइये ?

उ० जहांवक्ताकीइच्छासे दोनोंशब्दोंका भावतुल्यहो अथवा दोनोंका उपमान उपमेयभावसम्बन्धहोवे अगर विशेष्यविशेषणभावहोवे तो उससमास को कर्मधारय जानो; जैसा

भक्तिमार्ग.........भक्तिवहीमार्ग.........भक्तिरूपीमार्ग

चन्द्रमुख	चंद्रवत्मुख	उपमानवाचीवत्कालोपहुआ
नीलकमल	नीलऐसाजोकमल	विशेष्यविशेषणभावसमास

६ द्विगुसमास ॥

प्र० द्विगुसमासकिसेकहतेहैं ?

उ० जहांपूर्वपदसंख्यावाची होकर पूर्वोत्तरपदोंसे समासकियाजाताहै उसे द्विगुसमास कहतेहैं; और यहसमास बहुधा समाहार अर्थमें आताहै; जैसा अष्टाध्यायी, आठअध्यायोंकासमूह उसे अष्टाध्यायीकहतेहैं, इसीतरहसे चतुर्युग, त्रैलोक्य, इत्यादि जानो ॥

बहुब्रीहिसमास ॥

प्र० बहुब्रीहिसमासकिसेकहतेहैं ?

उ० जहां दो अथवा अधिक शब्दोंकेयोगसे अन्यपदार्थका बोधहोताहै, उसे बहुब्रीहिजानो; जैसा चक्रपाणिचक्रहैपाणिमेंजिसके अर्थात् विष्णुका बोधहोताहै; इसीतरहसे चतुर्भुज (विष्णु) दशमुख, (रावण) जानो ॥ ये बहुब्रीहि समास बनेहुए शब्दविशेषणहोतेहैं, और इनका लिंगवचन विशेष्यके अनुसारहोताहै ॥ यह समास द्वितीयादिछःविभक्तियोंमेहोताहै, परन्तु हिन्दीमें बहुधा तृतीया, षष्ठी, सप्तमी इनविभक्तियोंके उदाहरणआतेहैं; जैसा जितक्रोध, जीताहैक्रोधजिसने, दीर्घबाहु, दीर्घ अर्थात् बड़ेहैं बाहुजिसके, बहुधनिका नगरी बहुतहैं धनिकजिसनगरीमें, इत्यादिजानो ॥

अव्ययीभावसमास ॥

प्र० अव्ययीभावसमास किसेकहतेहैं ?

उ० जिसमें हर, प्रति इत्यादि अव्ययोंकेसाथ दूसरेशब्दसे समासहोताहै, उसे अव्ययीभावसमासकहतेहैं; जैसा हरघड़ी, प्रतिदिन इत्यादि, और ये शब्दक्रियाविशेषणहोतेहैं ॥

---

१ पाठ

वाक्यकालक्षण रूप और पृथक्करण ॥

वाक्यविचार

प्र० वाक्यविचारमेंकिसकावर्णन कियाजाताहै ?

उ० पूर्वमें तो शब्दोंके स्वरूपबनानेकेनियम बतलायेगयेहैं, अबवाक्यमें शब्दोंकीयोजना अर्थात् किसस्थलमें कौनशब्दकिसरीतिसेरखना चाहिये और उनका परस्पर संबंध इत्यादिकोंकाविचारकियाजाताहै ॥

प्र० वाक्यकिसेकहतेहैं ?

उ० शब्दोंकी सुसंबद्ध व्यवस्था जो बातपूरीकरे उसेवाक्य कहतेहैं; जैसा गोविंदसोताहै, धीमरमछलीमारताहै ॥

प्र० वाक्यके कौन २ रूपहोतेहैं यहसमझाइये ?

उ० वाक्यके पांचप्रकारके रूपहोतेहैं; कथनात्मक, प्रश्नार्थक, आज्ञार्थक, + विस्मयादिबोधक, इच्छाप्रबोधक; जैसा वहघरकोगया, यहांउसका उद्देश्यकरके वाक्यजाना कथनहै; तूक्याकरताहै, यहप्रश्नार्थकहै; तूहाटकोजा, यहआज्ञार्थक; वाः क्यासमयोचितउत्तरदिया, विस्मयादिबोधक; ईश्वरतुम्हेंसुखीरखे, यहइच्छाप्रबोधकहै ॥

प्र० वाक्यमें कौन २ शब्द अवश्यहैं ॥

उ० वाक्यमें उद्देश्य और विधेय अवश्यहैं, जिसके विषय कोईबात कहीजाय उसे उद्देश्यकहतेहैं, और उद्देश्यकेविषयमें जो बातकहीजाय उसे विधेयकहतेहैं; जैसा वहआया, इसवाक्यमें वहउद्देश्य और आया विधेयहै, इससेस्पष्टहै कि प्रत्येकवाक्यमें कमसेकम नाम वा नामसमान दूसरा शब्द और क्रियापद ये दो चाहिये, सकर्मक क्रियापदहोवे तो कर्म अवश्य चाहिये, यह वाक्यकी केवलमूलस्थितिसमझाई; उद्देश्य और विधेयको बढ़ानाहोतो दोनोंके साथ गुणबोधकशब्दोंका योगकरनाचाहिये इसप्रकारसे वाक्यके चारभागहुए दो प्रधान और दो अप्रधान ॥

प्रधान		अप्रधान	
उद्देश्य	विधेय	उद्देश्यगुणवाचक	विधेयगुणवाचक
नाम, सर्वनाम, विशेषण वा कभी २ वाक्य	क्रियापद, वाहो धातुकेसाथनाम वा विशेषण	विशेषण, वाविशेषण वत् शब्द वा वाक्य	क्रिया विशेषण, वा क्रिया विशेषणवत्शब्द वा वाक्य

उद्देश्यके घरमें नाम, सर्वनाम इत्यादि जो लिखेहैं उनसे यह समझो कि नाम वा सर्वनाम वा विशेषण वा वाक्य उद्देश्य होताहै ॥ इसी तरहसे और भी जानो ॥

+ कथनात्मक और प्रश्नार्थक वाक्योंकी रचनाकभी २ एकहीसीहोतीहै ॥ निर्णय उसकापूर्वापर संबंधसे होताहै जैसा तुमआओगे" यहां क्या लगाके तो प्रश्नहोगा पर दूसरा कोई वाक्य जोड़ा जाय और क्या न लगाके तो कथनात्मक होगा ॥ जैसा तुम आओगे तो मेरा [illegible] भी लेआओ ॥

उदाहरण ॥

"चिड़िया उड़तीहै- ... ... यहां नामउद्देश्यहै- ... ...
"वह" गया- ... ... सर्वनाम-
"बहुतसे" बुलायेगयेथे किंतुथोड़ेमे" पसंदहुए- विशेषण- ... ...
लोगोंको उचितहैकि "क्रोध, ईर्षा, छल, लालच,
घमंड, चुगली, आदि बुराइयोंको अपनेचित्तमें
न रहनेदेवें" ... ... वाक्य- ... ...
"विद्यावान" पुरुषसबजगह प्रतिष्ठापाताहै- ... यहांविशेषणउद्देश्यगुणवाचकहै-
"जिसकेपास विद्याहै" वह सबजगहप्रतिष्ठा-
पाताहै- ... ... विशेषणवत्वाक्य- ... ...
"अच्छेचालचलनका" मनुष्य सबजगह मान्य-
होताहै ... ... विशेषणवत्शब्द- ... ...
"ध्यानपूर्वक" कामकरताहै- ... ... यहांक्रियाविशेषण विधेय गुण-
वाचकहै- ... ...
वह "दिललगाके" वा "दिलसे" कामकरताहै ... क्रियाविशेषणवत्शब्द- ...
"जैसाचोखामनुष्यकामकरता" वैसावहकरताहै क्रियाविशेषणवत्वाक्य- ...
वह "नहींदेखसकता" ... ... यहां क्रियापदविधेयहै- ...
वह "अंधाहै-" ... ... है धातुकेसाथविशेषण- ...

ऐसेस्थलमें है को केवलउद्देश्य और विधेयकासंयोजक अर्थात् मिलापकरने वालाकहतेहैं; पर उस बातमें एकाग्रताहै, ऐसेस्थानमें है मुख्यक्रियापद वा विधेयहोताहै, बहुधा है का समावेश विधेयमें कियाजाताहै ॥

वाक्यका अर्थपुराहोनेकेलिये जो शब्दअवश्यहै, उसे विधेयार्थपूरककहतेहैं; +

+ सकर्मकक्रियापदके साथ कर्म को अवश्यकहना चाहिये ॥ वह कर्म सदा विधेयार्थ पूरकहोताहै ॥

श्रोर जिसशब्दसे वाक्यकेअर्थका विशेषज्ञानहोताहै, उसको विधेयार्थवर्धक कहतेहैं, वाक्यका पृथक्करण इसरीतिसे होताहै; जैसा

विद्यावानमनुष्य सबजगह प्रतिष्ठा पाताहै,

उद्देश्य	विधेय	विधेयार्थपूरक	विधेयार्थवर्धक
विद्यावानमनुष्य	पाताहै	प्रतिष्ठा	सबजगह

प्र० वाक्यमें शब्दोंकी योजनाकिसतरहसे होतीहै ?

उ० सामान्यत: वाक्यके अवयवोंकी व्यवस्था इसतरहसेहोतीहै, कि पहिले कर्ता वा उद्देश्य, दूसरेविधेयपूरक वा कर्मादिकारक, और सबकेपीछे क्रियापद आताहै; विशेषण विशेष्यके पूर्व और षष्ठ्यंतनाम वा सर्वनाम संबंधीके पूर्व आतेहैं ॥ जैसा मैंने शेरको तलवारसे खालकेलिये मरकामेनिकलतेही जंगल में मारा, उसनेअपनेछोटे भाईकोमारा यहनियम छोटेवाक्योंकेलियेहै ॥ कविता में और गद्यमें जहांविरोध वा किसी शब्दको ज़ोरसे कहनाहो तहां यहनियम काममें नहींआता; जैसा ॥

शकुन्तलानाटक ॥

इनको (अर्थात् दुर्वासाको) छोड़ और किसीको ऐसीसामर्थ्यनहींहै कि अपराधी को आपसेभस्म करदे ॥

रामायणमें ॥

रंगभूमिआयेदोभाई । असुधिसबपुरवासिनपाई ॥
चलेसकलगृहकाजबिसारी । बालक युवा जरठ नर नारी ॥

---

२ पाठ ॥

कर्ता और क्रियापदकामिलाप ॥

प्र० कर्ता और क्रियापदकामिलाप किसतरहसेहोताहै ?

उ० वाक्यमें नाम वा सर्वनाम वा विशेषण उद्देश्य होवे तो वहसदा प्रथमाविभक्तिमें रहताहै ॥ साधारणत: हिन्दीमें क्रियापदकालिंगवचन और

पुरुष कर्ताकेलिंगवचन और पुरुषकेसदृशहोतेहैं; परइसनियमके कई अपवादहैं उनकोध्यानमें रखो ॥

(१) आदरार्थमें एकवचनांत कर्ताकेसाथ बहुवचनांत क्रियापद आताहै ॥

(२) मनुष्यसेअन्यजीव वा पदार्थ बोधकशब्द दो अथवा अधिक एक वचन में आवें तो क्रियापद एकवचनमें विकल्पसे आताहै ॥

(३) कर्ताभिन्नलिंगी होवें तो क्रियापदपुल्लिङ्गमेंआताहै, वासबसेनिकट जो कर्ताहोवे तदनुसारहोताहै ॥

(४) जबक्रियापदसकर्मक धातुसाधितभूतकालवाचक विशेषणसे बनाहोवे तबकर्ताको तृतीयाविभक्तिका प्रत्ययलगानेहैं कर्मप्रथमांतहोवेतो तदनुसारक्रिया पदका रूपबनताहै, और कर्मद्वितीयाविभक्तिमेंहो तो क्रियापद तृतीयपुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में आताहै॥

उदाहरण ॥

वहलिखताहै, वहलिखतीहै, वे लिखतेहैं, वेगातीहैं, हेसखीहमारीसहेली शकुन्तलाका गांधर्व विवाहहुआ, और पतिभीउसीकेसमानमिला, इससेहमारेमन को सुखहुआ, परंतुफिरभीचिंतानमिटी ॥

(१) इसकीकुछचिंतामतकरो, ऐसेगुणवानमनुष्य कभी निर्लज्जनहींहोते हैं, अबचिंताकीबात यहहैकि न जाने पिता कश्यपइसवृत्तांतको सुनकर क्या कहेंगे॥ यहां मनुष्य और पिता एकवचनहैं, तोभी क्रियापद बहुवचनमेंहै ॥

शत्रुकापराजय करके राजा फिरनगरमेंआये और राजकरनेलगे ॥

(२) अभी बैल और घोडापहुंचाहै यहांदोकर्ताहैं परक्रियापदएकवचन मेंहै ॥ जन धन स्त्री और राजमेराक्योंन सबगयाआज ॥

(३) उसके माबाप भाई तीनों उसके विवाहकीचिंतामेंथे, यहांयद्यपि एककर्तास्त्रीलिंगहै तथापिक्रियापदपुल्लिङ्गमेंहै, उसकी गाड़ी ऊंट घोडे हाथी लादेजातेहैं, लड़के लड़कियां वहांदौड़तीथीं इसवाक्यमें क्रियापदनिकटकर्ता लड़कियांकेअनुसारहै ॥

(४) हमउनबासियोंने ऐसेभूषण आगेकभीनहींदेखेथे, यहवहीलड़काहै जिसको तैंनेपुचकारमपालाहै ॥

वाक्यांश या वाक्यक्रियापदका कर्ताहोवेतो क्रियापदतृतीयपुरुषपुल्लिङ्ग एकवचनमेंआताहै; जैसा इनकार्योंका सोचाहोनाभीबहुतहै, लोगोंकोउचितहै कि जोकामकरनाहो उसकेगुणदोष पहिलेसोचलेवें ॥

क्रियापदकेकर्ता भिन्न २ पुरुषवाचकहोवें तोयहनियमहै कि प्रथम और तृतीयपुरुषवाचक सर्वनाम कर्ताहोवे तोक्रियापदप्रथमपुरुषमेंचाहिये, द्वितीय और तृतीयपुरुषवाचक कर्ताहोवे तो क्रियापद द्वितीयपुरुषमेंचाहिये जैसा हमतुमउसकामको करेंगे, तुम और वे जाओ ॥

---

३ पाठ

विशेष्यविशेषणकामिलाप ॥

प्र० विशेष्यविशेषणकीयोजनावाक्यमें कैसीहोतीहै ?

उ० विशेषणसदा प्रत्यक्ष वा अध्याहृतनाम वा सर्वनामकागुणबतलाताहै और वहप्रायःविशेष्यकेपूर्व आताहै, पूर्व मेंलिखाहै कि आकारांतविशेषणोंको छोड़ शेषविशेषणोंकेरूपमें विशेष्यकेलिंगवचनानुसार कुछभेदनहींहोता; आकारांतविशेषणकालिंगवचन विशेष्यकेअनुसारहोताहै, उसकायहस्वभावहै कि विशेष्यपुल्लिङ्ग बहुवचनांतहोवे वा एकवचनमें द्वितीयादिविभक्त्यन्त वा शब्द योगीअव्ययसमेतहो, तो विशेषणकेअंत्य आ को ए आदेशकरके सामान्यरूप करतेहैं; और विशेष्यस्त्रीलिंगहो तो आ को ई आदेशहोताहै ॥ यहनियम जो शब्दविशेषणकेसमान अर्थात् सर्वनाम और धातुसाधितविशेषणवाक्यमें आतेहैं उन्हेंभीलगताहै; जैसा सीधामनुष्य, सीधेमनुष्य, सीधेमनुष्योंको, सीधीस्त्री या स्त्रियां, सीधीस्त्रियोंको, गंगाकेतीरपरघरबनायाहै, इसलड़केका पालनेहाराकौनहै, तुम्हारीघड़ीअच्छीहै, उसकामनउदासहै, पांचवांलड़का, पांचवेंलड़केने, गिराहुआघर, गिरीहुईहवेली ॥

सामान्यनियमयेहैकि विशेषणविशेष्यकेसाथआवे तो उसविशेषणमे बहुवचन के प्रत्यय आं ईं एं ओं वा विभक्तिप्रत्ययनहींजोड़ते; जैसा अच्छीकितावें, अच्छेलड़कोंको ॥ परविशेष्यप्रत्यक्षनहोवे तो विशेषणमें बहुवचनकेप्रत्यय और विभक्तिप्रत्ययकायोगहोताहै, जैसा गरीबोंकादेनाउचितहै, धनवानकासर्वत्र आदरहोताहै, साधुअपनेसमान सभोंकोमानकर उनपैदयाकरतेहैं ॥

आकारांतविशेषणके विशेष्यको को प्रत्ययकायोगकरके विशेषणक्रियापदके साथजोड़ाजावे तो उसकेरूपमेंकुछभेदनहींहोता; जैसा उसकेमुहकोकालाकरो, परयहनियमसर्वव्यापक नहींहै, क्योंकि नामयदिस्त्रीलिंगहोवेतो विशेषण स्त्रीलिंगी बहुधारखनेहैं, यद्यपिउसकायोग क्रियापदकेसाथकियाहो; जैसा लाठीकोसीधीकर, रस्सीकोलम्बीकरो ॥

विशेषणभिन्नलिंगी दो वा अधिकनामोंकागुणबतावे तो विशेषणपुल्लिङ्ग नामकेअनुसारहोताहै, परअंत्यविशेषण स्त्रीलिंगीहोकर विशेषणकेनिकटहोवे तो विशेषणस्त्रीलिंगमेंआताहै जैसा उसकेमांबापजीतेहैं, उसकेलड़के लड़कियां अच्छीहैं ॥ परंतुविशेष्यअप्राणिवाचकनामहोवें तो विशेषणसमीपविशेष्यके अनुसाररहताहै; जैसा कपड़े बासनकितावें बहुतअच्छीहैं, कलकोहाटमेंअनाज तरकारीफल महंगेथे ॥

जब दो अथवा अधिक विशेषण नामकागुण बतावें और उनमेंसे एक दूसरेकाविशेषणहो, तोभीउनमेंसे आकारांतविशेषणकारूप विशेष्यकेलिंगवचनानुसारहोताहै;जैसा बड़ाऊंचाहक्ष बड़ीलंबीरस्सी ॥

---

४ पाठ

कारकविचार ॥

प्र० कारककिसेकहतेहैं और वे कितनेप्रकारकेहैं ?

उ० जिसकाक्रियामें अन्वयहो अर्थात् संबंधहो उसेकारक कहतेहैं,

उसकेछःप्रकारहैं; जैसा कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ॥

प्र० वे छःप्रकार आपनेकहे, परन्तुइनकापृथक् वर्णनकीजिये और कौन विभक्ति किसअर्थमेंहोतीहै सोसमझाइये ?

उ० प्रथमादिविभक्तियां कर्तादिकारकोंकोवतलातीहैं॥ यहध्यानमेंरखना चाहिये कि एकनाम दूसरे नाम वा सर्वनामकेसाथ उसकेवर्णनकेलिये या उसेस्पष्टकरनेके वास्तेआवे, तो दोनोंकी एकहीविभक्तिरहतीहै; विभक्ति प्रत्ययकायोगकरनाहो तोउत्तरपदसे करतेहैं ॥ परवचनकी समता कभी २ नहींरहती; जैसा महात्माकण्वऋषि प्रभासतीर्थसे आगयेहैं, इतनी कथाकह श्रीशुकदेवमुनिने राजापरीक्षितसेकहा, आजयहराजर्षि तपस्वियोंकायशपुरा-कर राजधानी हस्तिनापुरको विदाहुआहै, हमलड़कोंसे तुमक्यापूछतेहो ॥ भक्तिवाचक[illegible] नामकेसाथआवे, तो वहुधानामकेपश्चात् उसकी हीरालालचितेरी, इत्यादि ॥

प्रथमाविभक्तिकावर्णन ॥

प्र० प्रथमाविभक्ति कौन अर्थ बतलातीहै ?

उ० कर्ता, कर्म, विधेय, अवधि, परिमाण, इनपांचअर्थोंमेंप्रथमाहोतीहै॥

कर्ता—जो क्रियाकेव्यापारकोकरे उसेकर्ताकहतेहै ॥ वहदोप्रकारकाहै; एक, प्रधान; दूसरा, अप्रधान; जिसकर्ताकेलिंगवचन और पुरुषकेअनुसार क्रिया पदकालिंगवचन और पुरुषहोताहै उसेप्रधानकर्ताकहतेहैं; जैसा गुरु विद्यार्थियों कोपढ़ाताहै, यहां कर्तागुरु-प्रधानहै, क्योंकि उसकेअनुसार क्रियापदरहताहै; इसीप्रकारसे लड़केरोटीखातेहैं, लक्ष्मीकपड़ेपहनतीहै, औरतें नहातीहैं इत्यादिवाक्योंमेंजानो ॥ अप्रधानकर्ताका वर्णनतृतीयाकेवर्णनमेंकरेंगे ॥ एक-नाम वा सर्वनाम दो अथवा अधिक क्रियापदोंकाकर्ताहोवे तोवहकेवलप्रथम क्रियापदकेपूर्वआताहै, और शेषक्रियापदोंकेसाथ उसकाअध्याहारकरतेहैं; जैसा मैंअपनेमालिककेपासजाऊंगा और कहूंगा किमहाराज मुझसेयहअपराधहुआहै कृपाकरकेक्षमाकीजिये ॥

कर्म—कर्मवाचकशब्दसे प्रथमाविभक्तिहोतीहै; जैसा देवदत्तने पोथीलिखीहै, सुन्दरलालनेकिताबवेंची, लक्ष्मीनिकपड़ेधोये इत्यादि; यहांलिखना बेंचना

धोना आदिव्यापारोंका फल पोथी किताब कपड़ेपरहै इसीसे वे कर्महैं और प्रथमाविभक्तिमेहैं ॥

विधेय—नामवासर्वनामकोउद्देश्यकरके उसकेविषयमें किसीएक अर्थका विधानकियाजावे, तो उसविधेयवाचकनामसे प्रथमाहोतीहै; जैसा हीरालाल ब्राह्मणहै, वज़ीरा मुसलमानहै, यहांहीरालाल वा वज़ीराकाउद्देश्यकरके ब्राह्मणत्व और मुसलमानीका विधानकियाहै, इसलिये ब्राह्मण और मुसलमान विधेयार्थमें प्रथमाहैं ॥

कईएक अकर्मक, कर्मवाच्यक्रियापद, होना, दिखाना, कहाना आदि अर्थवाचकोंकेसाथप्रथमांतनामविधेयका अर्थपूराकरनेकेलिये आताहै; जैसा पत्थर लोहा, खड़िया, कोयला, नोन, आदि सबधातु विशेषहैं, जो झाड़होताहै उसमें जड़सेही अनेकडालियांफूटतीहैं, मायणमें वह बड़ापंडितदीखताहै, प्रथमजीवधारी जो अपने आपहिल चलसकतेहैं वे जीवजंतु कहातेहैं ॥

अवधि—कालवाअंतरकी मर्यादा बतलानाहोतो तद्वाचक नामसेप्रथमाहोतीहै; जैसा दो महीने वहयहांरहेगा, नागपुर सागरसे एकसौपैंतीसकोसदूरहै ॥

परिमाण—किसी वस्तुके परिमाणकाबोधकरना हो,तो परिमाण वाचकसे प्रथमा होतीहै; जैसा दोसेरसुपारी, पांचपसेरीगेहूं ॥ +

द्वितीयादिविभक्तिकावर्णन ॥

प्र० द्वितीयाविभक्ति किससेहोतीहै ?

उ० जोक्रियाकाकर्महै उससे द्वितीयाविभक्तिहोतीहै; जैसा गुरू लड़कोंको पढ़ाताहै, यहां पढ़ाताहै इसक्रियाका कर्म लड़केहैं, उससेद्वितीयाहुई ॥ जब कर्म को निश्चितकरनाहो, तबद्वितीयाकाप्रत्यय को लगातेहैं; जैसा किताबकोलाव; यहनियम बहुधाव्यापकहै; जब कर्मवाचकशब्द विशेषण षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम इत्यादिकोंके योगसे निश्चितहोतेहैं तबउनको यहप्रत्ययलगानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै ॥

+ "दो महीने यहां रहेगा" "दो सेर सुपारी" ऐसे वाक्योंमें क्रमसे तक और भर शब्दोंका अध्याहार करके कोई २ लोग महीने और सेर इनको सप्तम्यन्त रूप मानतेहैं ॥

अप्राणिवाचकनामकर्महोवेतो प्रायःउनसे, द्वितीयाकेप्रत्ययकायोगनहीं-करते; जैसा ख़तलिखो, कईएकशब्दऐसेहैं किवेनिश्चितहों तोभीउनकोप्रत्यय लगाना चाहिये; व्यक्तिवाचक अर्थात् विशेषनाम, अधिकारिवाचक, और व्यापारकर्तृवाचक इत्यादि शब्दोंसे को प्रत्ययका योगकरना चाहिये जैसा विष्णु कोभेजो, न्यायाधीशकोबुलाओ इत्यादि ॥ जबवाक्यमें कर्म और संप्रदान दोनोंआवेंतो कर्मप्रायः प्रथमामेंरखतेहैं और संप्रदानवाचकमें चतुर्थीहोतीहै, संप्रदानार्थकशब्दनाम वा सर्वनामहोवे और कर्मद्वितीयांतहोवे तोनामकेआगे को और सर्वनामकेआगे ए अथवा एं प्रत्ययलगातेहैं; जैसा मर्दकोकपड़ेइनामदो, उसनेअपनेभाईके हिस्सेको उसकीबेटीकोदिया, मैंनेअपनीलड़कीको उसेसौंपदिया ॥

गत्यर्थक्रियापदोंकेसाथ स्थलवाचकनामसे अधिकरणार्थमेंद्वितीयाहोतीहै॥ इसीतरहक्रियाकेहोनेकासमय जिसनामसेबोधितहो उससेभीद्वितीयाहोतीहै॥ जैसा गङ्गाकोगया, दिल्लीकोपहुंचा, मैंरातकोआकर जोदृत्तांतआजहोगा सो कहूंगा, भोरकोउठकरगांवकोचलाजाऊं, आधीरातकोराजानगरमेंआये ॥ देश और कालवाचकनाममें द्वितीयाकेप्रत्ययकालोपकरतेहैं, परन्तुउसकेपीछे विशेषण या विशेषणतुल्य शब्दहोवेतो उसकासामान्यरूपहोताहै; जैसा उसदिनवह-मेरेघरआयाथा, उसकाल मारू जोबजताथा सोतोमेंघराजाताथा ॥

तृतीयाविभक्ति ॥

प्र० तृतीयाविभक्तिमें कौन २ अर्थबोधितहोतेहैं ?

उ० तृतीयाके मुख्यअर्थपांचहैं; कर्ता, करण, हेतु, अंगविकार, साहित्य॥ कर्ता—तृतीयाकाप्रत्यय ने कर्तामेंलगातेहैं, जबवाक्यमें क्रियापद बोलधातुका गणछोड़ शेषसकर्मक धातुकेभूतकालवाचक विशेषणसे बनाहोवे,ऐसेप्रयोगमेंकर्ताके अनुसार क्रियापदकालिंगवचन नहींहोताहै, इसलियेउसेअप्रधानकर्ताकहतेहैं; जैसा मैंनेकुत्तादेखा ॥ तात्पर्यः बोलधातुकागण और अपूर्णभूतकालको छोड़कर सकर्मकधातुकेभूतकालमें जोप्रयोगहोतेहैं, वहांकर्ताको तृतीयाविभक्तिकाप्रत्यय ने जोड़तेहैं; जबऐसेवाक्यमें कर्मप्रथमांतहोताहै, तबउसकेलिंगवचनानुसार क्रियापदकालिंगवचनहोताहै, वहकर्मणिप्रयोगजानो; जैसा हीरालालनेपोथी

लिखो, उसनेघोड़ेभेजे, महाराजनेमुझपरहपादृष्टिकी ॥ और जबकर्ममें को प्रत्ययकायोगकरतेहैं, तबक्रियापद सामान्यतः पुल्लिङ्गतृतीयपुरुष एकवचनमें होताहै और उसेभावेप्रयोगकहतेहैं; जैसा उसनेकुत्तेको देखा, पार्वतीनेरोटी कोखाया, सोमालालने बकरीकोमारा, उसलड़केनेचूहेको पकड़ा, इत्यादि ॥ अप्रधानकर्ता कहांआताहै यहविद्यार्थियोंकोध्यानमेंरखनाचाहिये ॥

अकर्मकक्रियापदकेसाथ अप्रधानकर्ताकभीनहींआता ॥ केवलशुद्धधातुसे और वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसे जोकाल और अर्थबनतेहैं उनकेसाथनहींआताहै फिरवहधातुसकर्मक वा अकर्मकहो ॥ बोल भूल ला इत्यादि धातुओंकेसाथनहींआताहै; जैसा, वहबोला, वहसंदेसालाया; इङ्ग्लिश व्याकरणमेंलिखाहै कि लानाकाअर्थलेआना,यहांअंत्यावयव आ धातुअकर्मकहै, इसनेयहनियम समझमेंआताहै किजबसंयुक्तक्रियापदका अंत्यावयव अकर्मक होवे और सबक्रियापदसकर्मकहोवे, तोभी अप्रधानकर्ताकी योजनानहीं करतेहैं; जैसा वेफ़क़ीरखानाखागयेहैं, मैंख़तलिखचुका इत्यादि ॥ दोवाक्य और उभयान्वयी अव्ययसे जोड़ेगयेहों, उनकाकर्ता एकहीहोवे, और पहिले वाक्यमेंक्रियापद अकर्मकहोवे और दूसरेमेंक्रियापद सकर्मकहोवे, तोभी दूसरे वाक्यमें अप्रधानकर्ताकेकहनेकी कुछ आवश्यकता नहींहै, परन्तु वाक्यकी रचनाअप्रधानकर्ताके अनुसारहोतीहै; जैसा वहझटफिरआई और कहा अर्थात् उसनेकहा ॥

जिसवाक्यमें क्रियापदप्रयोजक वा कर्मवाच्य वा अकर्मकहोवे, वहां कर्तृवाचकनामसे से प्रत्ययहोताहै; जैसा मैंनेयहकाम उससेकरवाया, तुमसेरूखी रोटी क्योंकरखाईगयीथी, वहमुझसेमारागयाथा; यहअपराधउससेहुआ, मुझसे लिखानहींबनताहै ॥

करण—क्रियाकेहोनेकेलिये जोसाधन वा जिसकेद्वाराक्रियाहो उसको क्रियाकेअन्वयमें करणकहतेहैं; करणवाचकसे तृतीयाकाप्रत्ययलगातेहैं; जैसा सिपाहीने तलवारसे चीतेकोमारा, यहांमारनेकीक्रिया तलवारकेद्वाराहुई इसलिये तलवारकरणहै और उसमें तृतीयाकाप्रत्यय से हुआ; ऐसेही क़लमसे लिखा, हाथसे उठाया; पांवसे रगड़ा, इत्यादिजानो ॥

हेतु--कोईक्रिया होनेके वा करनेकेलिये जो कारणहो उसे हेतु कहतेहैं, तद्वाचकशब्दसे तृतीयाका से प्रत्ययहोताहै; जैसा आपकीदवासे आरामहुआ, तुम्हारेआनेसे मेराकामहुआ, गायनसे संतोषहोताहै, यहां दवा आना गायन ये हेतुहैं, उनसे तृतीयाहुई ॥

अंगविकार---जिसअंगावयव+मेंविकारहोवे उससे तृतीया होतीहै, जैसा आंखोंसेअंधा, पांवसे लंगड़ा, कानसे बहरा इत्यादि ॥

साहित्य--क्रिया करनेमें कर्ताकेसाथजोरहे उसेसाहित्यबोलतेहैं, और तद्वाचकसे तृतीयाहोतीहै; जैसा हज़ारीमल्ल एकआदमीकेसाथ आया, हरभान एककपड़ेसे गया, राजापचासहज़ारफौज़से चढ़आयाहै इत्यादि ॥

मूल्यवाचकसेभी तृतीयाहोतीहै; जैसा पांचरुपयेसे किताबमोललो, इत्यादि॥ कभी २ क्रिया करनेकाप्रकार वा रीति बतानेकेलिये नामसे तृतीयाहोती है; जैसा उसकोकिसीने नहींकहा पर अपनेहीदिलसे सीखनेलगा, अंत:करणसे कामकरो, मेरेतरफ क्रोधसे देखताहै ॥

तृतीयाकेप्रत्ययका कभी २ लोपहोताहै; जैसा मैंने उसकेहाथचिट्ठीभेजदी है, न आंखोंदेखा न कानोंसुना, यहां हाथसे आंखोंसे कानोंसे जानो ॥ पूछ कह और तदर्थकधातुकेसाथनाम वा सर्वनामसे को की जगह से आताहै जैसा राजासे विनतीकी, मैं उससेसचकहताथा, मैंने आपसे पूछा, इत्यादि ॥

चतुर्थीकावर्णन ॥

प्र० संप्रदान किसकोकहतेहैं ॥

उ० जिसकोकुछदियाजावे अथवा जिसके निमित्त कुछक्रियाहोवे, उसे संप्रदान कहतेहैं और उससे चतुर्थी होतीहै; जैसा वह ब्राह्मणकोगायदेताहै, उसने गोपालको पोथीदी, तुमकोएकघोड़ाभेजताहूं, यहां ब्राह्मण गोपाल तुम संप्रदानहै उनसे चतुर्थीका प्रत्ययको हुआहै; गुरूजीस्नानकोगयेहैं, पीनेकोपानी लाओ, वह नाटक देखनेकोगयाहै ॥

होधातुके साथधातुसाधित भाववाचकनामआकर आवश्यकता बतावे,

+ अंगावयवका अर्थ शरीरका भाग ॥

तो उसके पूर्व करनेवाचकशब्दसे चतुर्थीहोतीहै; जैसा हमैंआजसभाकोजानाहै, उसको अभी पाठसीखनाहै ॥

योग्यता आदि अर्थ बोधक विशेषण और उनके विरुद्धशब्द वा नमस्कार वा कुशलआदि शब्दोंकेसाथ नामसे चतुर्थी होतीहै; जैसा लड़कोंको उचितहै कि मातापिताका आदरकरें; लोगोंको योग्यहै कि सच्च बोलना, उदारता, दया, पराये दोषकाढकना, सहना, विवेक, उपकारकरना, आदि अच्छो २ बातोंको अंगीकारकरें; बड़े आदमियोंको उचितनहींहै कि कभी झूठबोलें; आपको नमस्कार; आपकोकुशल हो ॥

पंचमीकावर्णन ॥

प्र० अपादानका क्या अर्थहै और यहकारक किसविभक्तिसे जाना जाताहै ॥

उ० किसीको अवधिमानकर उससे वियोग वाविभाग वा न्यूनाधिक भावादिअर्थका बोधहोवे, तो वह अपादान कहाताहै और उससेपंचमीके प्रत्ययका योगहोताहै; जैसा गांवसे आयाहै, घोड़ेसेगिरपड़ा, गोविंदसेरामप्रसाद बड़ाहै, उसघोड़ेसे यहघोड़ाछोटाहै, आगरेसेकलकत्तापूर्वहै इत्यादि ॥ अकर्मकक्रियापदकेसाथ उत्पत्तिस्थानवाचकसेपंचमीहोतीहै; जैसा ब्रह्माकेमुखसे ब्राह्मणपैदाहुए, हिमालयपर्वतसे गंगानिकलीहै ॥ कभी २ सप्तम्यंतसेपंचमीहोतीहै; जैसा बाज़ारमेंसेलाया, घोड़ेपैसेगिरपड़ा, इत्यादि ॥ वस्तुओंकेसमूहमेंसे कुछअंश अलग करनाहोतोसप्तम्यंतनामसेपंचमीहोतीहै ॥ जैसा उनमेंसे चार बाक़ी रहगये, संदूकमेंपंद्रह रुपयेरखेहैं उनमेंसेपांचलो ॥

सप्तमीकावर्णन ॥

प्र० सप्तमीविभक्तिका अर्थक्याहै और किससेयहहोतीहै ?

उ० क्रियाकाअधिकरण अर्थात् आधार तद्वाचकशब्दसे सप्तमीकेप्रत्यय में,पै,पर, होतेहैं; जैसा धनमेंमनरखताहै, घोड़ेपैबैठाजाताहै, तालावमेंस्नान करताहै, हाथीपरबैठाहै, पढ़नेमेंध्यानलगावैतोअच्छाहै, यहां घोड़ा तालाव इत्यादि आधारवाचक शब्दसप्तम्यंतहै ॥

जब कोईपदार्थ दो अथवा अधिकमनुष्योंकाहै यहबतलानाहो तब अंत्यनामसे षष्ठीहोतीहै; जैसा यहबगीचामोहनलालशिवप्रसाद और बेनी-रामकाहै ॥ सादृश्य, समता, अनुसार, समीपता, योग्यता, आधीनता आदिगुण वाचक विशेषणोंकेपूर्व शब्दयोगीअव्ययवत् नामसेषष्ठीहोतीहै, जैसा, उसस्त्रीका मुखचन्द्रमाकेसदृशहै, ज्ञानहीनमनुष्यपशुकेसमानहै, यहधर्मशास्त्रकेअनुसारहै, वहलड़कारराजाकेसमीपरहताथा, पतिव्रतास्त्रीकायहधर्महै कि अपनेपतिकेआ-धीनरहे, ऐसाहाररराजाकोनज़रकरनेकेयोग्यहै ॥

---

५ पाठ

सर्वनाम ॥

प्र० वाक्यमेंसर्वनामकीयोजनाकिसरीतिसेहोतीहै सो कहिये ॥

उ० जिनपुरुषवाचकसर्वनामोंकेलिये क्रियापदोंके पृथक् २ रूपहैं, उन रूपोंकेसाथ सर्वनामोंकीयोजना करनाअवश्यनहीं; परन्तु जबविरोध अथवा विशेष्यता बतलानाहो तबउनकीयोजना करतेहैं, जैसा करताहूं, लिखतेहो, यहांपहिलेमें प्रथमपुरुषवाचकसर्वनाम और दूसरेमें द्वितीयपुरुषवाचकसर्वनाम काबोध होताहै; इसलिये उनकास्पष्ट उच्चारण अवश्यनहीं; क्यातुमहो मैंने नहींजाना ॥

पुरुषवाचक सर्वनामोंके बहुवचनान्तरूपआदरार्थमें वा सामान्यसंभाषणमें एकवचनकीजगहआतेहैं - हमनेतुमकोएकवारकहदियाहै कि ऐसीबातहमारे साथ मतनिकालो, हमनेसुना कि तुम्हारेभाई आजबंबईकोजाएंगे कृपाकरके उन से कहदो कि हमारेलिये पांचसौरुपयेतक मोतियोंकीजोड़ीलावें ॥

बोलनेवाला और जिसकेसाथ वहबोलताहै वे दोनोंसमानपदवीकेहोवें तब प्रत्येकको अपनेविषयमें एकवचनमें बोलनाचाहिये और दूसरेको बहुवचन में, बहुतबड़े पदवीका आदमी अपनेविषयमें बोले तोबहुवचनमें बोलताहै पर यहसभ्यरीतिनहींहै और किसीको एकवचनमें बोलनाअच्छानहींहै ॥

तीसरेकेविषयमें बोलनाहो और वहअपनेसेबड़ाहोवे तो बहुवचनमें और

संबंधरहताहै उसे ज्ञातसंबंधीकहतेहैं ॥ का की के येप्रत्यय ज्ञातसंबंधीसेहोतेहैं; और ज्ञातसंबंधी संबंधीकीविशेष्यता बतलाताहै, उसकाअन्वयसंबंधीमेंहै; इसीसे उसे कारकत्व अर्थात् क्रियान्वयित्वनहींहै, और कारकोंमेंनहींगिना-जाता ॥ जैसा, राजाकाघोड़ा, यहांज्ञातसंबंधीराजा उससेषष्ठीविभक्तिहुई राजाकासंबंधघोड़ेकीतरफ़है ॥ संबंधीपुल्लिंग प्रथमाकेएकवचनमेंहोवे, तोज्ञातसंबंधीमें का, और पुल्लिंगहोकर बहुवचनांत वा द्वितीयादि विभक्त्यंतहोवे वा शब्द-योगीअव्ययकेसंगआवे, तोज्ञातसंबंधीसे के प्रत्ययहोताहै; जैसा राजाकाघोड़ा, राजाकेघोड़े, राजाकेघोड़ेपर राजाकेघोड़ोंका राजाकेघोड़ोंपर इत्यादि ॥

संबंधीस्त्रीलिंगहोवे, तो ज्ञातसंबंधीमें की प्रत्ययहोताहै; जैसा राजाकी-घोड़ी राजाकीघोड़ियां इत्यादि ॥ ज्ञातसंबन्धी संबंधीकेपूर्व बहुधा आताहै ॥ संबंध कई प्रकारकाहोताहै ॥ बोधहोनेकेलिये कुछ बताताहूं ॥

वाक्य	संबंध	वाक्य	संबंध
राजाकीघोड़ी	स्वस्वामिभाव	राजाकासिपाही	सेव्यसेवकभाव
तुलसीदासकीरामायण ॥	कर्तृकर्मभाव	मनसारामकीलड़की	जन्यजनकभाव
चांदीकेतोड़े	द्रव्यजन्यभाव	हाथकीउंगली	अंगांगिभाव

कभी २ अधिकरणमेंषष्ठीहोतीहै—रातकासोयाहै, दिनकाथकाहुआहै ॥

कभी २ षष्ठीकाअर्थनिमित्तहोताहै—वैद्यकेयहां जानेकीसामर्थ्य अबतक नहींआई; क़ीमत, परिमाण, उमर,मुद्दत, शक्यता, समग्रता, योग्यता, आदि अर्थोंमेंषष्ठीकीयोजनाकीजातीहै ॥ जैसा पंद्रहबरसका लड़का

चारआनेकीचीमड़ी पांचरुपयेकागोटा	क़ीमत	पंद्रहबरसका लड़का दसबरसकी लड़की ... यहपच्चीसबरसकाहालहै	उमरऔरमुद्दत
दोहाथ का कपड़ा तीनहाथका सोटा	परिमाण	मैं आज ठहरनेकानहीं .... शक्यता खेतकाखेत, घरकाघर-समग्रता अर्थात् सबखेत, सबघर	

यहबातकहनेकेयोग्यनहींहै—योग्यता ॥

शब्दयोगीअव्यय नामकेसाथ होवे तो षष्ठीका के प्रत्यय लगातेहैं; जैसा पत्थरकेनीचे; कभी २ इसप्रत्ययका लोपभीहोताहै—पत्थरपर, तुम्हारी सहायताबिना यह काम नहींहोगा ॥

आपमेकहूंगा अपने = मेरे; हम और हमारेबाप अपनेदेशकोजायंगे, यहां जानेकाकर्ता बाप और हम हैं, इसकारणसे अपना की योजनानहींहुई ॥

और पृथक्ता कहनाहो तो कभी २ द्विरुक्तिहोतीहै जैसा वे अपने २ घरकोगये ॥ आप अर्थात् निजकावाचक सामान्यसर्वनामकाप्रयोग आदरार्थक आप शब्दसेभिन्नहै; और उसकीयोजनातीनोंपुरुष और दोनोंवचनोंमेंहोतीहै; जैसा मैंआपकहूंगा तुम्हारीसहायतानचाहिये; तुमआपक्योंनगये; तुमकुछमत बोलो, वे आपजायंगे; इन्द्रियोंकीविद्यामें अभ्यासकरेंगे तोउन्हें देखने और प्रकाश और प्रतिबिम्बकाभेद आपसेआप खुलजायगा ॥

पूर्वभागमेंकहआयेहैं कि सर्वनामकावचन नामकेवचनके अनुसारहोताहै फिरवहनामप्रत्यक्षहो वा अध्याहृतहो॥ सर्वनाम नामकेपूर्व विशेषणसाआवे और नाममे द्वितीयादिविभक्तिका योगकरनाहो वा उसकेसंग शब्दयोगीअव्यय जोड़नाहो, तोसर्वनामके सामान्यरूपमात्रकी योजनाकरनाचाहिये अर्थात् प्रत्ययोंका योगनहींहोता; जैसा आपऐसेधर्मज्ञ जो मुझअतिथिको मारनेकोउठे; तुमभलेआदमीकोझूठबोलनाउचितनहींहै; कदाचित् कोई इसबातका संदेहकरे; पृथ्वी जल और वायु इनतीनोंमें जीवरहतेहैं; उनजीवोंमें मुख्यदोभेदहैं; जिस धरतीमेंअन्न और तरकारीउपजतेहैं उसेखेतकहतेहैं; सबपुस्तकें हाथमेंहीलिखी जातीहैं वा और किसीप्रकारसेभीहोतीहैं; किसमनुष्यको बुलातेहो ॥ क्यासर्व नामकासामान्यरूप काहे नामकेपीछेविशेषणवत् कभीनहींआता; जैसा काहेके लियेबुलातेहैं, काहेकीघड़ीबनीहै ॥

प्रथम और द्वितीयपुरुषवाचकसर्वनामसे सादृश्यार्थक सा सी से प्रत्यय जोड़ेजांय तोउनके सामान्यरूपसे जोड़तेहैं; जैसा तुमसा चतुरदूसरानहीं ॥

कभी २ यह और वह इनएकवचनरूपोंकी बहुवचनमें योजनाकरतेहैं; जैसा यहदोनोंभाई न्यायाधीशकेपासगये, वहदानधर्ममेंकुछपैसादेतेहैं ॥

संबंधीसर्वनाम जो वा जौन और तदर्थवाचक सो वा तौन वा वह अपने २ वाक्यमें बहुधासबसेपहिलेआतेहैं ॥ पूर्ववाक्यमें जो सर्वनामका प्रयोगकियाजावे, तो उत्तरवाक्यमें सो वा वह सर्वनामकी योजनाकरना चाहिये ॥ और जिसवाक्यमें संबंधीसर्वनामहोवे वह प्रायःपहिलेआताहै ॥

हलकाहोवे तो एकवचनमें बोलना चाहिये, परसमक्षमें बहुवचनमें बोलना-उचितहै और वहअतिश्रेष्ठ हो,तो आप इससर्वनामकीयोजनाकरतेहैं;बराबरी वालेको वा बड़ेको समक्षबोलनाहो, तो आप इस सर्वनामकीयोजना करतेहैं आप जब कर्ताहोतोक्रियापद तृतीयपुरुषबहुवचनमें चाहिये ॥

यथार्थ वहुत्वबतानाहोवे तो सर्वनामोंकेआगे लोग शब्दकीयोजनाकरते हैं; जैसा हमलोगोंमेंयहचालनहींहै, पर तुमलोगोंमें होतोकरो, आपलोगोंको इससे बड़ालाभहोगा ॥

ईश्वरकीप्रार्थनाकरनेमें अतिआदरबतानेकेलिये वा अतिनीचमनुष्यकोबोलनेमें वा अत्यन्तस्नेहकीजगह द्वितीयपुरुषएकवचनकीयोजनाकरतेहैं; जैसा हेभगवान् तूसबप्राणियोंकापालनकर्ताहै, तूनेसबसृष्टि उत्पन्नकी, इ० ॥ अरेतूकौनहै? बताव जल्द, क्यों यहांआया; बेटा,यहांआ मुझेमुहचुंबनेदे ॥

भिन्नपुरुषवाचकसर्वनाम वाक्यमें कर्ताहोवें औरउभयान्वयी अव्ययसे पृथक् कियेगयेहों, तो प्रत्येककर्ताकेसंगक्रियापदकोबोलनाचाहिये; जैसा तुमजाओ वा वेजावें, किसीतरहसे कामकरनाचाहिये ॥ वाक्यमें भिन्नपुरुषवाचक सर्वनाम कर्ताहो तोपहिले प्रथमपुरुषवाचकसर्वनाम पश्चात् द्वितीय और उसकेपीछे तृतीयपुरुषवाचकसर्वनाम आतेहैं; हमतुमक्याकरसकेंगे, तुम और वे वहां जाकरबैठो और पाठयादकरो ॥ सर्वनामअन्यविभक्तिमेंआवे तोभीयहनियम जानो; जैसा हमसे और तुमसे कुछनहींकहसकतेहैं ॥

प्रथम और द्वितीयपुरुषवाचकसर्वनाम क्रियापदकेकर्महोतेहैं, तबउनसे सदाद्वितीयाविभक्तिहोतीहै; जैसा वहमुझको वा मुझेमारताहै, मैंतुझे वा तुझकोदेताहूं ॥ जबतृतीयपुरुषवाचकसर्वनाम सकर्मकक्रियापदकाकर्महोताहै, तबसामान्यत: उससर्वनामसे द्वितीयाविभक्ति बहुधाहोतीहै; जैसा उसको-मारो, उनकोबुलादो इ० ॥ मेरा तेरा तुम्हारा अपना आदि षष्ठ्यंतरूपोंकी योजनाभिन्नरूपोंमें का की के प्रत्ययकियेजातेहैं उनकेसदृशहोतीहै; जैसा मेरीभूमि, मेराहाथ, अपनेभाइयोंसे झगड़ाकभीनकरना ॥

कर्ता और क्रियाकोछोड़ वाक्यांशउसमें कर्तृसंबंधीषष्ठ्यंतसर्वनामकीजगह अपना इससर्वनामका प्रयोगकरतेहैं; जैसा वहअपनाकामकरताथा अपना = उसका ॥ तुमने अपना नयाघरदेखाहै, अपना = तुम्हारा ॥ मैंयहबात अपने

आपमेकहूंगा अपने = मेरे; हम और हमारेबाप अपनेदेशकोजायंगे, यहां जानेकाकर्ता बाप और हम हैं, इसकारणसे अपना की योजनानहींहुई ॥

और पृथक्ता कहनाहो तो कभी २ द्विरुक्तिहोतीहै जैसा वे अपने २ घरकोगये ॥ आप अर्थात् निजकावाचक सामान्यसर्वनामकाप्रयोग आदरार्थक आप शब्दसेभिन्नहै, और उसकीयोजनातीनोंपुरुष और दोनोंवचनोंमेंहोतीहै; जैसा मैंआपकहूंगा तुम्हारीसहायतानचाहिये; तुमआपक्योंनगये; तुमकुछमत बोलो, वे आपजायंगे; इन्द्रियोंकीविद्यामें अभ्यासकरोगे तोउन्हें देखने और प्रकाश और प्रतिबिम्बकाभेद आपसेआप खुलजायगा ॥

पूर्वभागमेंकहआयेहैं कि सर्वनामकावचन नामकेवचनके अनुसारहोताहै फिरवहनामप्रत्यक्षहो वा अध्याहृतहो॥ सर्वनाम नामकेपूर्व विशेषणसाआवे और नाममें द्वितीयादिविभक्तिका योगकरनाहो वा उसकेसंग शब्दयोगीअव्यय जोड़नाहो, तोसर्वनामके सामान्यरूपमात्रकी योजनाकरनाचाहिये अर्थात् प्रत्ययोंकायोगनहींहोता; जैसा आपऐसेधर्मज्ञ जो मुझअतिथिको मारनेकोउठे; तुमभलेआदमीकोझूठबोलनाउचितनहींहै; कदाचित् कोई इसबातका संदेहकरे; पृथ्वी जल और वायु इनतीनोंमें जीवरहतेहैं; उनजीवोंमें मुख्यदोभेदहैं; जिस धरतीमेंअन्न और तरकारीउपजतेहैं उसेखेतकहतेहैं; सबपुस्तकें हाथसेहीलिखी जातीहैं वा और किसीप्रकारसेभीहोतीहैं; किसमनुष्यको बुलातेहो ॥ क्यासर्व नामकासामान्यरूप काहे नामकेपीछेविशेषणवत् कभीनहींआता; जैसा काहेके लियेबुलातेहैं, काहेकीघड़ीवनीहै ॥

प्रथम और द्वितीयपुरुषवाचकसर्वनामसे सादृश्यार्थक सा सी से प्रत्यय जोड़ेजायं तोउनके सामान्यरूपसे जोड़तेहैं; जैसा तुमसा चतुरदूसरानहीं ॥

कभी २ यह और वह इनएकवचनरूपोंकी बहुवचनमें योजनाकरतेहैं; जैसा यहदोनोंभाई न्यायाधीशकेपासगये, वहदानधर्ममेंकुछदेतादेतेहैं ॥

संबंधीसर्वनाम जो वा जौन और तदर्थवाचक सो वा तौन वा वह अपने २ वाक्यमें बहुधासबमेंपहिलेआतेहैं ॥ पूर्ववाक्यमें जो सर्वनामका प्रयोगकियाजावे, तो उत्तरवाक्यमें सो वा वह सर्वनामकी योजनाकरना चाहिये ॥ और जिसवाक्यमें संबंधीसर्वनामहोवे वह प्रायःपहिलेआताहै ॥

उनसेसाधितशब्द अर्थात् जैसा, तैसा, जितना, आदिशब्दोंकीयोजना पूर्वोक्त प्रकारसेहोतीहै; जैसा जोघोड़े तुमनेभेजे राजानेबहुतपसंदकिये, जोयत्नकरताहै सोफलपाताहै, जोतुमनेकहासोसबसचहै, जहांधनतहांडर, जैसा दोगे वैसा-पाओगे, जितनाचाहियेतितनालो, जोकसबहआदमीहै जोकि काममेंपहिले परिणामकोसोचे ॥

प्रथम और द्वितीयपुरुषवाचक सर्वनामोंकेसंग जो संबंधिसर्वनामआवे, तो उनकेपश्चात् आताहै; जैसा तुमजोग़रीबहो, इतनाघमंडक्योंकरतेहो,मैं-जोआजदसबरससे पढ़ताहूं क्याकुछनहींजानताहूं ॥

कभी २ बिनानामके जो कीयोजनासामान्यअर्थमें करतेहैं; जैसा जो ऐसा कामकरेगा सोदंडपावेगा ॥ कि यहशब्द जो वैसाथआरम्बारआताहै, परन्तु अर्थकीविशेषतानहींहोती; जैसा जोदुःख कि हमकोपहुंचाहै दिलमेंनलावे ॥

जो यहसंबंधीसर्वनाम जो उभयान्वयी अव्यय अर्थात् यदिसेभिन्नहै और उसकाध्यान वाक्यमेंपूर्वापरसंबंधसेहोताहै; जैसा जो आपआज्ञादें तोमैंउसेपकड़ लाऊं ॥

कौन कोई क्या कुछ इनकीयोजनाकीरीति सर्वनामप्रकरणमें बतलाईहै ॥ उनकेउदाहरण यहांलिखेजातेहैं जैसा कौनहै अर्थात् कौनमनुष्यहै, क्याहै अर्थात् क्याचीज़है, कोईठसघरमेंरहताहै, उसठेकीमेंकुछनहींहै, इसंठेकमेंकुछहै, किसीबनमेंएकसियारथा, राजामेंकिसीको अधिकारमिलता वा किसीकारणमें प्रतिष्ठाबढ़ाईजातीहै; कोईसेठ, कोईकंगाल, कोईराजमेंबड़ेहोतेहैं परन्तु जहां जंगलीलोगरहतेहैं वहांराजाकाकुछप्रबन्धनहींहोता; कुछलोगवहांजमाहुएथे, क्यानिर्बुद्धिआदमीहै, वाःक्याबातहै ॥

नानाप्रकारबतलानेकेलिये क्या शब्दकीद्विरुक्तिकरतेहैं जैसा क्या २ चीज़ें आईहैं, क्या २ लोगजमाहुएहैं ॥

कभी २ क्या उभयान्वयीभीहोताहै ; जैसा खेतमेंक्याबाग़मेंहुआ, यहांक्या-शब्दकाअर्थ अथवा है ॥

तुल्यताके अभावमें कहां शब्दकी योजना करतेहैं; जैसा कहांसूर्य्य कहां खद्योत, कहांराजाभोज कहांगंगातेली ॥

निषेधार्थक वा संदेहबोधक अर्थात् जहांप्रश्नअनुचितहो ऐसेवाक्यमेंसंबंधी सर्वनामकीजगह कौन और क्या प्रश्नार्थकसर्वनामआतेहैं जैसा मैंनहींजानताहूं किवहकिसजगहगयाहै, मुझेस्मरणनहीं कि कौन २ आयेथे और कौन २ नहीं, वहजानताहै कि तुम्हें क्या २ चाहिये अर्थात् तुम्हें जो जो चाहिये सोसब वह जानताहै ॥ इसीतरहसे उनसे साधितक्रियाविशेषणादिकोंकी योजनाहोतीहै; जैसा नजानेवहकबआवेगा ॥

---

६ पाठ

क्रियापदकाअधिकार ॥

प्र० वाक्यमेंशब्दोंपर क्रियापदका अधिकाररहताहै इसकाअर्थ मैंनहीं समझा कृपाकरकेबतलाइये ?

उ० कोई २ क्रियापदऐसेहोतेहैं कि उनकेसाथ दूसरेशब्द अर्थात् नाम वा सर्वनामकिसीएकनिश्चित रूपमेंसदाआतेहैं, तुमजानतेहो कि सकर्मकक्रियापदहोवे तोकर्मअवश्यचाहिये और कभी २ संघटनार्थकशब्दकी योजनाकरना चाहिये; जैसा मैंनेउसकोकिताबदी, मैंपलंगपरसोताहूं, मैंरोटीखाताहूं, दूसरे वाक्यमेंसोताहूं इसक्रियापदकेसंग पलंगशब्द आयाहै और अर्थानुरोधसे उस नामसेसप्तमीविभक्तिकाप्रत्यय जोड़ागया दूसरीविभक्तिकानहीं, तीसरेवाक्यमें खाताहूं इसक्रियापदकेसाथ रोटी इसनामको कहनाअवश्यहै नहींतोअर्थपूरा न होगा और वहकर्मरूपसेआयाहै अन्यविभक्ति अर्थात् तृतीयादिकोंके प्रत्ययनहीं जोड़े गए इससेस्पष्टहै कि क्रियापदकेअनुरोधसे कारकोंकीयोजनाहोतीहै ॥

प्र० वाक्यमें नाम वा सर्वनाम पर क्रियापदका किसीएकप्रकारका अधिकारहोताहै यहमैंसमझा, अबकिसक्रियापदकेसंगनाम वा सर्वनाम किसरूपसे आतेहैं यहसमझाइये ?

उ० पूर्वमेंकहआयेहैं कि होना दिखाना कहाना आदि अर्थबोधक अकर्मक और कर्मवाच्यक्रियापदकेसाथ नामविधानार्थप्रथमामें आताहै; जैसा

रामलालअवबड़ामहाजनहुआ, जोपुत्रअपनेमातापिताकीआज्ञाको मानतेहैं वे सुपुत्रकहातेहैं ॥

सकर्मकक्रियापदके कर्मकेस्थानमें नाम अथवा सर्व नामआताहै तवपूर्व नियम से प्रथमा वा द्वितीयाविभक्ति होतीहै; जैसा ऐसेवलीयदुकुलमें कौनउपजेजिन्होंने सवअसुरोंसमेत महाबलीकंसकोमारा मेरीवेटियोंको रांड़किया, परन्तुआपका यहपुत्रहै जो वेश्याओंकेसंग आपकीसंपत्तिखागयाहै, जोंहीआया तोंहीआपने उसकेलियेवछड़ामाराहै ॥

प्रयोजकक्रियापद और वतलाना, दिखाना, पहराना, आदिसकर्मकक्रिया पदकेसंग दोकारक अर्थात् कर्म और संप्रदान अवश्यआतेहैं, उनमेंसे कर्म प्रायः प्रथमांतआताहै जैसा लड़कीकोखानाखिलाकर घरकोजाओ, उसेयहकपड़ा पहनाओ, उसको एकरुपयादो, तवउसने उनको अपनी संपत्तिबांटदी ॥

वोलनाकेसाथनामसे चतुर्थीहोतीहै और कहनाकेसंग उसमेंहलीयाका से प्रत्यय जोड़ाजाताहै--मैंउठकेपिताकेपासजाऊंगा, और उनसेकहूंगा हे पितामैंनेस्वर्गके विरुद्धआपकेसामने पापकिया; इसनियमकाअपवादभी कईएकस्थानमें देखपड़ता है, जव वह उनके सामनेआया तवउनसे एकवातवोलनसका ॥ किसीकीस्थिति वा गुण वा मनोविकार वतलानाहो और वहनाम वासर्वनाम अकर्मकधातु जैसा आना वनाना माना चाहना पड़ना पहुंचना रहना सोचना लगना मिलना और होना इनकेसाथजवआवे तव उससे चतुर्थीविभक्तिहोतीहै; जैसा मुझेनींद आतीहै; मुझेइसबातमेंसंदेहहै; उसेदेखनहींपड़ता; न उन्हेंनींदआतीथी, न भूख प्यासलगतीथी; हमकोचाहिये कि वहांजावें; यहां और दूसरे स्थानमें चाहियेकाअर्थ योग्यहै, ऐसाहै योग्यार्थक चाहिये के योगमें चतुर्थी पुरुषवाचकसे होतीहै; जैसाहमकोगयाचाहिये, तुमकोगयाचाहिये, कभी २ तुमकोवहांजाना चाहिये ऐसाभीवोलतेहैं॥जवचाहियेकाकर्ता वाक्यहोताहै तवउसवाक्यमेंक्रियापद विध्यर्थमेंआताहै; जैसा मुझेचाहिये कि वहुतपरिश्रमकरूं न कुछ वे लेगये न हमलेजांयगे इसलियेसभोंको ऐसा कामकरनाचाहिये कि परलोकमेंजाकरभी उजलेरहें ॥

भीति, छिपाना, लजाना, वियोग, भिन्नता, सावधानी, आदिअर्थबोधक क्रियापदोंकेसाथनामसे पंचमीहोतीहै; जैसा वह तुमसेडरताहै, यहवातमुझसे

मतछिपाओ, वहअपनीदशासेलजाताहै, मैंजीतेजीतुममेंअलगकभीनहूंगी, चौकस मनुष्य दुर्गुंसेसावधानरहताहै ॥

गत्यर्थक्रियापदकेसाथ नामसेसप्तमीभीहोतीहै, किससमय,स्थान,वास्थितिमें क्रियाहोतीहै यहबोधजिसनामसेहोवे उससेसप्तमीकायोगहोताहै; जैसा वेनगरमें चले,दोदिनमेंवहवहांपहुंचेगा, तुमकिसघरमेंरहतेहो, वहपलंगपरसोताहै, धोखे-मेंमुझसेयहअपराधहुआ ॥

---

७ पाठ ॥

कालविचार ॥

प्र० पूर्वभागमेंआपनेपृथक्२ काल और अर्थकेरूप बनानेकीरीतिसमझाई, अब वाक्यमें इनकीयोजनाकिसप्रकारसेहोतीहै यहबतलाइये ?

उ० काल और अर्थकानाम ऊपरलिखकर नीचेउनकेरूपलिखेहैं, उनसेतुम्हें साधारणत: बोधहुआहोगा, परन्तु और अच्छीतरहसे समझमेंआवे इसलिये उदाहरणदेकरस्पष्टकरताहूं ॥

धातुसेबनेहुएकाल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्य

इसकालकेनीचे जोरूपलिखेहैं उनकीयोजना दोतीनप्रकारसेहोतीहै ॥ मुख्य यहहै कि इसकालकेरूप कभीस्वार्थमेंनहींआते और बहुधादूसरी क्रियासे उनका संबंधरहताहै फिरवहप्रत्यक्षहोवे वा अध्याहृतहो, इसकालकेसंग दूसराक्रियापद आवेतो बहुधाभविष्यकालमें आताहै, इसलियेउसकानाम हेतुहेतुमद्भविष्य-रक्खाहै ॥

जबलों, यदि, जो, कि, यद्यपि, जबतक, नहींतो, ये अव्ययइसकालकेसाथ प्राय:आतेहैं, और कभी २ प्रत्यक्षनहोंतो उनकाअध्याहारकरतेहैं ॥

उदाहरण ॥

जोमैंइसेछोड़ूं तो यहकिसीनकिसीप्रकारसे अपनेपिताकेघरचलीजायगी, राजानलनेनिषधदेशमें पहुंचकर अपनेभाई पुष्करको बुलाकर यहकहा कि एकबार हमारे तुम्हारे साथफिरपासाहो जो मैंहारूं तोतुम्हारादासहोकररहूं, हाथीकोदेखकर सबसियारोंनेविचारा जोकिसीउपायसे यहमरेतो हमलोगोंका इसके शरीरसे चारमहीनेका भोजनहोगा ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकेरूपविध्यर्थमेंभीआतेहैं उनमेंकभी २ वर्तमान वा भविष्य काभाव अंतर्गतरहताहै ॥

उदाहरण ॥

योग्यता—तबनगरवासीअतिभयखाके श्रीकृष्णचंद्रकेपासजापुकारे कि महाराजजरासंधने चारोंओरसे नगरघेरा अबक्याकरें किधरजांय, मैंतुझेक्यामारूं तूमेरेसांहीसेभागजा, तूमेरेसमानकानहीं जोमैंतुझपरशस्त्रचलाऊं ॥

शक्यता—तुझजीवघातीपरविश्वासकैसेहो, जोकुछहोसकेवहहीकरो ॥

धर्म—पहिलेराजाको मारकरें तबभार्याको तबधनको क्योंकि इसलोकमें राजाकेनरहते कहांसेभार्या और कहांसेधन ॥

संभावना—परन्तु यहबड़ीअचरजकीबातहै कि राजानलकीस्त्री ऐसीपतिव्रताहोकर दूसरेपतिकीअभिलाषाकरे ॥

आशंसा—आसारखताहूं कियहकाम सिद्धहोवे, दयासागर जोमैंसतीहूं तोयहदुष्टमेरासतभंगनकरे, औरइसीसमयभस्महोजाय ॥

आवश्यकता— मत्येकसेकहोकि कालमेरेपासआवे ॥

प्रार्थना—महाराजचिन्तानकरें मैंआपको स्वयम्बरसेपहिलेहीपहुंचाऊंगा ॥

हेतु—मैंउनकोबुलाताहूं किवेभीऐसाअजीबजानवर देखें ॥

संकेतार्थवर्तमानकालमेंभी इसकीयोजनाहोतीहै; जैसा आपचाहें तोमैं आपकेसंगआताहूं॥ दृष्टान्तरूपवाक्यमें इसकालकेरूपोंकी योजनावर्तमानकालमें

छीनातीहै, जैसा, पापीकाधनअकारथजाय; किसीकाघरजले और कोईतापै ॥

भविष्यकाल — कोईक्रियाहोनेवालीहै यहवतलानाहो तो इसकालकी योजनाकरतेहैं; जैसा मैंकलजाऊंगा, और पांचबरस विद्याका अभ्यासकरनेसे वह बड़ा पंडित होगा ॥

भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणकेसाथ सहायधातु चाहना कायोग-करके आसन्नभाविक्रिया वतलातेहैं; जैसा वहघरकोजायाचाहताहै ॥

भविष्यकालकारूपकभी २ आदरपूर्वक आज्ञार्थकीजगहआताहै और कभी२ उसकेरूपसेसंभावना वा संशयका बोधहोताहै; जैसा महाराजकृपाकरके मुझे-एककिताबदेंगे; मुझेमालूमहोताहै, कि जोकुछवहकहतेहैं सोस्पर्धासेहोगा ॥

भविष्यकालमें कोईक्रियानिश्चयपूर्वकपूर्णहोगी यहकहनाहो, तोप्रधानधातुसे चुक धातुकायोगकरतेहैं; जैसा तुम्हारेआनेकेपहिले मैंअपनासबकामकरचुकूंगा ॥

कभी २ आसन्नभविष्यमें वर्तमानकाल वा भूतकालकेरूपोंकी योजनाकरतेहैं; जैसा मैंअभीजाकरउनकोआपकेपासलाताहूं; मालिकनेनौकरसे कहे,किताबला, उसनौकरका, लाया ॥

आज्ञार्थ—तत्वतः इसकेरूपोंकी द्वितीयपुरुषमें योजना करतेहैं ॥

आदरपूर्वकआज्ञार्थकेरूप तीनतरहसेबनतेहैं—इयो, इये, इयेगा, इनमें यहभेदहै कि सामान्यआदरमें इयो अतिआदरमें इये भविष्यार्थआदरमें इयेगा होतेहैं, और इये इयेगा के साथ आप शब्दकायोगकरतेहैं और ये दोनोंवचनोंमेंआतेहैं, तुमवैठियो, आपवैठिये, आपइसकोदेखियेगा ॥

मत यहनिषेधार्थकअव्यय आज्ञार्थमें आताहै और न सबजगहआताहै; और नहीं आज्ञार्थकेसाथ कभीनहींआता—मतभूलो, ऐसानकरो, नजाऊंगा, वहनहींगया ॥

होताहो, आताआ, जाताजा, ऐसेवाक्योंमेंक्रियापदआज्ञार्थमेंहै, परन्तु हठइच्छाकाबोधनहींहै ॥

वर्तमानकालवाचकधातुसाधितविशेषणसेबनेहुएकाल ॥

प्र० केवलधातुसे जोकालवनतेहैं उनकीयोजनाकीरीतिमैंसमझा, परन्तु

वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेबनेहुए कालोंकी योजना किसप्रकारसे होतीहै सोसमझाइये ?

उ० वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसे बनेहुए कालोंकी योजना इसरीतिसेहोतीहै ॥

संकेतार्थभूत ॥

इसकालकेनीचे जोरूपलिखआयेहैं उनकीयोजना दोप्रकारसेकरतेहैं ॥ प्रथम संकेतार्थभूतकालमें, दूसरेस्वार्थेरीतिभूतकालमें ॥ जबसंकेतार्थमेंप्रयोगकरतेहैं तबसंकेतबोधक उभयान्वयीअव्यय प्रत्यक्षआतेहैं वा कभी२ उनका अध्याहार करतेहैं ॥ स्वार्थेरीतिभूतकालमें जबयोजनाहोतीहै तबउससे क्रियाकासातत्य अर्थात्कुछकालतक क्रिया चलतीरहीयहबूझाजाताहै—जैसा, संकेतार्थभूत जोमें कहतातोमेरीबातनसुनता, जोराजानलदमयन्तीकोवनमेंनछोड़जाते तोउनका प्राणभीनबचता, मैंहोतातोघोड़ाछूटनेनपाता ॥

रीतिभूत—अकबरबादशाहकीयहरीतिथी कि सदाफ़क़ीरकाभेषले रातको नगरकीगली २ नाके २ फिरते और जिसदरिद्री कंगाल दुःखीकोदेखते उसका दुःखदूरकरते, सारीरातघरोंकेदरवाज़े बन्दनहोते, बाज़ारकीदूकानें खुलीरहतीं, रस्तागीर जंगल और मैदानमें सोनाउछालतेचलेजाते कोईनपूछता॥ कभी २ इसकालकेरूपोंकाप्रयोग वर्तमानकालमेंहोताहै; जैसा वेक्याजानते, क्याकरते, परऐसीजगह हो धातुकेरूपका अध्याहारकरनाउचितहै ॥

वर्तमानकाल ॥

विद्यमानकालमें जोक्रियाहोतीहै उसका कालबतानेकेलिये इसकालके रूपोंकीयोजनाकरतेहैं; जैसा वहघरकोजाताहै, वहकिताबपढ़ताहै ॥

कभी २ इसकालकेरूपोंसे क्रियाकरनेका अभ्यास समझाजाताहै जैसा सबेरेछःबजेउठताहूं, नौबजेतक पाठ यादकरताहूं फिरदसबजे पाठशालामें जाताहूं ॥

सामान्यतःउपदेशबोधकवाक्यमें क्रियापदकी योजना वर्तमानकालमें करतेहैं;

जैसा इसदुनियामेंसवतरहसेसुखीकोईनहींहै, आपत्तिसमयमें विपत्तियांअनेक-प्रकारकीआतीहैं, मनुष्य अपनेसमान औरोंकोजानताहै ॥

कहनेवाला कभी २ गतहत्तांतका ठीकवर्णनकरनेमें भूतकालिकक्रियापद-केस्थानमें वर्तमानकालिकक्रियारखताहै, जैसा इसीतरहसे शहरसे बाहरनिकला और एकवनमें पहुंचा वहांजाकरदेखातो एकदेवीका मन्दिरहै उसमन्दिरके बाहर कड़ाह चढ़ाहै और उसमेंब्राह्मणकोआगसे घीखोटताहै ॥

अपूर्णभूतकाल ॥

कोईक्रियाभूतकालमेंशुरुहोकर कुछकाल चलतीरही समाप्तनहुई और उसी-कालमें दूसराहत्तांतहुआ, यहबोध इसकालकेरूपसे पायाजाताहै ॥ जैसा वह लिखताथाजबमैंगया, राजामनमेंसोचनेलगे कि जोस्त्रीराजमन्दिरमें फूलोंकी सेजपरडरकर पैररखतीथी वहइसदुर्गमवनमें कांटोंकेऊपर क्योंकर चलसकेगी ॥

भूतकालवाचकधातुसाधितविशेषणसेबनेहुएकाल ॥

प्र० भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेबनेहुएकालोंका प्रयोग किस-रीतिसेहोताहै सोमुझेसमझाइये ?

उ० यह ध्यानमेंरखनाचाहिये कि इनकालोंकेप्रयोगमें बोल धातुका-गणछोड़सकर्मकक्रियापदका कर्ता तृतीयामें रहताहै ॥

सामान्यभूतकाल ॥

इससे यहसमझाजाताहै कि क्रियापूर्वकालमें प्रारम्भहोकर समाप्तहुई; जैसा उसनेसंदेसाभेजा, राजानलउसकेविरहमें व्याकुलहोकरघूमतेफिरते अयोध्या मेंआनिकले और अपनानामबाहुरखकर वहांकेराजाऋतुपर्णकेसारथीबने ॥ भूत-कालकेरूपकोद्विरुक्तिकरके तो अव्ययकायोग बीचमें करनेसेजोक्रियाहुई वह-नहींबदलती ऐसाबोधहोताहै; जैसा हुआतोहुआ अबशोक व्यर्थहै, गयातो गया, भूतकालकेरूपकी कभी २ नामवत्‌योजनाकरतेहैं; जैसा किसमतमेंलिखा कोईनहींमिटसकता ॥

वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेवनेहुए कालोंकी योजना किसप्रकारसे होतीहै सोसमझाइये ?

उ० वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणमे वनेहुए कालोंकी योजना इसरीतिसेहोतीहै ॥

संकेतार्थभूत ॥

इसकालकेनीचे जोरूपलिखआयेहैं उनकीयोजना दोप्रकारमेंकरतेहैं ॥ प्रथम संकेतार्थभूतकालमें, दूसरेस्वार्थरीतिभूतकालमें ॥ जबसंकेतार्थमेंप्रयोगकरतेहैं तबसंकेतबोधक उभयान्वयीअव्यय प्रत्यक्षआतेहैं वा कभी२ उनकाअध्याहार करतेहैं ॥ स्वार्थरीतिभूतकालमें जबयोजनाहोतीहै तबउससे क्रियाकासातत्य अर्थात्कुछकालतक क्रियाचलतीरही यहबूझाजाताहै—जैसा, संकेतार्थभूत जोमैं कहतातोमेरीबातनसुनता, जोराजानलदमयन्तीकोवनमेंनछोड़जाते तोउनका आगमीनवचता, मैंहोतातोघोड़ाछूटनेनपाता ॥

रीतिभूत—अकबरबादशाहकीयहरीतिथी कि सदाफ़कीरकाभेषले रातको नगरकीगली २ नाके २ फिरते और जिसदरिद्री कंगाल दुःखीकोदेखते उसका दुःखदूरकरते, सारीरातघरोंकेदरवाज़े वन्दनहोते, बाज़ारकीदूकानें खुलीरहतीं, रस्तागीर जंगल और मैदानमें सोनाउछालतेचलेजाते कोइनपूछता॥ कभी २ इसकालकेरूपोंकाप्रयोग वर्तमानकालमेंहोताहै; जैसा वेक्याजानते, क्याकरते, परऐसीजगह हो धातुकेरूपका अध्याहारकरनाउचितहै ॥

वर्तमानकाल ॥

विद्यमानकालमें जोक्रियाहोतीहै उसका कालवतानेकेलिये इसकालके रूपोंकीयोजनाकरतेहैं; जैसा वहघरकोजाताहै, वहकिताबपढ़ताहै ॥

कभी २ इसकालकेरूपोंसे क्रियाकरनेका अभ्यास समझाजाताहै जैसा सवेरेछःवजेउठताहूं, नौवजेतक पाठ यादकरताहूं फिरदसवजे पाठशालामें जाताहूं ॥

सामान्यतःउपदेशबोधकवाक्यमें क्रियापदकी योजना वर्तमानकालमें करतेहैं;

जैसा इसदुनियामेंसबतरहसेसुखीकोईनहींहै, आपत्तिसमयमें विपत्तियांअनेक-प्रकारकीआतीहैं, मनुष्य अपनेसमान.औरोंकोजानताहै ॥

कहनेवाला कभी २ गतवृत्तांतका वैसेवर्णनकरनेमें भूतकालिकक्रियापद-केस्थानमें वर्तमानकालिकक्रियारखताहै;जैसा इसीतरहसे शहरसे बाहरनिकला और एकवनमें पहुंचा वहांजाकरदेखातो एकदेवीका मन्दिरहै उसमन्दिरके बाहर कड़ाह चढ़ाहै और उसमेंब्राह्मणकीआगसे घीऔटताहै ॥

अपूर्णभूतकाल ॥

कोईक्रियाभूतकालमेंशुरुहोकर कुछकाल चलतीरही समाप्तनहुई और उसी-कालमें दूसरावृत्तांतहुआ, यहबोध इसकालकेरूपसे पायाजाताहै ॥ जैसा वह लिखताथा जबमैंगया, राजामनमेंसोचनेलगे कि जोस्त्रीराजमन्दिरमें फूलोंकी सेजपरडरकर पैररखतीथी वहइसदुर्गमवनमें कांटोंकेऊपर क्योंकर चलसकेगी ॥

भूतकालवाचकधातुसाधितविशेषणसेबनेहुएकाल ॥

प्र० भूतकालवाचक धातुसाधितविशेषणसेबनेहुएकालोंका प्रयोग किस-रीतिसेहोताहै सोमुझेसमझाइये ?

उ० यह ध्यानमेंरखनाचाहिये कि इनकालोंकेप्रयोगमें बोल धातुका-गणछोड़सकर्मकक्रियापदका कर्ता तृतीयामें रहताहै ॥

सामान्यभूतकाल ॥

इससे यहसमझाजाताहै कि क्रियापूर्वकालमें प्रारम्भहोकर समाप्तहुई; जैसा उसनेसंदेसाभेजा, राजानलउसकेविरहमें व्याकुलहोकरघूमतेफिरते अयोध्या मेंआनिकले और अपनानामबाहुरखकर वहांकिराजाऋतुपर्णकेसारथीबने ॥ भूत-कालकेरूपकोद्विरुक्तिकरके तो अव्ययकायोग बीचमें करनेसेजोक्रियाहुई वह-नहींबदलती ऐसाबोधहोताहै; जैसा हुआतोहुआ अबशोक व्यर्थहै, गयातो गया, भूतकालकेरूपको कभी २ नामवत्योजनाकरतेहैं; जैसा क्रियनतामेंलिखा कोईनहींमिटसकता ॥

वर्तमानभूत वा आसन्नभूत ॥

क्रियाका आरंभ पूर्वकालमें होकर वह क्रिया अभी समाप्त हुई ऐसा ओधहोताहै; जैसा मेरा भाई आयाहै, मैंनेचिट्ठी लिखीहै ॥

भूतभूतकाल ॥

कोई क्रियागतकालमेंहुई इतनानहीं पर और पूर्वकालिकक्रिया या बातके आगेहोगई यहबोधहोताहै, जैसा राजा दमयंतीकोसाथलेकर विदेशको निकले, दमयंतीनेआगेहीसे लड़केलड़कीको अपने नेहर भेजदियाथा, पुष्करने अपनेराजमें ढोंडीफिरवादीथी कि जोकोई राजानलको अपनेघरमेंरहनेदेगा वह जानसे मारा जायगा॥ कभी २ भूतकालकाप्रयोग सामान्यभूतकालमें करतेहैं; जैसा वह कल आयाथा, उसनेकहाथाकिमैंआऊंगा ॥

अप्रसिद्धकाल ॥

प्र० मुख्यकालकेरूपोंकीयोजना किसप्रकारसे होतीहै यहमैंसमझा, अब अप्रसिद्धकालकी योजनाकेविषयमें जो कहनाहो सोकहिये ?

उ० अप्रसिद्धकालोंमेंसे विध्यर्थवर्तमानकालकेरूपकाप्रयोगकरनेसे जोसंशयार्थकेरूपबनजातेहैं, वेप्रायः व्यवहारमेंनहींआते परंतुकेवलभविष्यकालकेरूप जोड़नेसे जोसंशयार्थ वर्तमान और भूतकालकेरूपबनतेहैं, उनकाप्रयोगव्यवहार में वारंवारआताहै ॥ संकेतार्थके जोरूप लिखआयेहैं, उनकीयोजनाभीबहुतकम होतीहै; जैसा संशयार्थवर्तमान—इससमयवहचिट्ठीलिखताहोगा, मैंउससेइतना कठोरवचनबोलाहूं, अबवहअपनेमनमेंक्याकहताहोगा ॥

संशयार्थभूत—मैंनेयहबातउनसेनहींपूछी, परमेरेभाईनेपूछीहोगी, जबइतनी बहुतसीविपत्तियां उसपरपड़ीं तब उसने क्या कियाहोगा ॥

संकेतार्थभूत—और जो नलनेनिर्दयताका काममी कियाहोता तो दमयंती को क्षमाकरनीचाहिये ॥

---

८ पाठ

धातुसाधितभाववाचकनाम ॥

प्र० धातुसाधितभाववाचककी योजना वाक्यमें किसप्रकारसे करनीचाहिये ?

उ० धातुको ना जोड़नेसे भाववाचकनाम होताहै और वहक्रियाका व्यापार वास्थितिबतलाताहै; धातुसाधितभाववाचकनामसे शब्दयोगी अव्यय और विभक्त्यादिकोंका योगकरनाहो,तो आकारांतपुल्लिङ्गनामकेसमान होताहै; परंइससेतृतीयाका ने प्रत्यय और संबोधन नहींहोता और भाववाचक सकर्मकधातुसेबनाहो,तो उसकेसंग कर्म आताहै; जैसा उसकाजानाउचितनहींहै, वह घरदेखनेको आयाहै, सहायताकरनेकासमययहीहै; पढ़नेकेलियेआपकेपासआयाहूं ॥

निश्चयार्थमेंधातुसाधितभाववाचकको का की के येषष्ठीकेप्रत्ययजोड़कर उस रूपकीविशेषणवत् योजना करतेहैं; जैसा यहहोनेकानहीं, मैंनहींमाननेका, कभी २ संप्रदानार्थमें धातुसाधितभाववाचकनाम से षष्ठीविभक्ति होतीहै; जैसा वहां जानेकी आज्ञादीजिये ॥

गत्यर्थक्रियापदकेसाथ संप्रदानार्थमें भाववाचकनामआवे तो उसके को प्रत्यय कालोप कभी २ करतेहैं; जैसा वे खेलनेवाखेलनेकोगये, यहघरदेखनेकोआयाहै, मैं कलहाटमें कईचीजेंमोललेने और बेचने जाऊंगा ॥

धातुसाधित भाववाचकनाम वाक्यकाउद्देश्य वा विधेयहोताहै ॥ उद्देश्य वाविधेयकेसंग धातुसाधितभाववाचककारूप आवे तो कभी २ उसकीयोजना विशेषणवत्कीजातीहै, और विशेष्यकेअनुसार लिङ्गवचनहोताहै ॥ जैसा, लड़के को कमीनोंकीसोहबतमेंरखनाखराबकरनाहै, बोलनासहजहै परकरनाकठिनहै, तुम्हारीभाषाबोलनी मैंने नहींसीखी, तलवारकीधारपरउंगलीरखनीकठिनहै, और जो नलनेनिर्दयताकाकामकियाहोता तो दमयंतीकोक्षमाकरनीचाहिये ॥ आज्ञार्थमें धातुसाधितभाववाचकनामकी योजना कभी २ करतेहैं और मत या न येनिषेधार्थक अव्ययभी उसकेसाथ आतेहैं; जैसा इसबातको जाकर ऐसाकाम न करना ॥

हो धातुकेसाथ जब भाववाचकका योगकरतेहैं, तबआवश्यकता व योग्यताका का बोधहोताहै; जैसा निदान एकरोज़ मरनाहै सब कुछ छोड़जानाहै, तुमकोजानाहोगा उसकोलिखनाहोगा ॥

भाववाचकनामके सामान्यरूपकेसाथ लग दे पा धातुओंकायोग क्रमसेआरंभ अनुग्रह देना और पाना इनअर्थोंमेंहोताहै जैसा वह कहनेलगा, वहलिखनेलगा, हमकोजानेदो, कामकरनेदो, वेनहींआनेपाते, मैंखेलनेनहींपाता ॥ शक्यर्थकाबोध करनेमेंमुख्यधातुने सक धातुकायोगकरतेहैं. पर निषेधार्थकअव्यय आवै तोउस धातुकेस्थानमें कभी २ भाववाचकनामका सामान्यरूप आताहै ॥ जैसा, वह कामकरसक्ताहै, मैंचल न सक्ताथा, मैंबोलनहींसक्ता, मैंनहींबोलसक्ताहूं ॥

---

९ पाठ.

धातुसाधितविशेषण ॥

प्र० धातुसाधितविशेषणोंकीयोजना किसतरहसे कीजातीहै ?

उ० क्रियापदकीसाधना छोड़ शेषस्थलोंमें जबधातुसाधितविशेषणोंका प्रयोगविशेषणवत्‌कियाजाताहै, तबउनकेरूपोंकेपरे हुआ हुई हुए विशेष्यके अनुसारआतेहैं; जैसा हैकोईब्रजमेंमिलहमारा जोचलतेहुएगोपालकोरखे, बहुतसेलड़केवहांखेलतेहुएमैंनेदेखे, मेरीब्याहीहुईबहनससुरकेयहांआगई ॥

जबधातुसाधितविशेषण विशेष्यकेपरेआताहै, तबसहायरूप हुआ की योजनाकभी २ नहींकरतेहैं पर विशेष्यके अनुसार उसकारूपहोताहै; जैसा जितः गोकुलकेगोपग्वालिये वेभी अपनीनारियोंके सिरपरदहेंड़ियांलिवाये, भांतिभांतिके भेषबनाये, नाचते, गाते नंदको बधाईदेने आये ॥

कभी २ सकर्मक धातुसाधितभूतकालवाचकविशेषण विशेष्यकेअनुसार नहींरहता, केवलउसकापुल्लिङ्गसामान्यरूपआताहै ॥ परअकर्मकधातुसाधितभूतकालवाचक विशेषण लिंगवचनमें विशेष्यकेअनुरूप होताहै ॥ जैसा, तिनकेपीछे मूसलहाथमेंलियेएकशूद्रमारताआताहै, तुम्हारीलड़कीछातालियेअपनेमाईकेघर जातीथी, स्त्रियां रंगबरंगवस्त्र पहिनेहुए नाचतीथीं, वहां किवाड़खुलेपाये

भीतरघुपके देखतोसबमोएपड़ेहैं, वहदिकहुआघरआयाहे,रानीकासिङ्गार बिगड़ा देख एकसहेलीबोलउठी ॥

वर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणके पुल्लिंगसामान्यरूपकी योजना कभी २ नामवत् और कभी २ क्रियाविशेषणवत् करतेहैं, और यहरूप सकर्मक-धातुमे बनाहोवे तोकर्मभीउसकेसाथआताहे; जैसा मेरेरहते किसीको इतनी सामर्थ्यनहीं जोतुम्हें दुःखदे, इसबातकेसुनतेही, यहबात सुनतेही, भोर होतेही, घरहेतुजातेही ॥ पुल्लिंगवर्तमानकालवाचक धातुसाधितविशेषणके सामान्यरूपकीद्विरुक्ति सातत्यबतलातीहे, जैसा हमाराकाम होतेहोते हुआ, जातेजाते-एकतालाबकेपास पहुंचे ॥

---

१० पाठ॥

अव्ययविचार ॥

धातुसाधितअव्यय

प्र० धातुसाधितअव्ययोंकीयोजनाकहां और किसप्रकारसेहोतीहे ?

उ० समुच्चयार्थक धातुसाधितअव्ययके पांच प्रकारहैं, वे पूर्वमें बतलाए गयेहैं ॥

वाक्यमें इनअव्ययोंका बहुतप्रयोजन पडताहे, क्योंकिउनकी योजनाकरनेसे वाक्यके अवयवोंका मिलापहोताहे और उभयान्वयी अव्ययोंका प्रयोगकरना नहीं पड़ता ॥

उनमेंरूपसेप्रधानक्रियाके पूर्वकालकाबोधहोताहे इसलिये उन्हेंभूतकालवाचक धातुसाधितअव्ययकहनेमें कुछदोषनहींहे ॥ उनकासंबंधबहुधाकर्ताकीतरफ़ और कभी २ कर्मकेतरफ़रहताहे; जैसा आजवहांजाकरहमारीकिताबलेकर-फिरआओ, वहबात सबकेमुखसेसुनकर बादशाहने बीरबलसे कहा ॥

तत्कालबोधकधातुसाधितअव्ययबनानेकीरीतिपूर्वमेंबतलायीहे, इसअव्ययमें गर्भितजोव्यापार वहप्रधानक्रियाकेसाथहीहुआ यहज्ञानहोताहे, इसका-अर्थसाधारणरूपसेभूतकालवाचक धातुसाधितअव्ययकेअर्थकेसमानहे परन्तुइससे अधिकउद्युक्तता वा जल्दी बूझीजातीहे।पूर्वमेंकहआयेहैं किइसअव्ययकीयोजना

किंचित्नामकेसदृशहोतीहै, जैसा सुनतेही जरासंध अतिक्रोधकर सभामेंआया और लगाकहने, इतनीबातकेसुनतेही हरि कुछसोच विचारकरनेलगे, इतनी-बातकोसुनतेही वहउठकरचलागया ॥

क्रियाविशेषण,शब्दयोगीअव्यय,औरउभयान्वयीअव्यय ॥

प्र० क्रियाविशेषण, शब्दयोगीअव्यय, और उभयान्वयीअव्ययोंकोवाक्य मेंकहांरखनाचाहिये ?

उ० क्रियाविशेषणकीयोजना वाक्यमें जहांचाहिये तहांकरतेहैं, परन्तु साधारण नियम यह है कि जिसशब्दका गुण वह बताताहै उसकेपहिलेयोजना-करनी ठीक है ॥

सर्वनाम जो वा जौन और तौन से साधितक्रियाविशेषणोंकी योजना उन सर्वनामोंकी योजनाके समान होतीहै अर्थात् पूर्ववाक्यमें जब,जहां, जैसा इत्यादि आवें तो अनुक्रमसे उत्तरवाक्यमें तब तहां तैसा इत्यादिआतेहैं; जैसा जब सत्संग से रहित होगे तब दुर्जनोंकी संगतिमें पड़ोगे, जैसा अबमरे तैसा तबमरे, जोपानी में पैठातोंइसनेचतुराईसे वेरुपये किसीकेहाथ अपनेघर भेजदिये ॥

जबतक, जबलो आदि संयुक्त क्रियाविशेषण बहुधा भूत वा भविष्यकालिक क्रियापदकेसाथ आतेहैं और उसक्रियापदकेपूर्व प्राय:निषेधार्थकअव्यय लातेहैं; जैसा जबतक कि मैं नआऊं तबतक वह ठहरे तो तुझेक्या, जबतक मैंने उनसे रुपयेकी बात नहींनिकाली तबतक वे हररोज़ हमारे यहांआयाकरतेथे, शब्द योगी अव्यय साधारणत: पष्ठ्यंतनाम वा सर्वनामकेपश्चात् रखतेहैं, परंतुकभी २ उर्दू भाषाकी पद्धतिकेअनुसार उसकेपहिलेआतेहैं; जैसा आगेघरके, तरफ़शहरके, उभयान्वयी अव्यय कि पूर्वशब्द वा वाक्यकाबयान करताहै; जैसा उनमेंसेएकने रुपयेवालेसेकहा कि अजी क्यों झगड़तेहो लेखा क्यों नहींसुनते; ॥

पूर्ववाक्यमेंसंकेतार्थअव्यय जो आवे तो उत्तरवाक्यमें तोलानाचाहिये; जैसा जोआपफिरकभीऐसावचनकहियेगा, तोमैंअपनाप्राणतजदूंगी ॥ जोतूइसेछोड़दे तोमैंतुझेएकमोतीदूं ॥

---

११ पाठ ॥

द्विरुक्तिविचार ॥

प्र० शब्दको दो वारकहनेसे क्या समझाजाताहै ?

उ० विभाग वा पृथकता बतानेकेलिये संख्यावाचक दो वार लातेहैं; जैसा सबकंगालोंको दोदोपैसेदो ॥

भूतकालवाचक विशेषणकी द्विरुक्तिसेपरस्परक्रियाका बोधहोताहै और उसमें उत्तरपद बहुधा स्त्रीलिंगीरहताहै; जैसा मारामारी, तानातानी, दावा दावी इत्यादि ॥

द्विरुक्तिसे कभी आधिक्यता बूझीजातीहै; जैसा वहां वड़े वड़े वृक्षहैं, वह धीरेधीरेचलताहै, तुमतोवड़ेबड़े दांतनिकालतेहो ॥

व्याकरणसेवाक्यकापदच्छेद ॥

किसीवाक्यके आरंभसे अंततक हरएकशब्दकेरूपकी व्याकरणरीतिसेव्याख्या अर्थात् लिङ्गवचनविभक्ति आदि कहना और उसवाक्यमें उनकापरस्परसंबंध कैसाहै यहकथनकरना उसे व्याकरणपदच्छेदकहतेहैं ॥ इससेवाक्काकायथार्थ ज्ञानहोताहै; जैसा, (हरिनेसिंहमारा) हरिने - इकारांतपुल्लिङ्गविशेषणनाम की तृतीयाकाएकवचन - कर्तरितृतीया - मारा इसक्रियापदकाकर्ता—शेर- यह सामान्यनाम अकारांतपुल्लिङ्ग प्रथमाकाएकवचन - कर्मणिप्रथमा - मारा इसक्रियापदकाकर्म-मारा—यहक्रियापद मारइस सकर्मकधातुका स्वार्थसामान्य भूतकालपुल्लिङ्गतृतीयपुरुषका एकवचन—इसवाक्यमें हरिने - कर्ता शेर - कर्म मारा - क्रियापद - कर्मणिप्रयोग ॥

रामनेभाईकोबुलायाहै ॥

रामने - अकारांतविशेषनाम पुल्लिङ्ग तृतीयाका एकवचन - बुलायाहै इस क्रियाकाकर्ता ॥

भाईको—ईकारांत सामान्यनाम पुल्लिङ्ग द्वितीयाकाएकवचनकर्म बुलायाहै क्रियापदका ॥

बुलायाहै—बुलाइससकर्मकधातुका स्वार्थ - आसन्नभूतकालपुल्लिङ्ग तृतीय-पुरुषएकवचन ॥

रामने—कर्ता माईको-कर्म बुलायाहै-क्रियापद-भावेप्रयोग ॥

मैंउठकेअपनेपिताकेपासजाऊंगा ॥

मैं—प्रथमपुरुषवाचक सर्वनाम पुल्लिङ्ग प्रथमाकाएकवचन कर्तरिप्रथमा जाऊंगाइसक्रियापदकाकर्ता ॥

उठके—समुच्चयार्थक पूर्वकालवाचक धातुसाधितअव्यय ॥

अपने—यहसामान्यसर्वनाम षष्ठीकासामान्यरूप पास इसशब्दयोगी-अव्ययकेयोगसे—पास-शब्दयोगीअव्यय ॥

जाऊंगा—यहक्रियापद जा इसअकर्मकधातुका स्वार्थभविष्यकालपुल्लिङ्ग प्रथमपुरुषकाएकवचन ॥

मैं—कर्ता, जाऊंगा-क्रियापद, अकर्मककर्तरिप्रयोग ॥

+

इतनाकह उसने तुरन्तही चारोंओरोंके राजाओंको ख़त
लिखे कि तुम अपनादल ले ले हमारे पास आओ ॥

इतना—दर्शकसर्वनाम पुल्लिंग प्रथमाकाएकवचन अर्थकर्म कहधातुसाधित अव्ययका ॥

कह—समुच्चयार्थकधातुसाधितअव्यय ॥

उसने—तृ-पुरुषवाचकसर्वनाम पुल्लिंगतृतीयाकाएकवचन लिखे क्रियाका-कर्ता ॥

तुरन्तही—कालवाचक क्रियाविशेषणअव्यय ॥

चारों—संख्यावाचक विशेषण ओरोंका ॥

ओरोंके—सा-ना-अकारांतस्त्री-बहुवचन षष्ठीकासामान्यरूप राजाशब्दसे विभक्तिकायोगहोनेसे ॥

राजाओंको—सा-ना-आकारांतपु० चतुर्थीकाबहुवचन, अर्थसंप्रदान ॥

ख़त—सा-ना-अकारांतपुल्लिङ्ग प्रथमाकाबहुवचन अर्थ कर्म ॥

+ जरासन्धने ॥

लिखे—लिख धा० सकर्मक स्वार्थसामान्यभूतकाल- पु० स्त्री० पु० बहुवचन ॥

उसने—कर्ता, ख़त-कर्म, लिखे-क्रियापद ॥ कर्मणिप्रयोग ॥

कि—स्वरूपबोधक उभयान्वयीअव्यय ॥

तुम—द्वि० पु० स० पुल्लिङ्ग- प्रथमाकाबहुवचन आओ क्रियापदकाकर्ता ॥

अपना—सामान्यस- षष्ठीकाबहुवचन संबंध दलशब्दकीतरफ़, वा सर्वनाम वाचकविशेषणदलशब्दका ॥

दल—सामान्यनाम अकारांतपुल्लिङ्ग प्रथमाकाएकवचन अर्थ कर्म ले धातु साधितअव्ययका ॥

लेले—समुच्चयार्थक धातुसाधित अव्यय ॥

हमारे—प्रथमपुरुषसर्वनाम पुल्लिङ्गबहुवचन षष्ठीकासामान्यरूप पास इस-शब्दयोगीअव्ययकेयोगसे पास शब्दयोगीअव्यय ॥

आओ—आधातुअकर्मक आज्ञार्थ वर्तमानकाल द्वितीयपुरुष बहुवचन-तुम कर्ता आओ क्रियापद- अकर्मक कर्तरिप्रयोग ॥

बुलायाहै—बुलाइससकर्मकधातुका स्वार्थ-आसन्नभूतकालपुल्लिङ्ग तृतीय-पुरुषएकवचन ॥

रामने—कर्ता भाईको-कर्म बुलायाहै-क्रियापद-भावेप्रयोग ॥

मैंउठकेअपनेपिताकेपासजाऊंगा ॥

मैं—प्रथमपुरुषवाचक सर्वनाम पुल्लिङ्ग प्रथमाकाएकवचन कर्तरिप्रथमा जाऊंगाइसक्रियापदकाकर्ता ॥

उठके—समुच्चयार्थक पूर्वकालवाचक धातुसाधितअव्यय ॥

अपने—यहसामान्यसर्वनाम षष्ठीकासामान्यरूप पास इसशब्दयोगी-अव्ययकेयोगसे—पास-शब्दयोगीअव्यय ॥

जाऊंगा—यहक्रियापद जा इसअकर्मकधातुका स्वार्थभविष्यकालपुल्लिङ्ग प्रथमपुरुषकाएकवचन ॥

मैं—कर्ता, जाऊंगा-क्रियापद, अकर्मककर्तरिप्रयोग ॥

\+

इतनाकह उसने तुरन्तही चारोंओरोंके राजाओंको ख़त लिखे कि तुम अपनादल ले ले हमारे पास आओ ॥

इतना—दर्शकसर्वनाम पुलिंग प्रथमाकाएकवचन अर्थकर्म कहधातुसाधित अव्ययका ॥

कह—समुच्चयार्थकधातुसाधितअव्यय ॥

उसने—तृ-पुरुषवाचकसर्वनाम पुलिंगतृतीयाकाएकवचन लिखे क्रियाका-कर्ता ॥

तुरन्तही—कालवाचक क्रियाविशेषणअव्यय ॥

चारों—संख्यावाचक विशेषण ओरोंका ॥

ओरोंके—सा-ना-अकारांतस्त्री-बहुवचन षष्ठीकासामान्यरूप राजाशब्दसे विभक्तिकायोगहोनेसे ॥

राजाओंको—सा-ना-आकारांतपु० चतुर्थीकाबहुवचन, अर्थसंप्रदान ॥

ख़त—सा-ना-अकारांतपुल्लिङ्ग प्रथमाकाबहुवचन अर्थ कर्म ॥

\+ जरासन्धने ॥

कठिनशब्दोंकाकोष ॥



ना० = नाम, वि० ना० = विशेषनाम, पु० = पुल्लिंग, स्त्री० = स्त्रीलिंग, वि० = विशेषण अ० = अव्यय, स० ना० = सर्वनाम ॥

अ

अंक ना०पु० चिन्ह निशानीसङ्ख्या ...

अंगांगिभाव ना० पु० शरीरकेअवयवों [का संबंध

अंत्य वि० अन्तका ...

अंत्याक्षर- ना० पु० अंतकाअक्षर ...

अकारांत वि०जिसशब्दकेअंतमें अकारहै

अच्‌हल ना०पु० अच् और हल् अ- [र्थात् स्वर और व्यंजन

अदर्शन ना०पु० नहीं देखपड़ना ...

अधिकार ना०पु० एकशब्दका संबंधदू- सरेशब्दकी तरफ़होकर एककेरूपमें विकार करनेकी सामर्थ्य दूसरेमें रहती [है वहसामर्थ्य

अध्याहार ना०पु० वाक्यको पूराकरने [केलिये बाहरसेशब्दलाना

अध्याहृत- वि०जिसशब्दका अध्याहार [कियाहै

अनिश्चितता ना०स्त्री० जिसकानिश्चय [नहींहै उसकीस्थिति अनिर्णीतपन

... ना०पु० ... ...

अनुनासिक वि० नाकसेजिनअक्षरों [का उच्चारण होताहै

अनुभव ना०पु० मानसज्ञान ...

अनुयायी ना०पु० पीछेजानेवाला,सेवक

अनुरोध ना०पु०अनुरूपहोना,वाकरना

अनुसार ना०पु० अनुरूपहोना, अथवा [अनुरूप

अनेकवर्णात्मक वि० जिसशब्दमें एकसे [अधिकवर्णहैं

अन्य वि० दूसरा कोई ...

अन्वय ना०पु०वाक्यकेशब्दोंका परस्पर [संबंध

अपभ्रंश ना०पु० अपशब्द अशुद्धशब्द

अपवाद ना० पु० नियमसेबाहरहोने [वालेशब्द इ०

अब्ज ना० पु० कमल ...

अब्मरण ना० पु० पानीका मरना ...

अभाव ना० पु० नहोना ...

अर्थानुरोध ना०पु० अर्थकेअनुरूपहोना

अर्पण ना० पु० देना ...

अवयव ना०पु० अंग वा शरीरकाभाग

अवशिष्ट वि० बाक़ी ...

अवश्य वि० चाहिये ...
अव्यय जिनशब्दोंकाकारकत्व नहींहै

आ

आकारांत वि० जिसकेअंतमें आकारहै
आकृति ना० स्त्री० आकार, सूरत ...
आकृष्ट वि० खींचाहुआ ...
आच्छादन ना० पु० वस्त्र, ढकना ...
आज्ञार्थ वि० आज्ञाकाबोध जिससे [होताहै
आदरार्थवि०जिसमेंप्रतिष्ठापाईजातीहै
आदेश = जो एकअक्षरके स्थानमें [दूसराअक्षर होजावे
आदान ना० पु० लेना ...
आद्य वि०आदिका ...
आवृत्ति ना० स्त्री० दोहराना ...
आशंसार्थ वि० जिससेइच्छाका बोध [होताहै
आश्रय ना० पु० आसरा, समीपता...
आसन्न वि० नज़दीक का ...

इ

इकारांत वि० जिसकेअंतमेंइकारहै ...
इन्द्र ना० पु० इन्द्र, मालिक, राजा,

ई

ईकारांत वि० जिसशब्दके अंतमें ई है
ईर्षा ना० स्त्री डाह, द्वेष ...

उ

उकारांत वि० जिसकेअंतमें उकारहै
उक्त वि० कहाहुआ ...
उड्डान ना० स्त्री० उडान (संस्कृतमें- नपुंसकहै)
उत्कर्ष ना० पु० बढ़ती ...
उत्साह ना० पु० आनंद खुशी ...
उद्गारवाची वि० हर्षदुःखादि भाव ब- [तानेवाला
उपनाम ना० पु० कुटुम्बकानाम ...
उपमान ना०पु० जिसकी तुल्यता कही [जाय
उपमेय ना० वावि० पु० जो तुल्यहो
उपांत्य ना०पु० अंत्यअक्षर का पूर्व वर्ण

ऊ

ऊकारांत वि० जिसकेअन्तमें ऊ होवे
ऊर्ध्व अ० ऊपर ...
ऊर्मिला ना० स्त्री० विशेषनाम ...

ऋ

ऋकारांत वि० जिसकेअन्तमेंऋकार है

ए

एकवर्णात्मक वि० जिसशब्दमें एक [अक्षर है
एकारांत वि० जिसके अंतमें एकार है
एकैक वि० प्रत्येक ...
एतच्चंद्रमण्डल ना०पु० यहचांदका घेरा [वा गोला

ऐ

ऐकारांत वि० जिसशब्दकेअंतमेंऐकारहै
ऐश्वर्य ना०पु० विभव,माहात्म्य,संपदा

ओ

ओकारांत वि० जिसशब्द के अन्त में [ओकार है
ओष्ठ ना० पु० ओंठ ...

औ

औकारांत वि० जिसशब्द के अन्तमें [औकार है

औदार्य ना० पु० दातापन ...

क

कंठ ना०पु० कंठा ...

करी ना०पु० हाती ...

कर्तृकर्मभाव ना० पु० करनेवाला और [कियाहुआ काम इनका संबंध

कर्मवाच्य वि० जिस क्रिया पदका कर्म [उद्देश्य होताहै

कविता ना०स्त्री० पद्य श्लोक ...

काना ना० पु० अक्षर की खड़ी लकीर [जैसा ग

कारण ना०पु० निमित्त ...

कृति ना०स्त्री० काम, करना ...

केवल अ० मात्र ...

कोष्ठक ना० पु० ताख़ा ...

क्रियान्वयित्व ना०पु० क्रियापदकेतरफ [संबंधरखना

ख

खद्योत ना० पु० जुगनू ...

ग

गत्यर्थ वि० जिसकाअर्थगतिहै वा जिस [सेगतिकाअर्थ पायाजाताहै

गद्य ना०पु० छंदविनावाक्य ...

गर्भित वि० गर्भ अर्थात्पेटमेंरहनेवाला

गुणाधिकार ना० पु० गुणकाअधिकपन

गौरव ना०पु० बड़ापन,दृढ़ता ...

च

चक्रपाणि ना०पु० जिसके हाथमेंचक्र है [अर्थात् विष्णु

चिन्ह ना०पु० निशानी ...

ज

जगदादि ना०पु० पृथ्वीकाआरम्भ ...

जन्यजनकभाव ना० पु० उत्पन्न करने वाला और उत्पन्न कीहुई चीज़ इनका [संबंध

जातिगुणविशिष्टव्यक्ति ना०स्त्री० जात का गुण जिसव्यक्ति में पायाजाता है [वहव्यक्ति

ड

डमरू ना० पु० वाद्यविशेष ...

डाह ना०पु० द्वेष ...

ढ

ढब ना० पु० चाल, डौल ...

त

तच्छरीर ना० पु० उसकी देह ...

तट्टीका ना० पु० उसकाटीका ...

तत्स्वर्णांत वि० वह स्वर्ण जिसके अंतमें [है

तदंतर्गत वि०उसकेभीतरगयाहुआ ...

तद्गत वि० उसमेंगयाहुआ ...

तद्गुणविशिष्ट वि० वहगुणजिसमेंहै ...

तद्द्रवि ना० पु० उसकेयज्ञकाद्रव्य ...

तद्भय ना० पु० उससेडर ...

तद्भावबोधक वि० उसभावकाबोध क- [र

तन्नेत्र ना० पु० उसकी आंख ...
तन्मय वि० उससे भराहुआ ...
तन्मात्र अ० केवल वह ...
तल्लीला ना० स्त्री० उसकाखेल ...
तवल्लार ना० पु० तेरा (लिखाहुआ) [खकार
तुलना ना० स्त्री० तुला करना, समा- [नता देखना
तृतीयांत वि० जिसके अंतमें तृतीया [का प्रत्ययहै
तेजोमय वि०तेज वा प्रकाशसेभराहुआ

द

दिग्भाग ना०पु० दिशाकाभाग, देश...
दीर्घ वि० लम्बा ...
दुर्नीति ना० स्त्री० बुरीचाल ...
दृढ़ वि० बलवान् जिसमेंज़ोरहोवे...
देवेंद्र ना० पु० देवोंकाइन्द्र ...
दैव्याश्रय ना०पु० दैवीकीसहायता...
द्रव्यजन्यभाव ना०पु० चीज़ औरउससे बनाहुआपदार्थ इनकासंबंध
द्व्यक्षर वि० जिसमेंदो अक्षरहैं ...
द्वितीयांत वि० जिसकेअंतमें द्वितया [काप्रत्ययहै

ध

धर्माज्ञा ना०स्त्री० धर्मकीआज्ञा ...
धातुमाधित वि० धातुसेबनाहुआ ...
धावंछश: ना०पु० दौड़नेवाला ख़र्गोश
धात्वितर वि० धातुसेइतर वा अन्य
धिक् अ० तुच्छतावा तिरस्कारबोधक [वा तिरस्कार
ध्वनि ना०पु०स्त्री० आवाज़ ...

न

नायक ना०पु० मुख्य, मालिक ...
नासिका ना० स्त्री० नाक ...
निकट अ० नज़दीक ...
निकृष्ट अ० वि० ख़राब ...
नियम ना० पु० क़ायदा ...
निर्णय ना० पु० निश्चय, इनसाफ़ ...
निर्विकार वि० जिसमें कुछफेरफार [नहीं हुआ
निवृत्ति ना०स्त्री० रोकना, ...
नि:शंक वि०नि:संदेह ...
नि:पठ वि० अतिमूर्ख ...
नीरस वि० निरस, फीका ये दोनों [शब्द हिन्दीमें ह्रस्व निसे लिखतेहैं
नीरोगी वि० चंगा ...
न्यूनता ना०स्त्री० } घटती
न्यूनत्व ना० पु० }

प

पंक्ति ना० स्त्री० पांति ...
पंचम्यंत वि० जिसके अंतमें पंचमीका [प्रत्ययहै
परस्पर अ० आपसमें ...
परिगणन ना०पु० } मापना
परमिति ना०स्त्री० }
पश्चात् अ० पीछेसे ...
पारिभाषिक वि० शास्त्रमें आसानीके [लिये जो संज्ञामानलीहै

पावक नाο पुο आग ...
पितृण नाο पुο पिताका क़र्ज़ ...
पित्राज्ञा नाοस्त्रीο बापकीआज्ञा ...
पीताम्बर नाο पुο जिसकावस्त्र पीला [है अर्थात् विष्णु
पूर्णता नाο स्त्रीο पूरापन ...
पूर्ववत् अο पहिलेकेसमान ...
पूर्वोक्त विο पहिले कहाहुआ ...
पृथक्करण नाο पुο अलग २ करना...
प्रकरण नाο पुο वर्णन ...
प्रकृति नाο स्त्रीο मूलरूप जिससे वि- [भक्तादिकार्यहोताहै
प्रचार नाο पुο व्यवहार-चाले- ...
प्रतिबिम्ब नाοपुο परछाया ...
प्रतिष्ठा नाο स्त्रीο सन्मान ...
प्रत्येक सο नाο हरएक ...
प्रथमांत विο जो नाम वा सर्वनाम [प्रथमाविभक्तिमेंहै
प्रयोजन नाο पुο काम उपयोग ...
प्रयोग नाο पुο योजना ...
प्रवृत्ति नाο स्त्रीο किसीकाममेंलगना [वा लगाना वा यत्न
प्रांत नाο पुο देशकाभाग ...
प्रायः अο बहुधा अक्सर ...
प्रेरक नाοपुο करानेवाला ...
प्रौढ विο सभ्य विद्वान लोगोंका ...

ब

बहुधा } अο —
बहुशः }

बहुत्व } नाο पुο बहुपन
बाहुल्य }

भ

भरण नाο पुο भरना
भवद्दर्शन नाοपुο आपकादर्शन ...
भाग नाοपुο हिस्सह अंश ...
भानु नाο पुο सूरज ...
भाव नाο पुο भेद उद्देश ...
भू नाο स्त्रीο पृथ्वी ...
भेद नाο पुο प्रकार ...

म

मध्य नाο पुο बीच विο बीचका ...
मनोभाव नाοपुο मनकीअवस्थाइच्छा
मन्वंतर नाοपुο दो मनुओं के बीच [का काल वा अंतर
मर्यादा नाο स्त्रीο हद ...
महद्भाग्य नाοपुο बड़ानसीब ...
महर्षि नाοपुο बड़ाऋषि ...
महैश्वर्य नाοपुο बड़ीसंपत् ...
माहात्म्य नाοपुο मनकाबड़ापन ...
मिश्रित विο दूसरेसे मिलाहुआ ...
मूलस्थिति नाοस्त्रीο पहलीस्थिति ...
मृत्युंजय नाοपुο महादेव ...

य

यथाक्रम अο जैसाक्रमहै वैसेक्रमसे ...
यथायोग्य अο जैसाचाहियेवैसा ...
युक्त विο जुड़ाहुआ उचित ...
योग नाοपुο जोड़ना ...
योग्यता नाοस्त्रीο उचितता ...

रमेश ना०स्त्री० लक्ष्मी का पतिविष्णु
रूपांतर ना०पु० दूसरारूप ...

ल

लक्षण ना०पु० व्याख्या,बयान, वर्णन
लाकृति ना० स्त्री० आकार रूप ...

व

वत् अ० समान ...
वक्ष्यमाण वि० जो कहाजायगा ...
वस्तुत: अ० तत्वत: ...
वागीश ना०पु० अच्छा बोलनेवालावृह [स्पति
वाग्घरि ना०पु० (वाचाऔरहरि) वाचा [को हरणकरनेवाला
वाङ्मन ना०पु० वाचा और मन ...
विकार ना० पु० फरक बदल ...
विकृति वि० बदलाहुआ ...
विकीर्ण वि० फैलायाहुआ ...
विजातीय वि० भिन्नजातका ...
विधवा ना०पु० जिसकापतिनहीं रांड
विधेयार्थपूरक ना०पु० वा वि० विधेय [का अर्थ पूरा करनेवाला
विधेयार्थवर्धक ना०पु०वि० विधेय का [अर्थ बढ़ाने वाला
विभक्त्यन्त वि० जिसनाम वा सर्वनामके [अंतमेंविभक्तिकाप्रत्यय होवे
विवक्षित वि० इष्ट ...
विवेचन ना०पु० विचार ...
विषय ना० पु० बात ...
विस्मयादिबोधक वि० आश्चर्यादि- [मनोमात्रोंकावाचक

वृत्ति ना०स्त्री०आचरण स्वभाव,धंदा
वैयाकरणलोग व्याकरणजाननेवालेलोग
व्यतिरिक्त वि० अन्य ...
व्यापकता ना० स्त्री० फैलाव ...
व्यापारार्थ वि० जिसकाअर्थव्यापारहै
व्युत्पत्ति ना० स्त्री० उत्पत्ति ...

श

शक्यता ना०स्त्री० होने और करनेकी [योग्यता वा संभव
शयन ना० पु० सोना वा बिछौना ...
शालक ना० पु० साला ...
शेष वि० बाकी ...
श्रुत वि० सुनाहुआ ...

ष

षड्हृदय ना०पु० छहहृदय ...
षण्मास ना०पु० छःमास ...
षष्ठ वि० छठवां ...
षष्ठ्यंत वि०जिसकेअंतमें षष्ठीका प्रत्यय [होवे

स

संकेत ना०पु० शर्त ...
संपात ना०पु० गिरना ...
संयुक्त वि० जुड़ाहुआ ...
संयोग ना०पु० जोड़ ...
संशय ना०पु०सन्देह ...
संस्कृतानभिज्ञ वि० संस्कृतभाषाजान [ने वालेलोग
सजातीय वि० एकजातका ...
सच्छास्त्र ना०पु० अच्छाशास्त्र ...

सदृश वि० समान ...
संधि ना०स्त्री० मिलाप ...
सतेज वि० तेजसहित ...
सन्मानार्थ वि०जिससेप्रतिष्ठापाईजाती [है
सप्तम्यंत वि० जिसके अंतमें सप्तमी का [प्रत्ययहै
समग्रता ना०स्त्री० संपूर्णता ...
समता ना० स्त्री० समानपन ...
समावेश ना० पु० संग्रह ...
समुच्चयार्थक वि० जिससे शब्दोंकावा- [क्यों का मिलाप होताहै
समूह ना०पु० जमावाजातिगण ...
सविकार वि० जिसकेरूपमें विभक्त्यादि [कार्यसेबदलहुईहै
सशब्दयोगिक वि० शब्दयोगी अव्यय [सहित
सहाय ना०पु० जोमददरेता है ...
सातत्य ना०पु० सततपनचलतारहता [होताजाना
साधनक्रिया ना०स्त्री० रूप बनाने का [काम
सामान्यत: ना० स्त्री० साधारणपन
सार्थ वि० जिसमेंअर्थपायाजाय ...
सिद्धरूप ना०पु० पहिलेहीसे जिसका [रूपबनाहै दूसरेशब्दसेनहीं
सीताश्रय ना०पु० सीताकाआश्रय ...
सुसंबद्ध वि० अच्छीतरहजिसकीरचना [कीगईहै
सूचित वि० बोधित ...
सेव्यसेवकभाव ना०पु० मालिकचाकर [का संबंध
स्थल ना०पु० स्थान जगह ...
स्थिति ना०स्त्री० रहना ...
स्पर्धा ना०स्त्री० द्वेष ...
स्पष्टीकरणार्थ अ० स्पष्ट करनेकेलिये ...
स्वस्वामिभाव,मालिकऔरउसकी चीज़ [कासंबंध
स्ववर्गोक्त वि० अपनेवर्ग का कहाहुआ [स्थान

इति